THE FREE INDOLOGICAL COLLECTION

WWW.SANSKRITDOCUMENTS.ORG/TFIC

FAIR USE DECLARATION

This book is sourced from another online repository and provided to you at this site under the TFIC collection. It is provided under commonly held Fair Use guidelines for individual educational or research use. We believe that the book is in the public domain and public dissemination was the intent of the original repository. We applaud and support their work wholeheartedly and only provide this version of this book at this site to make it available to even more readers. We believe that cataloging plays a big part in finding valuable books and try to facilitate that, through our TFIC group efforts. In some cases, the original sources are no longer online or are very hard to access, or marked up in or provided in Indian languages, rather than the more widely used English language. TFIC tries to address these needs too. Our intent is to aid all these repositories and digitization projects and is in no way to undercut them. For more information about our mission and our fair use guidelines, please visit our website.

Note that we provide this book and others because, to the best of our knowledge, they are in the public domain, in our jurisdiction. However, before downloading and using it, you must verify that it is legal for you, in your jurisdiction, to access and use this copy of the book. Please do not download this book in error. We may not be held responsible for any copyright or other legal violations. Placing this notice in the front of every book, serves to both alert you, and to relieve us of any responsibility.

If you are the intellectual property owner of this or any other book in our collection, please email us, if you have any objections to how we present or provide this book here, or to our providing this book at all. We shall work with you immediately.

-The TFIC Team.

जैन भजन संग्रह।

भाग पहलो।

प्रकाशकः—

फतेचन्द चौथमल करमचन्द बोथरा

नं० १२, नोरमल लोहिया ष्ट्रीट

कलकत्ता।

नं० १६, सिनागोग ष्ट्रीट के ओसवाल प्रेस में

बाबू महालचन्द बयेद

द्वारा मुद्रित !

प्रथमावृति २०००] [वीर निर्वाणाब्द २४५०

प्राप्ति स्थान :—

१ फतेचन्द चौथमल करमचन्द बोथरा

नं० १३, नोरमल लोहिया ष्ट्रीट कलकत्ता ।

२ चौथमल परतापमल बोथरा

मु० राजलदेशर

(राजपुताना)

विषयानुक्रमणिका।

संख्या	विषय	पृष्ठांक
१	पच्चीस बोल की चरचा	१
२	हुण्डी लुंकेजीकी	२८
३	प्रदेशी राजारी संध	२६
४	उपदेशिक ढाल	६१
५	पार्श्वचन्द्र सूरिकृत ढाल १ली	६८
	,, २री	१००
६	वर्द्धमान जिन स्तवन	१०१
७	ढाल उपदेशिक	१०४
८	पच्चीस बोल	१०६
६	पानाकी चरचा	१२३
१०	अल्पा बोहत	१६८
११	गतागत	१६६

१२ ढाल (गुलाबचन्दजी लुणियाकृत १७८
१३ श्रीभिक्षुगणिराजके गुणांकी ढाल (जयाचार्यकृत् १७८
१४ " " १८०
१५ जंबूकुँवर को चौढालियो १८१

पच्चीस बोल की चरचा।

१ पहले बोले गति चार ४—

१ एक गति किण में पावे ? मनुष्य में पावे।
२ दोय गति किण में पावे ? श्रावक में मनुष्य, तिर्यंच।
३ तीन गति किण में पावे ? नपुंसक वेद में पावे, (देवता टल्यो)।
४ चार गति किण में पावे ? समचै जीव में।

२ दूजे बोले जात पांच ५—

१ एक जात किण में पावे ? एकेन्द्री में।
२ दोय जात किण में पावे ? वैक्रेय शरीर में-- एकेन्द्री, पंचेन्द्री।
३ तीन जात किण में पावे ? तीन विकलेन्द्री में।
४ चार जात किण में पावे ? त्रसकाय में (एकेन्द्री टली)।
५ पांच जात किण में पावे ? समचै जीव में।

३ तीजे बोले काय छव ६—

१ एक काय किण में पावे ? साधु में-त्रसकाय।
२ दोय काय किण में पावे ? वैक्रेय शरीर में—
वाउकाय, त्रसकाय।
३ तीन काय किण में पावे ? तेजूलेश्या में एकेन्द्री, पृथ्वी, पानी, बनास्पति में।
४ चार काय किण में पावे ? तेजूलेश्या में पावे (तेऊ, वाऊ टली)।
५ पांच काय किण में पावे ? एकेन्द्री में पावे (त्रस टली)।
६ छव काय किण में पावे ? समचे जीव मे।

४ चौथे बोले इन्द्री पांच ५—

१ एक इन्द्री किण में पावे ? पृथ्वीकाय में-स्पर्श।
२ दोय इन्द्री किण में पावे ? लट, गिंडोला में-रस, स्पर्श।
३ तीन इन्द्री किण में पावे ? कीड़ी, मकोड़ा में-घ्राण, रस, स्पर्श।
४ चार इन्द्री किण में पावे ? माखी, मच्छर में (श्रोतेन्द्री टली)।
५ पांच इन्द्री किण में पावे ? समचे जीव में।

पांचवें बोले प्रर्याय छव ६—

१ एक प्रर्याय किण में पावे ? शरीर प्रर्यायरे अल-

धिया में आहार प्रर्याय ।

२ दोय प्रर्याय किण में पावे ? इन्द्री प्रर्यायरे अल-
धिया में आहार, शरीर ।

३ तीन प्रर्याय किण में पावे ? एकेन्द्री अपर्याप्ता में
आहार, शरीर, इन्द्री ।

४ चार प्रर्याय किण में पावे ? एकेन्द्री में (मन,
भाषा टली) ।

५ पांच प्रर्याय किण में पावे ? साखी में पावे (मन
प्रर्याय टली) ।

६ छव प्रर्याय किण में पावे ? समचे जीव में ।

६ छट्ठे बोले प्राण दश १०—

१ एक प्राण किण में पावे ? चउदमें गुणस्थान में
आयुष बल प्राण ।

२ दोय प्राण किण में पावे ? वाटे वहता जीव में-
काया, आयुष ।

३ तीन प्राण किण में पावे ? एकेन्द्री अपर्याप्ता में-
स्पर्श, काया, आयुष ।

४ चार प्राण किण में पावे ? एकेन्द्री में-स्पर्श,
काया, श्वासोश्वास, आयुष ।

५ पांच प्राण किण में पावे ? तेरहवें गुणस्थान में
(पांच इन्द्रियां का टल्या) ।

६ छव प्राण किण में पावे ? बेइन्द्री में-रस, स्पर्श वचन, काया, श्वासोश्वास, आयुष।

७ सात प्राण किण में पावे ? तेइन्द्री में (श्रोत, चक्षु, मन टल्या)।

८ आठ प्राण किण में पावे ? चौइन्द्री में (श्रोत, मन टल्या)।

९ नव प्राण किण में पावे ? असन्नी पंचेन्द्री में (मन टल्यो)।

१० दश प्राण किण में पावे ? समचे जीव में।

७ सातवें बोले शरीर पांच ५—

१ एक शरीर किण में पावे ? एक शरीर किण ही में नही पावे।

२ दोय शरीर किण में पावे ? बाटे वहता जीव में-तैजस, कार्मण।

३ तीन शरीर किण में पावे ? पृथ्वीकाय में-औदारिक, तैजस, कार्मण।

४ चार शरीर किण में पावे ? वायुकाय में (आहारिक टल्यो)।

५ पांच शरीर किण में पावे ? समचे जीव में।

८ आठवें बोले योग पन्द्रह १५—

१ एक योग किण में पावे ? दीसता थान के

टाणा में औदारिक ।

२ दोय योग किण में पावे ? उड़ती माखी में औदारिक, व्यवहार भाषा ।

३ तीन योग किण में पावे ? तेउकाय में औदारिक, औदारिक मिश्र, कार्मण ।

४ चार योग किण में पावे ? बेइन्द्री में औदारिक, औदारिक मिश्र, व्यवहार भाषा, कार्मण ।

५ पांच योग किण में पावे ? वाउकाय में औदारिक, औदारिक मिश्र, वैक्रेय, वैक्रेय मिश्र, कार्मण ।

६ छव योग किण में पावे ? असन्नी में औदारिक, औदारिक मिश्र, वैक्रेय, वैक्रेय मिश्र, व्यवहार भाषा, कार्मण ।

७ सात योग किण में पावे ? केवलयां में-सत्य-मन, व्यवहार मन, सत्यभाषा, व्यवहार भाषा, औदारिक मिश्र, कार्मण ।

८ आठ योग किण में पावे ? तीजे गुणस्थान में-नेमां ४ मन, ४ वचन को ।

९ नव योग किण में पावे ? परिहार विशुद्ध चारित्र में-४ मन का, ४ वचन का, १

औदारिक।

दश योग किण में पावे? तीजे गुणस्थान में-४ मन का, ४ वचन का, औदारिक, वैक्रेय।

११ इग्यारह योग किण में पावे? नारकी में-४ मन का, ४ वचन का, वैक्रेय, वैक्रेय मिश्र, कार्मण।

१२ बारह योग किण में पावे? श्रावक में (आहारिक, आहारिक मिश्र, कार्मण टल्या)।

१३ तेरह योग किण में पावे? तिर्यंच में (आहारिक, आहारिक मिश्र, टल्या)।

१४ चउदह योग किण में पावे? मन योगी में (कार्मण टल्यो)।

१५ पद्रह योग किण में पावे? समचो जीव में।

६ नवमें बोले उपयोग बारह १२—

१ एक उपयोग किया में पावे? बाटे वहता सिद्धां में-केवल ज्ञान।

२ दोय उपयोग किण में पावे। सिद्धां में केवल ज्ञान, केवल दर्शन।

३ तीन उपयोग किण में पावे? एकेन्द्री में-

मति, श्रुति अज्ञान, अचक्षु दर्शन ।

४ चार उपयोग किण मे' पावे ? दशवें गुण-
स्थान में-४ ज्ञान (केवल बरजीने)

५ पांच उपयोग किण में पावे ? बेइन्द्री में-
मति, श्रुति ज्ञान, मति, श्रुति अज्ञान,
अचक्षु दर्शन ।

६ छव उपयोग किण में पावे ? मिथ्याती में-
३ अज्ञान, ३ दर्शन (केवल बरजीलें) ।

७ सात उपयोग किण में पावे ? छट्ठे गुणस्थान
में-केवल बरजीने ४ ज्ञान ने ३ दर्शन ।

८ आठ उपयोग किण में पावे ? अचर्म में-३
अज्ञान, ४ दर्शन, १ केवल ज्ञान ।

९ नव उपयोग किण में पावे ? देवता में (मन-
पर्यव, केवल ज्ञान, केवल दर्शन टल्या)

१० दश उपयोग किण में पावे ? स्त्रीवेद में
(केवल ज्ञान, केवल दर्शन टल्या) ।

११ इग्यारह उपयोग किण में पावे ? अभाषक
में (मन पर्यव टल्यो) ।

१२ बारह उपयोग किण में पावे ? समचे जीव
में ।

१० दशवें बोले कर्म आठ ८—

१, २, ३ कर्म किण में पावे ? किणही में नहीं पावे ।

४ चार कर्म किण में पावे ? केवल्यां में-वेदनी, आयुष्य, नाम, गोत्र ।

५, ६ कर्म किण में पावे ? किणही में नहीं पावे ।

७ सात कर्म किण में पावे ? बारवें गुणस्थान में (मोहनी टल्यो) ।

८ आठ कर्म किण में पावे ? समचे जीव में ।

११ इग्यारवें बोले गुणस्थान चवदह १४—

१ एक गुणस्थान किण में पावे ? एकेन्द्री में-पहलो ।

२ दोय गुणस्थान किण में पावे ? बेइन्द्री में-पहलो, दूजो ।

३ तीन गुणस्थान किण में पावे ? अपर्याप्ता में-१, २, ४.

४ चार गुणस्थान किण में पावे ? देवता में—४ प्रथम ।

५ पांच गुणस्थान किण में पावे ? तिर्यंच सन्नी पंचेन्द्री में ५ प्रथम ।

में ६ प्रथम ।

७ सात गुणस्थान किण में पावे ? तेजू लेश्या में सात प्रथम ।

८ आठ गुणस्थान किण में पावे ? अप्रमादी में आठ छेहला ।

९ नव गुणस्थान किण में पावे ? स्त्रीवेद मे नव प्रथम ।

१० दश गुणस्थान किण में पावे ? लोभ कषाय में दश प्रथम ।

११ इग्यारह गुणस्थान किण में पावे ? चक्षु दर्शन में (१, १३, १४ टलया) ।

१२ बारह गुणस्थान किण में पावे ? सम्यक्त्वी में (१, ३ टलया) ।

१३ तेरह गुणस्थान किण में पावे ? संयोगी में (चवदमों टलयो) ।

१४ चवदह गुणस्थान किण में पावे ? समचै जीव में ।

१२ बारहवें बोले पांच इन्द्र्यां की २३ विषय—

८ विषय एकेन्द्री में ८ स्पर्श इन्द्री की ।

१३ विषय बेइंद्री में ५ रस, ८ स्पर्श इंद्री की ।

१५ विषय तेइंद्री में २ घ्राण, ५ रस, ८ स्पर्श इंद्री की।

२० विषय चौइंद्री में (श्रुत इंद्री को तीन टली)।

२३ विषय पंचेइंद्री में।

१३ तेरहवें बोले १० प्रकार का मिथ्यात्व किण में पावे मिथ्याती में पावे।

१४ चवदवें बोले नवतत्व ना ११५ भेद तिणमें जीव ना १४—

१ एक भेद किण में पावे? केवल ज्ञानी में पावे चवदमों।

२ दोय भेद किण में पावे? देवतां में पावे १२ १४.

३ तीन भेद किण में पावे? मनुष्य में पावे ११, १३, १४.

४ चार भेद किण में पावे? एकेइंद्री में पावे-४ प्रथम।

५ पांच भेद किण में पावे? भाषक में पावे-६, ८, १०, १२, १४.

६ छव भेद किणमें पावे? सम्यक्ती में पावे-५, ७, ६, ११, १३, १४.

७ सात भेद किणा में पावे ? पर्याप्ता में पावे-
७ पर्याप्ता का ।

८ आठ भेद किणा में पावे ? अनाहारिक में
पावे ७ पर्याप्ता १ चवदमों ।

९ नव भेद किणा में पावे ? औदारिक मिश्र में
पावे (२, ६, ८, १०, १२ टल्या) ।

१० दश भेद किणा में पावे ? त्रसकाय में पावे
(एकेन्द्री का ४ टल्या) ।

११ इग्यारह भेद किणा में पावे ? कोरा तिर्यंचरे
भेदां में (११, १३, १४ टल्या) ।

१२ बारह भेद किणा में पावे ? असन्नी में पावे
(१३, १४ टल्या) ।

१३ तेरह भेद किणा में पावे ? कोरा असंयती में
पावे (चवदमों टल्यो) ।

१४ चवदह भेद किणा में पावे ? समचे जीव में

५ पन्द्रहवें बोले आत्मा आठ ८—

१ एक आत्मा किणा में पावे ? द्रव्य जीव में
पावे-द्रव्य आत्मा ।

२ दोय आत्मा किणा में पावे ? उपशम भाव में
पावे-दर्शन, चारित्र

३ तीन आत्मा किणा में पावे ? उदय भाव में

पावे-कषाय, योग, दर्शन ।

४ चार आत्मा किण में पावे ? सिद्धां में पावे-द्रव्य, उपयोग, ज्ञान, दर्शन ।

५ पांच आत्मा किण में पावे ? निर्जरा में पावे-(द्रव्य, कषाय, चारित्र टली) ।

६ छव आत्मा किण नें पावे ? मिथ्यात्ती में पावे (ज्ञान, चारित्र टली) ।

७ सात आत्मा किण में पावे ? श्रावक में पावे-(चारित्र टली) ।

८ आठ आत्मा किण में पावे ? साधु में पावे ।

१६ सोलहवें बोले दण्डक चोवीस २४—

१ एक दण्डक किण में पावे ? सात नारकी में पावे-१ प्रथम ।

२ दोय दण्डक किण में पावे ? श्रावक में पावे-२०, २१ ।

३ तीन दण्डक किण में पावे ? शुक्ल लेश्या में पावे-२०, २१, २४ ।

४ चार दण्डक किण में पावे ? तिर्यंच त्रसकाय में पावे -१७, १८, १९, २० ।

५ पांच दण्डक किण में पावे ? एकेन्द्री में पावे-१२, १३, १४, १५, १६ ।

६ छव दण्डक किण में पावे ? त्रसकाय में नपुं-
सक में पावे-१, १७, १८, १९, २०, २१ ।

७ सात दण्डक किण में पावे ? कोरा अचक्षु
दर्शन में पावे-१२, १३, १४, १५, १६,
१७, १८ ।

८ आठ दण्डक किण में पावे ? कोरा असन्नी में
पावे-१२, १३, १४, १५, १६, १७, १८, १९ ।

९ नव दण्डक किण में पावे ? तिर्यंच में पावे-
१२ से २० तांई ।

१० दश दण्डक किण में पावे ? असन्नी में पावे-
१२ से २१ तांई ।

११ इग्यारह दण्डक किण में पावे ? नपुंसक
वेद में पावे (१३ देवता का टल्या) ।

१२ बारह दण्डक किण में पावे ? गर्भ बिना
सन्नी कृष्ण लेश्या में पावे-१ से ११ तांई,
१ बाईसमों ।

१३ तेरह दण्डक किण में पावे ? सर्व देवता में
पावे-२ से ११ तांई, २२, २३, २४.

१४ चवदह दण्डक किण में पावे ? कोरा सन्नी
मे पावे-१३ देवतां रा, १ नारकी रो ।

१५ पन्द्रह दण्डक किण में पावे ? स्त्रीवेद में

पावे-१३ देवतांरा, २०, २१,

१६ सोलह दण्डक किण में पावे ? सन्नी में पावे (५ स्थावर, ३ विकलेन्द्री टल्या)

१७ सतरह दण्डक किण में पावे ? चक्षु दर्शन में पावे (५ थावर, बेइन्द्री तेइन्द्री का टल्या)

१८ अट्ठारह दण्डक किण में पावे ? तेजू लेश्या में पावे (३ बिकलेन्द्री, नारकी, तेउ, वाउ का टल्या) ।

१९ उगणीस दण्डक किण मे पावे? सम्यक्ती में पावे (५ थावर का टल्या) ।

२० बीस दण्डक किण में पावे ? अढाई द्वीप बारे नीचा लोक में (२१, २२, २३, २४ टल्या) ।

२१ इकवीस दण्डक किण में पावे ? नीचा लोक में पावे (२२, २३, २४ टल्या) ।

२२ बाईस दण्डक किण में पावे ? कृष्ण लेश्या में पावे (२३, २४ टल्या) ।

२३ तेईस दण्डक किण में पावे ? एकेन्द्री की आगत में (नार की रो एक दण्डक महलो टल्यो) ।

२४ चौबीस दण्डक किण में पावे ?अव्रतीमें पावे ।

१७ सतरहवें बोले लेश्या छव—

१ एक लेश्या किण में पावे ? तेरहवें गुणस्थान में पावे-१ शुक्ल ।

२ दोय लेश्या किण में पावे ? तिजी नारकी में पावे-कापोत, नील ।

३ तीन लेश्या किण में पावे ? तेउकाय में पावे-कृष्ण, नील, कापोत ।

४ चार लेश्या किण में पावे ? पृथ्वी काय में पावे (पद्म, शुक्ल टली) ।

५ पांच लेश्या किण में पावे ? सन्यासी री गत देवता में पावे (शुक्ल टली) ।

६ छव लेश्या किण में पावे ? समचे जीव में ।

१८ अट्ठारहवें बोले दृष्टि तीन ३—

१ एक दृष्टि किण में पावे ? चौथे गुणस्थान में पावे सम्यक् दृष्टि ।

२ दोय दृष्टि किण में पावे ? बेइन्द्री में पावे-सम्यक्, मिथ्या ।

३ तीन दृष्टि किण में पावे ? समचे जीव में ।

१९ उगणीसवें बोले ध्यान चार ।

१ एक ध्यान किण में पावे ? केवलयां में पावे-१ शुक्ल ।

२ दोय ध्यान किण में पावे ? सातवें गुणस्थान सें पावे-धर्म, शुक्ल ।

३ तीन ध्यान किण में पावे ? श्रावक में पावे (शुक्ल टल्या) ।

४ चार ध्यान किण में पावे ? समचै जीव में ।

२० बीसवें बोले ६ द्रव्य रा ३० बोल ।

१ एक द्रव्य अलोक में पावे-आकाशास्तिकाय ।

६ छव द्रव्य लोक में पावे ।

२१ इकवीसवें बोले रास दोय २—

१ एक रास किण में पावे ? जीव मे पावे-१ जीव रास ।

२ दोह रास किण में पावे ? लोक में पावे ।

२२ बाईसवें बोले श्रावकरा १२ व्रत—ते श्रावक में पावे ।

२३ तेईसवें बोले साधुजी ना पांच महाव्रत—साधु में पावे ।

२४ चौवीसवें बोले भांगा ४९—श्रावक में पावे ।

२५ पच्चीसवें बोले चारित्र पांच ५—

१ एक चारित्र किण में पावे ? केवल्यां में पावे-यथाख्यात ।

२ दोय चारित्र किण में पावे ? पुलाकनियंठा

में पावे-सामायक, छेदोस्थापनीय ।

३ तीन चारित्र किण में पावे ? छट्ठे गुणस्थान में पावे-सामायक, छेदोस्थापनीय, परिहार विशुद्ध ।

४ चार चारित्र किण में पावे ? लोभकषाय में पावे (१ यथाख्यात टल्यो) ।

५ पांच चारित किण में पावे ? साधु में पावे ।

अथ हुण्डी लूंकारि लिख्यते ।

शहर जेताण मध्ये लूंका गुजराती सरूपचन्दजी रामचदजी रा उपासरा थी हुण्डी आणी तिण में शुद्ध प्ररूपणा जाणी ने उणरे देखा देख लिखी छे ।

(१) तीन ही काल का भाव केवल ज्ञानी देख्या कोई जीवने नव तत्वरे जाणपणा बिना संसार समुद्र सूं तिरतो देख्यो नहीं । साख सूत्र प्रथम सूयगडांग, अध्ययन १२, गाथा १६ ।

(२) जीव ने अजीव रास दो कही तीसरी रास कहवे तिणने त्रिरासियो निन्हव कहीजे । सा० सू० उववाई, प्र० १६.

(३) जीव अजीव त्रस थावर जाणे नहीं तिणरा पचक्खाण दुपचक्खाण कह्या । सा० सू० भगवती, श० ७, उ० २.

(४) जीव अजीव ने जाणे नहीं जीव अजीव दोनां ने जाणे नहीं तिणने संजमरी ओलखना नहीं । सा० सू० दशवैकालिक, अ० ४, गा० १२.

(५) सम्यक्त बिना चारित्र नहीं समयक्त बिना व्रत नहीं । सा० सू० उत्तराध्ययन, अ० २८, गा० २६,

(६) ज्ञान बिना दया नहीं दया चारित्र एक ही कह्या सा० सू० दशवैकालिक, अ० ४, गा १०.

(७) असंजती अव्रती अपच्चखाणीने सूजतो असूजतो फासु अफासु देवे तिणने एकान्त पाप कह्यो निर्जरा नथी। सा० सू० भगवती, श० ८, उ० ६.

(८) साश्वता असाश्वता री खबर नहीं तिण ने बोध रहित कह्यो। सा० सू० प्र० सूयगड़ांग अ० १, उ० २, गा० ४.

(६) साधु थोड़ा असाधु घणा। सा० सू० दशवैकालि, अ० ७, गा० ४८.

(१०) साधुरे सर्व थकी प्राणातिपात का त्याग छै तिणरे अपच्चक्खाणरी परिग्रह री क्रिया नहीं। सा० सू० पन्नवणा, पद २२.

(११) साधु रो आहार असावद्य कह्यो साधु रो आहार व्रत में कह्या साधु पाप रहित छै। सा० सू० दशवैकालिक, अ० ५, उ० १, गा० ६२.

(१२) भगवान् श्री महावीर स्वामी ठंडो आहार घणा दिना रो नीपनो लियो। सा० सू० प्र० आचारांग, अ० ८, उ० ४, गा० १३.

(१३) केवल ज्ञानी परूप्यां बिना आप आपरी प्ररूपणा करे जिके ने किंचित मात्र जाणपणो नहीं।

सा० सू० प्र० सूयगडांग, अ० १, उ० २ गा० १४.

(१४) श्रावक ने केवल ज्ञानी प्ररूप्यां विना दूसरा धर्म मानणो नहीं । सा० सू० उववाई, प्रश्न २०.

(१५) समयती ने धर्म केवल ज्ञानी प्ररूप्यो मानणो दूसरो मानणो नहीं । सा० सू० उत्तराध्ययन, अ० २८, गा० ३१.

(१६) केवल ज्ञानी री पाखंडियांरी बचनां री खबर नही । जिकांरे घणो अकाममरण बालमरण होसी । सा० सू० उत्तराध्ययन, अ० ३६, गा० २६५.

(१७) पर वचन सूं ईं अर्थ परमार्थ शेष थाकता रह्या सोई सर्व अनर्थ । सा० सू० उववाई, प्रश्न २०.

(१८) केवलयां रो आचार सोई छद्मस्थ रो आचार, केवलयां रो अनाचार सोई छद्मस्थ रो अनाचार । सा० सू० प्र० आचारांग, अ० २, उ० ६.

(१९) वत्तवया दोय कही—१ स्वसमय वत्तवय, २ परसमय वत्तवय । स्वसमय वत्तवय की साधु लो आज्ञा देवे । परसमय वत्तवय में सात औगुण—अनर्थ १, अहित २, असंजम भाव ३, अक्रिया ४, उनमारग ५, उपयोग रहित ६, मिथ्यात ७ । सा० सू० अनुयोगद्वार, ७ नय पूरी हुई जठे.

(२०) केवली प्ररूपियो एकान्त धर्म कह्यो । सा०

सू० प्र० सूयगड़ांग, अ० ६, गा० ७.

(२१) केवली प्ररूपियो धर्म यथार्थ सरल शुद्ध माया कपटाई रहित। सा० सू० प्र० सूयगड़ांग, अ० ८ गा० १.

(२२) जिन करणी में किंचित मात्र हिंसा नहीं ते करणी ज्ञान रो सार कही। सा० सू० प्र० सूयगडांग, अ० १, उ० ४, गा० १०.

(२३) केवल ज्ञानी भाष्यो धर्म सन्देह रहित कह्यो। सा० सू० प्र० सूयडांग, अ० १०, गा० ३.

(२४) आपरो छान्दो रूंद्ध ते धर्म। सा० सू० उत्तराध्ययन, अ० ४, गाथा ८.

(२५) केवली प्ररूपियो धर्म अहिंसा संजमोतवो। सा० सू दशवैकालिक, अ० १, गा० १,

(२६) अपछन्दारी प्रशंसा करे करावे करता ने भलो जाणे तो प्रायश्चित। सा० सू० निशीथ, उ० ११ बो० ८१.

(२७) बालमरण री प्रशंसा करे करावे करताने भलो जाणे तो प्रायश्चित। सा० सू० निशीथ उ० ११, बो० ९१.

(२८) गृहस्थी ने असंजती ने असाण, पाण, खादम. स्वादम, वत्थ, पडिग्गह, कम्बल, पायपुच्छण,

८ बोल देवे, दिवावे, देवतां ने भलो जाणे तिणने चोमासी प्रायश्चित आवे। सा० सू० निशीथ, उ० १५ बो० ७४—७५.

(२९) वोसराया ने अणवोसराया कहे अणवोसराया ने वोसराया कहे तिण ने प्रायश्चित। सा० सू० निशीथ, उ० १६, बो० १३-१४.

(३०) सरीषा साधु होकर के सरीषा साधुवों ने थानक देवे नहीं दिरावे नहीं देवतां ने भलो जाणे नहीं तो प्रायश्चित। सा० सू० निशीथ, उ० १७, बो० २२३.

(३१) गृहस्थ री व्यावच करे करावे करता ने भलो जाणे तो प्रायश्चित। सा० सू० निशीथ, उ० ११, बो० ११.

(३२) सरीषी साध्वियां ने थानक देवे नहीं दिरावे नहीं देवतां ने भलो जाने नहीं तो प्रायश्चित। सा० सू० निशीथ, उ० १७, बो० २२४.

(३३) साधु बसे तिण थानक में न्याति, अन्य न्याति, श्रावक अथवा श्राविका आधी रात वा सारी रात राखे तो प्रायश्चित। सा० सू० निशीथ, उ० ८ बो० १२.

(३४) बसे तिणने तीन करण, तीन जोग

नहीं निषेधे तो प्रायश्चित । सा० सू० निशीथ, उ० ८ बो० १३.

(३५) गृहस्थी प्रते दान देवे तिगारी प्रशंसा करे तो छव काया रो हिंसा लागे । सा० सू० सुयगडांग, अ० ११, गा० २०.

(३६) विषय सहित धर्म प्ररूपे ते बुरो ज्यूं ताल-पुट विष खायां बुरो । सा० सू० उत्तराध्ययन, अ० २०, गा० ४४.

(३७) भाषा दोय कही—१ आराधक भाषा, २ विराधक भाषा । विराधक भाषा में ४ औगुण— असंजम, अव्रत, अपांडियाई, अपच्चक्रिया पाप कर्म । सा० सू पन्नवणा, पद ११.

(३८) मिश्र भाषा बोल्यां महा मोहणी कर्म बंधे । सा० सू० दशाश्रुत स्कंध, अ० ६, बो० ६.

(३६) मिश्र भाषा छोड़े छुडावे तिणने समाधि कही । सा० सू० प्र० सूयगडांग, अ० १०, गा० १५.

(४०) मिश्र भाषा सर्व थकी छोडणी कही । सा० सू० दशवैकालिक अ० ७, गा० १.

(४१) मिश्र भाषारे धणीरी वचन अवक्तव्य अणविमासियेरो बोलणहार कह्यो, अज्ञानवादी कह्यो, पूछ्यां रो जबाब देवा असमर्थ कह्यो मिश्र धर्म प्ररूप-

णेवालो आपरो मत थापवा भणी छल बल मांडो छै। सा० सू० प्र० सुयगडांग, अ० १२, गा० ५.

(४२) साधुरी आज्ञा बारे धर्म श्रद्धे तिणने काम भोग में खूतो कह्यो, हिंसा रो करणेवालो कह्यो। सा० सू० प्र० आचारांग, अ० ६, उ० ४.

(४३) साधु री आज्ञा बारे धर्म कहसी तिणरा तप ने नियम भ्रष्ट कह्या, ने मूर्ख कह्या। सा० सू० प्र० आचारांग, अ० २, उ० २.

(४४) आज्ञा बारे धर्म कहे आज्ञा मांहि 'पाप कहे, ए दो बोल कोई जीव ने होजो मती। सा० सू० प्र० आचारांग, अ० ५, उ० ६.

(४५) परवचन सुं विरुद्ध प्ररूपणेवाले ने भगवान् निन्हव कह्यो, निन्हवांरो आचार छे। सा० सू० उववाई, प्र० १९.

(४६) राग द्वेष ने पाप कह्यो। सा० सू० उत्त-राध्ययन, अ० ३१, गा० ३.

(४७) कोई कोई इम कहे साता दियां साता होवे तिवांरे श्री भगवान छव बोल प्ररूप्या—१ आरज मार्ग सुं वेगलो, २ समाधि मार्ग सूं न्यारो, ३ जैन धर्म रो हेलणा करणहार कह्यो, ४ थोड़ा सुखांरे कारणे घणा सुखां रो हारणहार कह्यो, ५ असोच रो

कारण कह्यो, ६ लोहवाणियां नी परे घणो झुरसी।
सा० सू० प्र० सुयगडांग, अ० ३, उ० ४, गा० ६-७.

(४८) साधु होकर के अणुकारपारे वास्ते त्रस-जीव ने बांधे बंधावे बांधतां ने भलो जाणे, छोडे छुडावे छोडतां ने भलो जाणे तिणने चोमासी प्रायश्चित आवे सा० सू० निशीथ, उ० १२, बो० १--२.

(४९) मोक्ष रा मार्ग जाणे नहीं तिणने श्री भगवान् री आज्ञा रो लाभ नहीं। सा० सू० प्र० आचारांग, अ० ४, उ० ४,

(५०) ब्राह्मणां नें जिमायां तमतमा पहुंचे। सा० सू० उत्तराध्ययन, अ० १४, गा० १२.

(५१) साधुरे अठारह पाप रा सर्व थकी त्याग छे, देश थको नहीं। सा० सू० उववाई, प्र० २१.

(५२) साधु रा भण्ड उपगरण परिग्रह मे कह्या नहीं, मुरच्छा राखे ता परिग्रह लागे। सा० सू० दश-वैकालिक, अ० ६, गा० २१.

(५३) साधुरे नवकोटि पचक्खाण कह्या। सा० सू० दशवैकालिक, अ० ४.

(५४) आचारजां री आज्ञा बिना आहार करे करतां ने भलो जाणे तो प्रायश्चित। सा० सू० निशीथ उ० ४, बो० २२.

(५५) पुण्य पाप सूं जीव ने पचतो दीठो। सा० सू० उत्तराध्ययन, अ० १०, गा० १५.

(५६) पुण्य पाप ने खपावणो कह्यो । सा० सू० उत्तराध्ययन, अ० २१, गा० छेहली.

(५७) उसन्ना पासत्थो ढीला ने वंदना प्रशंसा करे करावे करतां ने भलो जाणे तो चौमासी प्रायश्चित । सा० सू० निशीथ, उ० १३, बो० ४२-४३-४४-४५.

(५८) साधु गृहस्थी को औषधि करे करावे करतां ने भलो जाणे तो प्रायश्चित । सा० सू० निशीथ, उ० १२, बो० १७.

(५९) सामायक दोय कही—१ आगार सामायक, २ अणागार सामायक । सा० सू० ठाणांग, ठा० २. उ० ३, बो० ६.

(६०) चारित्र दोय कह्या—१ आगार चारित्र, २ अणागार चारित्र । सा० सू० ठाणांग, ठा० २, उ० १, बो० २५.

(६१) धर्म दोय कह्या—१ मूल धर्म, २ चारित्र धर्म । सा० सू० ठाणांग, ठा० २, उ० १, बो० २५.

(६२) कर्म खपावा री करणी दोय कही—१ संयम, २ तप। सा० सू० उत्तराध्ययन, अ० २८, गा० ३६.

(६३) मार्ग दोय प्ररूप्या—१ भगवान री प्ररूप्यो मार्ग, २ पाखण्डियांरो मार्ग। सा० सू० उत्तराध्ययन, अ० २३, गा० ६३.

(६४) संवर गुण ने आस्रव गुण जुदा जुदा कह्या छै। सा० सू० प्र० आचारांग, अ० ४, उ० २.

(६५) करणी ४ कही—१ इहलोक ने हित, २ परलोक ने हित, ३ कीर्ति श्लाघा हित, ४ निर्जरा ने हित। सा० सू० दशवैकालिक, अ० ९, उ० ४.

(६६) प्रज्ञा दोय कही—१ ज्ञान प्रज्ञा, २ पचक्खाण प्रज्ञा। सा० सू० प्र० आचारांग, अ० २, उ० ४.

(६७) धर्म दोय कह्या—१ आगार धर्म, २ अणागार धर्म। सा० सू० उववाई, भगवान ने कोणिक राजा वन्दना करने गया जठे.

६८. ध्यान चार कह्या—१ आर्त ध्यान, २ रुद्र ध्यान, ३ धर्म ध्यान, ४ शुक्ल ध्यान। सा० सू० उववाई तथा भगवती.

६८ साधु असंजती ने ऊभो रह, बैठ, सो, आव, जाव, काम कर । ए ६ बोल साधु ने कहणा नहीं । सा० सू० दशवैकालिक, अ० ७, गा० ४७.

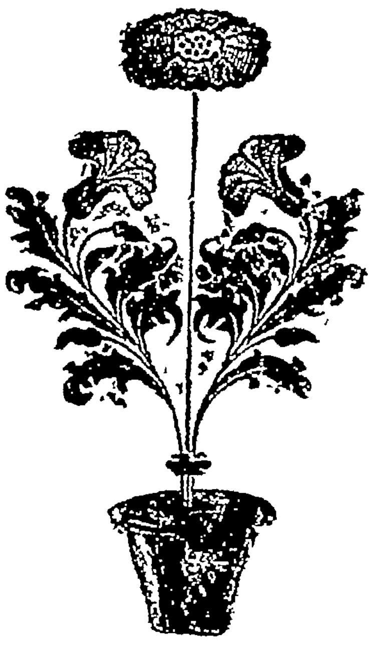

श्री प्रदेशी राजा री संध ।

॥ दोहा ॥

संध प्रदेशीराय नी, राय प्रसेणी मांय ।
तिण अनुसारे हूं, कहूं सांभलज्यो चित लाय ॥१॥
अमल कप्पा नगरी तिहां, अंबशाल ना बाग ।
तिहां श्री वीर समोसर्या भव जीवांरे भाग ॥२॥
खबर हुइ नगरी मांहि लोक वांदण ने जाय ।
सेन राजा पिण आवियो सेव करे चित लाय ॥३॥
च्यारू दिश रा देवता आया वन्दण काज ।
लुल लुल नें लटका करे धन्य दिहाड़ो आज ॥४॥

॥ ढाल १ ली ॥

सूरियाभ देव तिण अवसरे बैठो सूरियाभ विमागारे । प्रथम देवलोक सुधर्मों सभा सहु परवार संग आगारे ॥ पून्य तणा फल एहवा ॥ १ ॥ सामानिक च्यार हजार रे । अग्रमहेषी च्यारे भली । ते पिण सहित परिवार रे ॥ २ ॥ परषधा तीन साते अणी । आतम रक्षक रा देवरे । सोले ही सहस्र सूरियाभ नी ।

अहो निशि करत है सेवरे ॥ ३ ॥ वले अनेरा देवता । वेसे सूरियाभ ने पास रे । तेहनें संग परवस्यो थको । लीला करे मन हुलास रे ॥ पु० ॥ ४ ॥ तिण विरियां सूरियाभ तो । दीधो अवध गिनान रे ॥ बाग में वीर ने देख नें । पामियो हर्ष असमान रे ॥ पु० ॥ ५ ॥ उठियो बेग सतावसूं । वले उत्तरासण कीधो तेहरे ॥ सात आठ पग स्हामो जाय नें । नमोत्थुणं करी धर नेहरे ॥ पु० ॥ ६ ॥ एक कियो रे सिद्धां भणी । दूसरो वीर नें कीधरे ॥ देखो छो आप उहां थकी । एम बोल्यो मन लहलीन रे ॥ पु० ॥ ७ ॥ वले सूरियाभ मन चिन्तवे । नाम सुण्या हुलसाय रे ॥ अरिहन्त नें भगवन्त नें । दीठांइ दुःख टल जाय रे ॥ पु० ॥ ८ ॥ वाणी सुणी वनणा कियां । पर भव में सुख होय रे ॥ दुःख दालिद्र देखे नहीं । शंका नहीं तिल कोय रे ॥ पु० ॥ ९ ॥ एहवो करी विचारणा । सेवग देवने तेड़रे । वेग जा जम्बूरे द्वीप में । वीर जिनेश्वर केड़रे ॥ पु० ॥ १० ॥ भगवन्त नें वन्दणा करे । दे सत्कार सन्मान रे ॥ मांडलो निपट चोखो करे । एक जोजन परिमाणरे ॥ पु० ॥ ११ ॥ अगर तगर गंध वटी । फेर सुगन्ध कर चूंपरे । पोह पहुलग रिषेवने । आगन्या पाछी संपरे ॥ पु० ॥ १२ ए सूरियाभ कह्यां थकां ।

पामीयो हर्ष उल्लास रे ॥ आयो छै बेग सताव सूं। वीर जिणेश्वर पासरे ॥ पु० ॥ १३ ॥ कहै हूं सेवक सूरियाभ नो। बन्दणा करूं बारम्बार रे ॥ वीर जिणे-श्वर इम कहै। जूनो छै तुम आचार रे ॥ पु० ॥१४॥ इम सुणी सुर हर्ष्यो घणो। उठियो धर्म नें प्रीत रे ॥ मांडलो निपट चोखो करयो कही सु करी सर्व रीतरे पु० ॥ १५ ॥ सूरिमाभ देव कने आय नें। दीधी सर्व जताय रे ॥ सूरियाभ सुण हर्षित थयो। बोलियो ए-हवो बाय रे ॥ पु० ॥ ६ ॥ सुधर्मी सभा मझे जाय नें। सुस्वर घणटा बजाय रे ॥ मोटे मोटे शब्दे करी। देव भेला हुवा आयरे ॥ पु० ॥ १७ ॥

॥ दोहा ॥

बचन सुणी सूरियाभनो। सेवक हर्षित थाय ॥
सुधर्मी सभा मझे। घणटा दीवी बजाय ॥ १ ॥
सूरियाभ देव वीर वान्दवा। जासी धर्म नें हेज ॥
देव देवी बेगा आवज्यो। विलम्ब न कीज्यो जेज ॥२॥
हूंता देव प्रमाद में। विषय राग में ताम ॥
घणटा शब्द सुण्या पछी। सहु हुवा सावधान ॥३॥
मांहों मांही इमड़ी कहै। वान्दण नें जगनाथ ॥
आपणा धणी पधारियां। आपां हुस्यां साथ ॥४॥

॥ ढाल २ जी बालुड़ा नी देशी ॥

एकाएकी देव वन्दणा कारणे । कोई पूजा सत्कारीनेए । कोई अरथ ने हेते प्रश्न पूछस्यांए। अर्थ तणो निहचो करीए । १ । कोई किलोल भूत कोईक जिन तणाए। वचन अपूरव सांभल्या है। २। एकाएकी वयण सुर सूरियाभना आघा लङ्घ सके नहीं ए । ३। मांहिरा बयण। कोई मानत कोई भगवन्त री भक्तिनेए। ४। कोई सूरियाभ निमित्त कोइक इम कहे जीवित व्यवहार आपणोए। ॥ ५ ॥ अपनी ऋद्ध समेत सूरियाभेए। वेगा आवनें भेला हुवाए ॥ ६ ॥ देव देवी आया देख सूरियाभ हर्षियो। सेवक नें बोलावियोए ॥ ७ ॥ हुकम करे छे एम जाण विमाण नें बेग सताबी करो ए ॥ ८ ॥ अनेक थंभ लगाय शोभे पूतला रूप विविध प्रकार का ए ॥९॥ घणी घणटानी सेण मणि रत्न तणो जाल्यां जोर विराजतो ए ॥ १० ॥ लख जोजन परिमाण चाले उंतावलो वेग सताबी करो ए ॥ ११ ॥ अधिको जलुस बणाय म्हारी आगन्या पाछी वेगी सोंपवो ए ॥ १२ ॥ अभोगिए देव सुण हर्षित हुवो प्रमाण करी सर्व अगन्याए ॥ १३ ॥ देव शक्त तत्काल रूड़ी रीत सूं कियो विमाण ज शोभतो ए ॥ १४ ॥ विमाण पावड़िया तीन उत्तर

बारणा पूरव उत्तर दक्षिण दिशा ए ॥ १५ ॥ वज्र रत्न में नींव ऊंडी मूलसूं रिष्ट रत्न मांहिं जड़ीए ॥ १६ ॥ बिंटली रत्न जड़ी सांध रूप सोवन तणां पावड़िया नां पाटिया ए ॥ १७ ॥ वज्र रत्न जड़ी सांध पावड़ियां तणी मांहोंमांहिं खिसै नहीं है ॥ १८ ॥ मोटो तोरण एक देव वेगरो पावड़िया नें आगलै ए ॥ १९ ॥ रूप विविध प्रकार तोरण उपरै अचरिजकारी अति घणाए ॥ २० ॥ सूरज किरण सम तेज तोरण दीपतो देखंता लोयण ठरै ए ॥ २१ ॥ आठ आठ मंगलिक तोरण ऊपरे शोभमान ज्ञानी कह्या ए ॥ २२ ॥

॥ दोहा ॥

अभियोगी देवता, जाण बिमाणरै मांय ।
पेख्या मंडप घर कह्या, अनेक थंभ लगाय ॥१॥
शोभै तोरण पूतला, विविध भारी रूप ।
पेख्या मंडप घर तणो, अति विस्तार अनूप ॥२॥
खसबोई छै अति घणी, बाजांरो विस्तार ।
राग छतीस आलापता, पामै सुख अपार ॥३॥

॥ ढाल ३ जी ॥

सुणज्योरे नर वारीया मलरा चोरे रमणी रस रंगके चेतोरे चेलो प्राणिया (परदेशी)

पेख्या मंडप घर आंगणो रे । वैकारो देव अनूप। सुंवालो पंच वरणो रे । लता विलास सरूपरे ॥ पुन्य तणा फल जो ज्यो ॥ १ ॥ भोमि भागे मधि वैक्राव्यो रे मोटो चौंतरो एक । च्यारू पासा वज्र रत्न में । दीठाई हर्ष विशेष रे ॥ पु० ॥२॥ मणि पीठका उपरे रे । कियो सिंहासण एक ॥ विविध प्रकार का रूप मे चोतो देखवा जोग विशेष रे ॥ ५ ॥ ३ ॥ रत्न सोना में चाकलो । हेठलो तणे रूपा में भाग॥ च्यारूं पाया सोना तणा । मस्तक मणि लाग रे ॥ पु० ॥ ४ ॥ ईस उपला गातर रे जंबू सोना में मणि । वज्र रत्न सोना में जड़ो ॥ मणि रतनां मांवाहि वास रे ॥ पु० ॥ ५ ॥ रूप के विविध प्रकार का रे । रचिया रूड़ी रीत-की । पान पीठ मणि रत्न में । जाव विमाण री रीत रे । ॥ पु० ॥ ६ ॥ आठ जोजन लांबो कह्यो रे । चौड़ो ही इतरो जाण रे ॥ च्यार जोजन ऊंचो कह्यो रे । सर्व रतनां मांहि वखाण रे ॥ पु० ॥ ७ ॥ मसुण नवां शोभता रे । ढांक्यो सिंहासण एक ॥ राता वस्त्र सु मोटियोरे । सुंवालो मारवण जेम ॥ पु० ॥ ८ ॥ लिया

सिंहासण उपरैरे । वैक्रुव्यो चंद्रवो एक ॥ विचे वज्र अति दीप तो । धोला रतनां मांहि विशेष रे ॥ पु० ॥ ८ ॥ रतन चंद्रवा विचमें रे । वज्र आंकुड़ो जाण ॥ तिण में मोती वैक्रुव्यो । ओलो मोटा कुम्भ समान रे ॥ ॥ पु० ॥ १० ॥ च्यार मोती तिणरी पाखती । अर्द्ध कुम्भ समान । लहिक्षि मोत्यांरो झूमको । सोवन पन-ड्यां जाण रे ॥ पु० ॥ ११ ॥ हार अठारै मोसरा रे । त्यां करी शोभे सार । चिहुं दिशि मोती वेगला । उठै शब्द तणो झिण कार ॥ पु० ॥ १२ ॥ मोत्यां रो शब्द सुहामणो । तन मन नें सुख थाय । शब्द दशो दिशि प्रगटे । एहवी माल रही लहकाय रे ॥ पु० ॥ १३ ॥ सामानिक देवतां तणारे भद्रासण च्यार हजार रे । ईशाण वायव कूणमें । एतो शोभ रह्या श्रीकार रे ॥पु० ॥ १४ ॥ च्यारज देवी तूलगी रे । त्यांरा सिंहासण च्यार ॥ पूर्व दिश में वैक्रुव्या । वे तो दीठांइ हर्ष अपार रे ॥ पु० ॥ १५ ॥ अभिंतर प्रषधा तणा । भद्रा-सण आठ हजार रे । सिंहासण रे पाखती । किया अग्नि कूणरे सांयरे ॥ पु० ॥ १६ ॥ दश हजार भद्र-सणा रे । मध्य प्रषधा राजाण रे ॥ दक्षिण दिशि में वैक्रुव्या । सेवक चतुर सुजाण रे ॥ पु० ॥ १७ ॥ निरत कूणमें बारली तणा रे । भद्रासणा बारे हजार रे ।

पश्चिम दिश सात अणीका तणा । वैक्रुव्या साते ही सार रे ॥ पु० ॥ १८ ॥ आतम रिख रा देवता रे । भद्रासण सोलि हजार रे । सिंहासण रे चिहुं दिशे । रचिया रूड़े आकार रे ॥ पु० ॥ १९ ॥ शोभायमान दिसे घणो रे । राते वर्ण विमाण । ऊगते सूरज जेहवा वलि कूणसुं रे अधिको जाण ॥ पु० ॥ २० ॥ वर्ण रस गंध फर्श नो रे । वर्ण कह्यो जिनराय । प्रधानिक विमाण निपाय नें । कह्यो सूरियांभ नें आयरे ॥ पु० ॥ २१ ॥ सूरियाभ सुण हर्ष्यो घणो रे । बेठो सिंहासण आय । बीजाई देवी देवता । अतो बेठा ठिकाणे आय रे ॥ पु० ॥ २२ ॥ बाजंत्र शब्द हुंता थकां रे । आगल पांछे थाट रे । पसवाड़े देवी देवतारे । एतो वह घणा गह घाट रे ॥ पु० ॥ २३ ॥ असंख्याता तिरछा लोकना लंघ्या समुद्र मे द्वीप । नंदीश्वर द्वीप आवियो रे । रूचक पर्वत समीपरे ॥ पु० ॥ २४ ॥ देवनी ऋद्ध संकोचतो रे । जम्बू द्वीप आयो धीर । अम्बसाल्यारे वागमें रे । जठे विचरे श्रीमहावीर रे ॥ पु० ॥ २५ ॥ सूरियाभ ऋद्ध सुं परिवर्योरे । आय महैं नी तीर । भाव भगत कीधो घणी । पछे वान्द्या महावीर रे ॥ पु० ॥ २६ ॥

॥ दोहा ॥

वन्दणा करने इम कहे, हूं छूं सूरियाभ देव ।
वान्दु छूं हूं पूज्य ने, भाव सहित कर सेव ॥१॥
बलता वीर इसड़ी कहे, ओकारज सुखकार ।
च्यारू जातना देव नो, ज नो छे आचार ॥ २ ॥
वचन सुणो श्रीवीरनो, सूरियाभ हर्षित थाय ।
वन्दना करी नीचासणे, सन्मुख बेठो आय ॥३॥
भगवन्त दीधी देशना, आण मोटो मंडाण ।
काचा सुख संसार ना, साचा सुख निर्वाण ॥४॥
वाणी सुण नें परषधा, हिवड़े हर्षित थाय ।
सूरियाभ देव पूछा करे, ते सुण ज्यो चित लाय ॥५॥

॥ ढाल ८ थी ॥

सूरियाभ नें बोले बे कर जोड़ी । विनो करी नें मदन मचकोड़ी । कृपा करी कहो अन्तरजामी । हूं भवसिद्ध के अभवो स्वामी ॥ १ ॥ समकित के वा मिथ्या मत भारी । प्रत के वा अप्रत संसारी । सुलभ दुलभ बोधी ज्ञानी । आराधक विराधक अज्ञानी ॥२॥ चर्म केवा अचर्म स्वामी प्रभुजी । बारे बोलांरी चरचा बूजी । बलता वीर कहे इम जावे । सांभल वाणी तूं सूरियाभ ध्यावे ॥ ३ ॥ बारे ही बोल है तेरे मांहो ।

वला छे पिण अवला नांहीं ॥ वीर वखाणज डुसड़ो
ांच्यो । हर्ष्यों देव तथा थई नाचयो ॥ ४ ॥ लुल लुल
सूरियाभ पाये लागो । भगवंत कन्हे आयो सांसो
आगो । बन्दणा करी ने बोले वाणा । प्रभुजी तीन काल
रा जाण ॥ ५ ॥ हुवो हुवेलो होसी स्वामी । आप से
वात नहीं काई छानी । द्रवादिक जाणो ने देखो ।
सैं ऋद्ध लागी पासे विशेषो ॥ ६ ॥ गोतमादिक श्रम-
णा ने दिखाडूं । बतीस विध रो नाटक पाडूं । वीर
सुणी सूरियाभ नी वाणा । नो अखे नो पर जाण ॥७॥
हां कह्यां तो सावद्य लागे । ना कह्यां भोगी रा भोगज
भागे । मुनीश्वर नो छे एही वाणी । देव तणो ए छान्दो
जाणी ॥ ८ ॥ साध वचन सावद्य नहीं भाखे । पाप
ठिकाणे चुपज राखे । साधांरी तो एहिज वाणी ।
जद सूरियाभ वात मन जाणी ॥ ९ ॥ सूरियाभ मन
में डुसड़ो धारी नाटक पाड्यो ऋद्ध विस्तारी । लुल
लुल सूरियाभ लागो पाई । आयो जिण दिश पाछो
जाई ॥ १० ॥

॥ दोहा ॥

देव तणी ऋद्ध देख नें, पूछे गोतम स्वाम ।
इतनी ऋद्ध विस्तार नें, घाली कुण से ठाम ॥ १
माला सुंनर नीसरी, वारे करे फलाव ।

सेह जाणी पाका धसे, स्तव्ध पेठी तिण न्याव ॥२॥
इहां सूरियाभ देव नो, किहां सूरियाभ विमाण ।
वीर कहै उर्द्ध लोकमें, सर्व रत्न में जाण ॥३॥
सुधर्म देव लोकना, बतीस लाख विमाण ।
मध्य भाग शक्र इन्द्रना, पांच विमाण बखाण ॥४॥
विचला सुधर्म विमाण सुं, पूरब दिश मे जाण ।
संख्याता जोजन गयां, त्यां सूरियाभ विमाण ॥५॥
लाख सवा छ, जोजन पोहलो जाण ।
गोल चन्द्रमा सारीषो, सोवन कोट बखाण ॥६॥
ऊंचो जोजन तीनसे, धुरसो जोजन जाण ।
पचास जोजन मध्य विच, ऊपर पचीस बखाण ॥७॥

॥ ढाल ५ मी ॥

देशी चौपाई नी ।

कोसीसा मणिय रत्न तणा । पंच वर्ण शोभे अति घणा । लाम्बा एक जोजन तणा । अर्द्ध जोजन त्यांरा पोहल पणा ॥१॥ ऊंचा देश उणा जोजन कह्या । प्रतर रूप मान ए शोभ रह्या ॥ १ ॥ दरवाजा च्यार च्यार हजारी । त्यांरा थोड़ा सा कहुं विस्तारी ॥ २ ॥ पांच सो जोजन छे ऊंच पणो । अढाई सो जोजन पहोल पणो । अढाई से जोजन प्रवेश पणा । रूपादिक रूप चित्राम घणा ॥ ३ ॥ सहंस सूरज उद्योत घणो ।

सूरियाभ बिमाण री पोल तणो । लग रह्या हार अर्द्ध हारी । देखण नैणा नें सुख कारी ॥ ४ ॥ भोम तणे सोवन पसरयो । पंच वर्णों मणियां मांहि जड्यो । देह-ली हंस गर्भ रतन तणी । इन्द्रादिक गो मेज मांहि भणी ॥ ५ ॥ द्वार ऊपर तोरण ऊतरंगा । जोतक रता में शोभे चंगा । पुतलियां जोहिताक तणी । रूप रूड़ो दृह दीपमान घणी ॥ ६ ॥ वेडूर्य रतन किंवाड़ जड़्या रूड़ा । तिके छिद्र रहित दृढ़ पूरा । बजर रतन नांम सांध जड़ी तासा । बर में भोगल भोगल पासा ॥ ७ ॥ द्वार पासा दोनूं अंक रतन तणा । अनेक रत में घोष घणा । पोल में बेलू सोवन तणी । इसड़ी ऋद्ध रो सूरियाभ धणी ॥ ८ ॥ द्वारा पासा दोनूं प्रवेश धर्या । सोला सोला कलशा चंदन भर्या । नाग दंता-दिक घंटा तेह तणो । तिण रो पिण छे विस्तार घणो ॥ ६ ॥ बिमाण में एक लग कहे पूरा । पांचसे जोजन छे दूरा । च्यार वाग चिहुं दिश नें रूड़ा । साढी बारा जोजन तणा । कहे अधिकेरो लांब पणो ॥ १० ॥ पांच से जोजन उंचेरा कह्या । दोला दोला गढ विंटी रह्या । शब्द उठे त्यां तिणारे तणो । त्यां बागांरो विस्तार घणो ॥ ११ ॥ बिमाण में एकलण कह्यो । लाख जोजन चोतराजे रह्यो । तिण ऊपर महिल सूरियाभ

तणा । शिखर बंध शोभे अतिघणा ॥ १२ ॥ मध्य भाग एक प्रसाद भणो । पांच से जोजन रो ऊंच पणो । तिण पाखती च्यार प्रसाद कह्या । अढाइ से जोजन उर्द्ध रह्या ॥ १३ ॥ तिण चिहुं दिश सोले प्रसाद तणो । सवा से जोजन ऊंच पणो । वले चोसठ प्रसाद कह्या तेह । साढा बासठ जोजन ऊंचा जेह ॥ १४ ॥ सर्व पच्यासी तणो । ऊंचा सुं आधो पहुल पणो । भोम ऊपर पंकट भोम कही । सूरियाभ बिमाण में शोभ रही ॥ १५ ॥

॥ दोहा ॥

कुण हुंतो पूरब भव, बसतो कुणसे गाम ।
कुण करणी इण करी, कृपा करी कहो स्वाम ॥१॥
वीर जिणेश्वर इम कहै, सुण गोतम करी खंत ।
कहो दिखालुं तो भणी, पूरब भव विरतंत ॥२॥

॥ ढाल ६ ठी ॥

तिण काले ने तिण समेंरे । जंबूद्वीप मझार ॥ भरत खेत्तर स्वेतंबिकारे । नगरी हुंती ऋद्ध दार रे ॥ गोतम सुण पूरव भव एह ॥ १ ॥ मृघवन नांवे बाग थोरे । ईशाण कूणरे मांय । फल फूल कर शोभतोरे

शीतल गहरी छांयरे ॥ गो० ॥ २ ॥ तिण नगरी रो छो धणीरे । राय प्रदेशी नाम । अधरमी अधिको धणोरे । रिझतो माठा कामरे । ॥ गो० ॥ ३ ॥ आकरा कर लेतो घणारे । करतो जीवांरी घात ॥ पर सुखिये दुःखियो हुंतोरे । रहता लोही खरड़्या हाथरे ॥ गो० ॥ ४ ॥ धजा ज्यूं चाहवो हुंतोरे । अधरमी अवनीत । पापे धन भेलो करै रे । दुष्ट नी खोटो नीत रे ॥ गो० ॥ ५ ॥ वाणी खोटी बोलतोरे । थोड़े गुने घणी मार ॥ काण न राखै केहनी रे । रुद्र ध्यान भयंकार रे ॥ गो० ॥ ६ ॥ हाथ पाव छेदन करै रे । कान आंख जीभ दांत ॥ मार कूट दे बहु विधेरे । पड़े देशां में धाकरे ॥ गो० ॥ ७ ॥ धड़-हड़ कांप्ये नेड़ा-थका रे । अलगा पाप वचन ॥ औरां री-तो कुण चलै रे । न मानै मा-इतां-रा-वैण रे ॥ गो० ॥ ८ ॥ पटराणी तिण राय नी रे । सूरिकन्ता नाम ॥ राजा सुं राजी घणी रे । रूप-वंत अभिराम रे ॥ गो० ॥ ९ ॥ तिण राणी रे । जन-मियो रे । सुरिकन्त कुमार ॥ युवराज पदवी दीपतोरे । रूप गुणे सुविचार रे ॥ गो० ॥ १० ॥ वडो भाई चित सारथी रे । प्रीतकारी प्रधान ॥ भार सुंप्यो छे राज नो रे । राय वधारे मान रे ॥ गो० ॥ ११ ॥ काम चलावे राज नो रे । च्यारूं बुद्धि निधान ॥ डंड ले

पिण संतोष नें रे । राज नीत सावधान रे ॥ गो० ॥ १२ ॥ पूछवा रूप मेढी सुत छै रे । चच्छु भुत आधार । सगलाही दीधी आगन्यां रे । करै राज सुविचार रे । गो० ॥ १३ ॥ तिणकाले नें तिण समे रे । देश कुणाल ऋद्धवंत । नगरी सारथी ओटकी रे । कोटग बाग सोहंत रे ॥ गो ॥ १४ ॥ तिण नगरी रो अधिपति रे । जित शत्रु सिरदार । प्रदेशी के छै घणो रे मांहीं मांही प्यार रे ॥ गो० ॥ १५ ॥ राय प्रदेशी एकदा रे । भारी भेटणो सभाय । चित स्वारथी नें मेलियो रे । दियो जित शत्रु नें जाय रे ॥ गो० ॥ १६ ॥ राज पंथ आवास में रे । चित नें उतार्‌यो जाय । भारी लीला भोगवेरे नाटक में दिन जाय रे ॥ गो० ॥ १७ ॥

॥ दोहा ॥

देश कुणालो दीपतो, साध घणा तिण मांय ।
आरज क्षेत्र अति भलो, साधां री घणी चाहय॥१॥
ज्यां ज्यां विचरे साधुजी, करै घणो उद्योत ।
धर्म दीपावे जिन तणो, टाले मिथ्या छोत ॥२॥
तेईससा जिनवर तणा, साध घणा तिणवार ।
च्यार ज्ञान तणा धणी, केशी नाम कुमार ॥३॥

॥ ढाल ७ मी ॥

तिण काले नें तिण समेरे । पास संतानिक साध केसी कुमर समगुण शोभताजी । संजम तप री समाध । भलाई पधार्याहो पास सन्तानियांजी ॥ भव जीवांरे भाग । मर्ग बतावे हो मुनिवर मोखरो रे । उपजावे वैराग ॥ भला० ॥ २ ॥ विनयवन्त गुरु ना छे घणाजी लज्या नें दयावन्त ॥ ज्ञान दर्शण च्यार निरमलाजी । जशवन्त वचन महंत ॥ भ० ॥ ३ ॥ जील्या कषाय इन्द्री निन्द्राजी । जीता परिसाह जाण । जामण मरण तणो भय मेटणे जी । तप करी नें प्रधान ॥ भ० ॥ ४ ॥ गुण घणा त्यां में छे सही जी । कहिये आगम जोय । मोटा मुनीश्वर दो पख निरमलाजी । बलवन्त रूपवन्त होय ॥ भ० ॥ ५ ॥ क्षमावन्त मुनि सत्यवंत छे जी । चवदे पूरब धार ॥ त्यागी वैरागी सागे तेहनेजी । पांच से ही अणगार ॥ भ० ॥ ६ ॥ आय उतरिया कोटग बागमे जी । टाली मिथ्या जोड़ । सावथी नगरी ना लोकां मझे जी । खबर हुई ठोड़ ठोड़ ॥ भ० ॥ ७ ॥ लोक बान्दण नें जावे छे घणा जी । मन धर अधिक उल्लास ॥ चितजी सेवग तेड़ो आपरो जी । पूछा कीधी तास ॥ भ० ॥ ८ ॥ लोक जावे छे मोटा

कुल तणा जी । किणरी महोछब काज ॥ सेवक हाथ जोड़ी नें इम कहै रे । साध पधास्या आज ॥ भ० ॥ ९ ॥ वचन सुणी नें चित हर्षित हुवोजी । गुड़वेल बेठ बांदण जाय ॥ बन्दणा कर बाणी सांभली जी देशना दिधी मुनिराय ॥ भ०॥ १० ॥ लोकालोक नव तत्व तणाजी आख्या भिन्न २ भेद । काचा सुख संसार नां रे । मतकरो कूड़ी खेद ॥ भ० ॥ ११ ॥ काम भोग दोनूं कर्म छै रे । बिलसंतां विगड़न्त । सुख थोड़ा ने दुःख छै अति घणा जी । रीझ कूड़ कर खन्त ॥ भ० ॥ १२ ॥ दोय धर्म उज्जल दिखाड़िया जी । आगार नें अणगार । पांच महाब्रत चोखा साधना जी । श्रावक ना ब्रत बार ॥ भ० ॥ १३ ॥

॥ दोहा ॥

चित सुण नें रिझ्यो घणो, सरध्या तुमना वेण ।
थे तारक भव जीवना, मिलिया साचा सेण ॥१॥
सेठ सन्यापति राजवी, धन्य ते हुवे अणगार ।
इसी सगत म्हो में नहीं द्यो श्रावक ना व्रत बार ॥२॥
श्रावक ना ब्रत आदस्या, भाव सहित कर सेव ।
डिगायो डिगे नहीं, जो चलावे नर देव ॥३॥
पोसा पडिक्कमणा करे, देय सुपाले दान ।
स्वेतस्वीकारी विनती, करिवा सूं छै ध्यान ॥४॥

॥ ढाल ८ मी ॥

चीतलेइ राजा नो भेटणो । आयो गुरां रे पास हो महामुनि । सेतम्बीका नें हो पूज्य जी जांवतां । बन्दणा करु उलास हो महामुनि । पूज्य जी पधारो हो नगरी हम तणी ॥ १ ॥ होसी घणो उपकार हो महा० घणा लोकां नें हो मारग घालस्यो । थे देस्यो पार उतार हो महा० ॥ पू० ॥ २ ॥ सेविया-नगरी हो स्वामीजी दीपती । छे वा देखवा जोग हो महा० ॥ तिण में तो आयां नफो वहु निपजे । सुखिया वसे सहु लोग हो महा० ॥ पू० ॥ ३ ॥ प्रदेशो नें सेल्यो भेटणो । ले चालूं हूं स्वाम हो महा० ॥ एकवार दोय-वार कीनी विनती । गुरु नहीं बोल्या ताम हो महा० ॥ पू० ॥ ४ ॥ तीजी वार करतां विनती । गुरु बोल्या हेत लगाय हो चतुर नर फलियो फूलियोहो चिता वाग छे । पशु जावे के न जाय हो । चतुर नर । उत्तर दे मोने इण वातरो ॥ ५ ॥ हां स्वामी चित कहे जावे सही । वले गुरु बोल्या आम हो चतुरनर । तिणही वाग में कोई पारधी वसे । तो जायके न जाय हो ॥ ॥ चतु० ॥ उ० ॥ ६ ॥ हां स्वामी चित कहे जावे नहीं । भय उपजे तिण मांयहो ॥ महा० । गुरु कहे वाग ज्यं

नगरी सेविया। पारधी प्रदेशी राय हो ॥ च० ॥ ७ ॥ अकार अन्याई पापो अति घणो। तिण वागमें केम रहवाय हो। चतु० मुलक घणोई म्हांनें विचरवा। सुखि सुखि विहार कराय हो ॥ च० ॥ उ० ॥ ८ ॥ थांरे सुं प्रयोजन राय सुं। वचन वदे चित एम हो महा०। लोग वसे सहु सेठ सैन्यापति। सेवा करसी धर प्रेम हो महा० ॥ पू० ॥ ९ ॥ भाव सहित वहिरा-वसो। अशणादिक च्यारुं आहार हो महा०। वस्त्र पात्र देशी अति घणा। करसी वन्दणा नें नमस्कार हो म०। पू० ॥ १० ॥ बार बार कीनी बिनती। चित डाहो सुवनीत हो म०। चलता मुनि कहै जाणोजसी ज्युं साधांरी रीत हो चतु०। उ० ॥ ११ ॥ सांभल वाणी चित हर्ष्यो घणो। रोमांचित हुइ सारी देह हो म०। रीझ्यो ते नो विशेष वखाणिये। धर्म दलाली सुं नेह हो महा० ॥ पू० ॥ १२ ॥

॥ दोहा ॥

वन्दणा कीधी भाव सुं, गुरां सुं बहु राग।
लेइ भेटणो चालियो, आयो मृगवन बाग ॥१॥
वन पालक नें इम कहै, जो आवे इहां साध।
थानक देजे आगन्यां, उपजाजे समाध ॥२॥

केसी साध पधारियां, तुरत कहे मुझ आय ।
हर्ष वधाइ दियां थकां, देसु दालिद्र गमाय ॥३॥
इम जीतावण दे करी, आयो चितो राय ।
सिरपाव लेइ गयो, धर्म करे चित लाय ॥४॥
पर उपगारी जाण नें, आवा तिहां चलाय ।
पांच सो मुनि परिवार सुं, निरलोभी ऋषराय ॥५॥
बागवान पूछी करी, थानक आगन्या दीध ।
आई चितजी नें कह्यो, जाणे अमृत पीध ॥६॥
सुण आसण सुं उतरयो, बन्दणा बे कर जोड़ ।
रथ बेसी आयो बागमें, नमः घणो घर कोड ॥७॥
बन्दणा कर बाणी सुणी, आगल बेठो आय ।
सतगुरु दीधी देशना, परषधा सुणे चितलाय ॥८॥
परषधा सुण हरषत हुई, जिण मारग छे धन ।
धरम दलाली चित करे, ते सुणज्यो एक मन ॥९॥

॥ ढाल ६ मी ॥

हाथ जोड़ी करूं विनती, सांभलज्यो मुनिराय हो । स्वामी । ओ राय प्रदेशी पापियो । आणे मारग ठाय हो । स्वामी । म्हांरा राजा नें धर्म सुणावज्यो ॥ १ ॥ आकरा डंड लेवे घणा । ओ करे घणा अकाज हो स्वा० । ओ काण न राखे केहनी । न आणे किण

री लाज हो स्वा० ॥ २ ॥ धर्म कथा कहो जुगत सु । समझे प्रदेशी राय हो स्वा० । आकरा डण्ड लेवे नहीं पाप कर्म टल जाय हो स्वामी ॥ म्हारा० ॥ ३ ॥ दो पद चौपद पशु पंखिया । दया उपजे दिल माहे हो स्वामी । जीव हिंसा सु निवृते। तो संवर निर्जरा थाय हो स्वा० ॥ ४ ॥ परदेशी समझ्यां थकां । समझे घणा नर नार हो स्वा० ॥ आ हुवे बधोतर जिन धर्म नो । इण परदेश मझार हो स्वा० ॥ म्हां ॥ ५ ॥ बार बार करूं बिनती, थे उपगारी परम हो स्वा० । गुरु कहे च्यार बोल बिनां । न लहे केवलियो धर्म हो चिता हूं धर्म सुणावु किण बिधे ॥ ६ ॥ धर्म तणो द्वेषी घणो । किम करू अणुगय हो चिता ॥ च्यार बोल प्रगट कहुं । सांभल ज्यांरो नाम हो चिता हूं धर्म० ॥ ७ ॥ बाग में आयां साधु कने, म्हामो न जाय चलाय हो चिता० ओबन्दणा भाव करे नहीं । चरचा न करे काय हो० चिता ॥ हूं० ॥ ८ ॥ गांव माहिं आयां थकां । बन्दणा न करे काय हो चिता । घर आवी पिण साध नें । दान दियो नहीं जाय हो चिता ॥ हूं० ॥ ९ ॥ ऊंच नीच जाणे नहीं । हाथ न ऊंचो थाय हो चिता । ओ सहांमो पिण जोवे नहीं । मुखड़ो देवे ओ ढांक हो चिता ॥ हूं० ॥ १० ॥ च्यार बोल

पांमें धर्म विशेष हो चित। ...
...समला हुवां। पांमें धर्म विशेष हो चिता ॥ हू० ॥ ११ ॥
...ही मांहिलो। बोल न पावे एक हो चिता ॥ हू० ॥ ११ ॥
घोड़ा देश कमोद ना। मैं राख्या छै ताय हो स्वामी।
किण हिक बिरियां राय नें दीधो सरब जीताय ।
स्वामी० ॥ १२ ॥ इण मिस कर थां कने आणसुं।
राय समझण नीत हो स्वामी। थे धर्म कथा निशंक
सुं कहज्यो आप निचिंत हो ॥ स्वा० ॥ १३ ॥

॥ दोहा ॥

सतगुरु कहै जाणीजमी, काले अवसर देख।
इम सांभल चित सारथी, हर्षित हुवो विशेष ॥१॥
उठी नें बन्दणा करी, आयो नगरी मांय।
किण विध ल्यावे राय नें, सांभल ज्यो चित लाय ॥२॥

॥ ढाल १० मी ॥

आय राजा नें इम कहै। सांभल ज्यो महाराय
जी। ॥ घोड़ा देश कमोदना। मैं ताजा किया चरा-
यजी ॥ धर्म दलाली चित करे ॥ १ ॥ किण विध
ल्यावे राय नें। सांभल ज्यो नर नारीजो ॥ चि...
सरीषा उपगारिया। बिरला इण संसारीजो ॥ ध०...
...॥ आप मोमें सूंप्या हूंता। ते देख लीज्यो चौड़े नें...

अवसर वरते एहवो। घोड़ा किसड़ाक दोड़े जी ॥ध०
॥ ३ ॥ राय प्रदेशी चिन्तवे। मान्यो बचन अनुमोजी ॥
राजा नें बहुली हुवे। घोड़ा हाथी नो चूंमोजी ॥ ध०
॥ ४ ॥ रथ रे घोड़ा जोतरा। चढियो प्रदेशी रायो
जी ॥ चित बेठो खड़वा भणी। घणा जोजन ले जायो
जी ॥ ध० ॥ ५ ॥ आहमा स्हामा दोड़िया। हुई
छायां तणी उमेदोजी ॥ राय प्रदेशी इम कहै। चिता
पामुं छुं खेदो जी ॥ ध० ॥ ६ ॥ प्रदेशी कह्यां थकां।
चित अवसर रो जाणोजी ॥ गैरी छायां बागरी। रथ
उभो राख्यो आणोजी ॥ ध० ॥ ७ ॥ धर्म कथा केसी
कहै। मोटे मोटे सादोजी॥ राय प्रदेशी देख नें।
मन मान्यो बिषवादोजी ॥ ध० ॥ ८ ॥ कुण बक्र जड
मुढ ए। जड मुढ करै सेवाजी ॥ पंडित नहीं अजा-
ण छै काढण लागो केवाजी ॥ ध० ॥ ९ ॥ धर्म करी
दीपै घणो। मुख आगे छै थाटोजी ॥ सु एहने रोज-
गार छै। मोडो ऊंचो बैठो पाटोजी ॥ ध० ॥ १० ॥
अणाख करी राजा घणी। धर्म तणो नहीं रागोजी।
इण मोडे म्हारो आय नें। रोक्यो सगलो बागोजी
॥ ध० ॥ ११ ॥ हूं उठ बैठ सकुं नहीं। मन में इसड़ी
आइजी ॥ जितनी हिरदा में ऊपनी। चित नें सर्व
सुणाईजी ॥ ध० ॥ १२ ॥ चिता कुण जड मूढ ए।

बाग सह म्हांरो रुधोजी इत्यादिक श्रवणे सुणो। चित उत्तर दे सुधोजी ॥ ध० ॥ १३ ॥ स्वामी ए नर मोटका। केसी नाम कुमारो जी ॥ विचरता आया बाग में। पांच सौ मुनि परवारो जी ॥ ध० ॥ १४ ॥ साध तथा व्रत आदस्यां। मूकी ममता नें मायाजो। श्रद्धा यांरी एहवो। जूदा मानें जोव कायाजो ॥ ध० ॥ १५ ॥ जीव काया जूदा जाण नें। तब बोल्या इम रायोजो। चिता ए नर जोग छे। तो हूं आवुं रे चलायो जो ॥ ध० ॥ १६ ॥ स्वामी ए नर जोग छे। बचन कान मे घालेजो। राय प्रदेशी चित बेहुं। केशी स्वाम पे चालेजी ॥ ध० ॥ १७ ॥ राजो आय उभो रह्यो। ऊंचो न करे हाथोजो ॥ आवो पधारो म्हांनें ना दियो। प्रश्न पूछे नर नाथोजो ॥ ध० ॥ १८ ॥ अहो साधां थांरी अवधिका। जूदा मानो जीव कायोजो। बलता मुनि इसड़ो कहे। डाबरो हेत लगायोजो ॥ ध० ॥ १९ ॥ भारी बस्त मुलाय नें भस्यो न चाहवे डाणोजो ॥ सवलो पन्थ सूझे नहीं। उजड़ पड़े अयाणोजो ॥ ध० ॥ २० ॥ इण दृष्टांते राय नें। भांज्यो म्हांरो डाणोजो ॥ वन्दणा भाव करी नहीं। तूं उभो ठोडो सो आणोजो ॥ ध० ॥ २१ ॥ म्हांने बाग में देख नें। थारे मन मे इसड़ी आइजो ॥

कुण वक्र जड मुढ ए। ते चित नें सर्व सुणाईजी ॥ ध० ॥ २२ ॥ तुमनें चित चरचा करी। चाली इहां आयाजी। ए अर्थ समर्थ छे। हां स्वामी सत्यवाया-जी ॥ ध० ॥ २३ ॥ काची बात थारी नहीं। पहिले प्रश्न राय राच्योजी। अचरज पाम्यो अतिघणो। ओ मारग सही सांचोजी ॥ ध० ॥ २४ ॥ प्रदेशी राजा कहे। किस्योज्ञान थां पासीजी। मनरी बात म्हांरी कही। ओ उत्तर प्रकाशेजी ॥ ध० ॥ २५ ॥ गुरु कहे पांच ज्ञाना तणा। जूदो जूदो छे न्यावोजी। च्यार ज्ञान छे म्हां कने। तिण सुं जाण्यो थांरो भावोजी ॥ ध० ॥ २६ ॥ राय कहे केशी स्वामनें। तुमे कहो तो बेसुंजी। गुरु कहे जायगां तांहरी। हूं बेसण रो किम कहिस्युंजी ॥ ध० ॥ २७ ॥ आपें बेठ बेहूं जणा। प्रश्न पूछे धर प्रेमोजी। थारी २ श्रद्धा सर्व साधां तणी। श्रद्धा छे कहो केमोजी ॥ ध० ॥ २८ ॥ जीव काया मानो जूदा। एम तुम नहीं मानोजी ॥ केशी कहे सर्व साधां तणी। श्रद्धा एक पिछाणोजी ॥ ध० ॥ २९ ॥ आ श्रद्धा स्वामी थांहरी। जीव काया कहो जूदोजी ॥ प्रश्न पूछे साधां भणी। इण स्वेतंबका रो सूदोजी ॥ ध० ॥ ३० ॥

॥ दोहा ॥

पूछै इग्यारा प्रश्न, गुरु प्रते राजान ।
गुरु उत्तर दे किण विध भला, गुण सागर बुद्धवान ।१।
पूछै प्रश्न पहलड़ो, राय प्रदेशी एम ।
गुरु समझावे किण विधे, ते सुणज्यो धर प्रेम ।२।

॥ ढाल ११ मी ॥

अधरमो अवनीत, चालतो म्हांरी रीत । दादो हम तणो ए । पापी हुंतो घणो ए ॥ १ ॥ तुम कह्यो मुनिराय, गयो होसी नरकां मांय । हेत दादा तणो ए । मो पर हुंतो घणो ए ॥ २ ॥ आय दादो कहै आप, पोता मत कर पाप । हूं नरकां पड़यो ए । पाप घणो कस्यो ए ॥ ३ ॥ इम दादो कहै आय, तो मानु मुनि-राय । नहो तर मांहरो ए । मत झाल्यो सो खरो ए ॥ ४ ॥ गुरु कहै चोज लगाय, सांभल प्रदेशी राय । राणी तांहरी ए । सूरिकन्ता खरी ए ॥ ५ ॥ पहिर ओढ जल न्हाय, सहु शिणगार बणाय । सोहन गहणा तणो ए जलूसाइ घणो ए ॥ ६ ॥ कोई पुरुष अनेरो आय, काम भोग लिपटाय । निजर थारे पड़े ए । तो डंड कुण सो करे ए ॥ ७ ॥ छेदुं हाथ ने पाव । शूली

देवुं चढाय। शिर काट धरुं ए। पूरजो पूरजो करु ए। ॥ ८ ॥ ओ नर कूरे अरदास, मो जाउं न्यातिला पास। जाय नें कहुं खरो ए मो ज्यूं मती करो ए ॥ ६ ॥ हूं दुःख पाउं छुं आप, पर लिया ने पाप। तो तू जाणदे ए विश्रामो खाण दे ए ॥ १० ॥ स्वामी थारा कहण री बात, मो अपराधी साख्यात। खिणमात्र सही ए। ढीलो मूकूं नहीं ए ॥ ११ ॥ इतरे गुन्हे राय, अलगो मेल्यो न जाय। खिण एक जाण न दे ए। विश्रामो खाण न दे ए ॥ १२ ॥ थांरे दादे कीलव्या कूर, संच्या पापरा पूर। जाय नरकां पड़्यो ए जंजीरां जड़्यो ए ॥ १३ ॥ पल्य सागर री मार। बिण भुगत्यां निरधार। छुट को नहीं ए। इम जाणो सही ए ॥ १४ ॥ करे परमा धामी घात। ज्यांरी पन रे जात। मार घणी पड़े ए। ढील नहीं करे ए ॥ १५ ॥ जाणे कहुं जाय, पिण दादो न सकि आय। रुखवाला घणा ए। दुःख नरकां तणा ए ॥ १६ ॥ इण विध दश दृष्टन्त राय। तूं सरध जूदा जीव काय॥ फेर जाणो मती ए। झठन बोलांरती ए ॥ १७ ॥ आ दिष्टान्तो दियो मुनिराय। पिण म्हांरो न आयो दाय ॥ बुद्ध थांरी घणी ए। जुगत मेलण तणी ए ॥ १८ ॥ पिण दादी म्हांरी स्वाम। करती धरम रो काम ॥ तप क्रिया घणी ए। नवतत्व विध तणी ए

॥ १९ ॥ हूं दादो ने अंत, हुन्तो दुष्ट नें कंत। आपण
गोडतो ए। अलगो नहीं छोडतो ए ॥ २० ॥ संच्या
पून्य ना थाट। नहीं कोई दुःख उचाट। तुम कहणी
सही ए। वा देवलोकि गई ए ॥ २१ ॥ देवलोक थी
आय। दादी कहे मोय वाय ॥ पोता धर्म करो ए।
ओ मारग खरो ए ॥ २२ ॥ दूसी कहे जो मोय।
शंका न करूं कोय ॥ नहीं तर मांहरो ए। मत
भाल्यो सो खरो ए ॥ २३ ॥ गुरु कहे सांभल राय।
कोई देव पूजण नें जाय। स्नान मंजण करी ए। धूप
धारणो धरी ए ॥ २४ ॥ सेथखाना नें मांय। कोई
भङ्गी कहे इम वाय ॥ आवो पधारो ए। मोसुं बातां
करो ए ॥ २५ ॥ तो जाय कि नहीं जाय। उत्तर दे
मुझ राय। किम जाय अशुच भणी ए। अछवाई
घणी ए ॥ २६ ॥ गुरु कहे सांभल एम। दादो आवे
किम। दुर्गंध इहां तणी ए। उंची जाय घणी ॥२७॥
पांच सें जोजन लग जाय। देव न सकि आय। नेह
लगे तवे ए। सुखां मगन हुवे ए ॥ २८ ॥ मुहूर्त
नाटक सार। वर्ष जाय दोय हजार। पूछे किण भणी
ए। पीछ्यां खपे घणी ए ॥ २९ ॥ पल्य सागर नी स्थित
सेलि देव्यां सुं चित्त। मोह रह्या सही ए॥ आय सकै
नही ए ॥ ३० ॥ इम जाणी राजान। जूदा जीव काय

मान । राजा कहै वलि ए । बुद्ध थांरी निरमली ए ॥ ३१ ॥ ज्ञानी पुरुष छो आप । ज्ञान तणे प्रताप ॥ हेत भेलो सही ए । मोय हिरदे बेसे नहीं ए ॥ ३२ ॥

॥ दोहा ॥

बीजो प्रश्न गुरु प्रते, वलि पूछे राजान ।
एक दिवस सभा मझे, हूं बैठो करी मंडाण ॥१॥
सेठ सेन्यापति मंतवी, देखतां सहु कोय ।
कोटवाल इक चोरटो, आणी सुंप्यो मोय ॥२॥
पारख्या करवा भणी, घाल्यो कोठी मांय ।
ऊपर ढांक्यो ढांकणो, छेक न राख्यो कांय ॥३॥
लोह कोठी लोह ढांकणो, सीसा सुं रे जड़ाय ।
रख वाला राख्या वलि, ओछ न राखी काय ॥४॥
उण कोठी रो ढांकणो, किणही उतार्यो नांय ।
चोर मूओ तिण कोठिये, छीक न पड़ी काय ॥५॥
जीव बाहर थी निसरे, कोठी पड़ तो छेक ।
जीव कायरा मानत जूदा, अद्भुत बात विशेष ॥६॥
छिद्र न पड़ियो कोठिये, किम मानुं हूं बात ।
जीव काया एकहीज छे, कूड़ नहीं तिल मात ॥७॥

॥ ढाल १२ मी ॥

परदेशी राजा सुणो ॥ कांइ कूराड आकारे
लोरे । नींपी मांहिं बारथी । ऊंडी घणो विशालो रे ॥
परदेशी राजा सुणो ॥ १ ॥ बायस पैसि न तेह मे ।
आडा बजर किंवाड़ो रे । कोइ भेरी ढोल डांको करे ।
पड़े शाला मझारो रे ॥ २ ॥ मांहि बजर किवाड़ छे ।
बले छिद्र न राख्यो रे । भेरी ढोल बजावियो । बा
सुणे नें सुणायो रे ॥ प० ॥ ३ ॥ राय कहे शब्द सु
सही । तब बोल्या गुरु ए मोरे । शाला रे छिद्र प
नहीं । शब्द निसरियो किमोरे ॥ प० ॥ ४ ॥ रूपी शब्द
शाला सूं निसर्यो । न पड़्यो छिद्र न बारो रे । ते
जीव अरूपी निसर्यां । कोठी किम पडे बघारो रे ॥
प० ॥ ५ ॥ शब्द शाला सुं निसर्यां । छिद्र न पड़िय
रायो रे । इण दृष्टान्ते श्रद्ध ले जूदा जीव नें कायो रे
॥ प० ॥ ६ ॥ हेत जुगत नें ओपमा । बुद्ध सुं मेलो
न्यायो रे । म्हांरे तो दिल बेसे नहीं । किम सरधं
तुम वायो रे ॥ प० ॥ ७ ॥ चोथो प्रश्न पूछूं वलि ।
म्हांरे शंका पडी मन जाणो रे । एक दिवस सभा
मझे । हूं बैठो करी मंडाणो रे ॥ प० ॥ ८ ॥ को
वाल एक चोर टो चोरी करतो झाल्यो रे । मे

आणी सूंपियो । मै मार कोठी में घाल्यो रे ॥ प० ॥ ९ ॥ ऊपर दिनो ढांकणो । छिद्र छेका न राखी कायो रे। काल किता एक पछे जोड्यो । किड़ा दिठा तिण मांह्यो रे ॥ प० ॥ १० ॥ मैं तो जतन किया अति घणा। रखवाला छा बेठा रे । छिद्र को पड़ियो नहीं । जीव कठिकर पेठा रे ॥ प० ॥ ११ ॥ जीव कोठी में पेसतां । कोठो न पड़्यो बारो रे । तो म्हांरी श्रद्धा छे खरी । जीव काया नहीं न्यारो रे ॥ प० ॥ १२ ॥ गुरु कहे धमिया लोह नें दीठो छे तें रायो रे । राय कहे दीठो अछे । तो सुण तूं चित लगायो रे ॥ प० ॥ १३ ॥ अग्न सुं लोह धमतां थकां। लाल घणी जब उठी रे । अग्न लोह में धस गई। आ बात सांची की झूठी रे ॥ प० ॥ १४ ॥ राय कहे अग्न तो धस गई। निसरी आरथी पारो रे । गुरु कहे राजा कोइ लोहरे कोइ पड़ियो छिद्र बचारो रे ॥प० ॥१५॥ राय कहे छिद्र पड़्यो नहीं। तब गुरु बोल्या एमोरे । लोहारे छिद्र पड़्यो नहीं। तो अग्न पेठी राय की मोरे ॥ प० ॥ १६ ॥ अग्न लोहा में पेसतां । न पड़्यो छिद्र लवलेसो रे । तो कोठी छिद्र किण विध पड़े । जीव काया प्रवेशो रे ॥ प० ॥ १७ ॥ प्रगट रूप तेज काया रो । तूं जाणे लोह में पेठो रे ॥ कोठी में जीव

उपना । तिणरी क्युं नहीं बेठी रे ॥ प० ॥ १८ ॥ इण न्याय राजा तांह रे । रहगई ओलप मोटो रे । सरध जूदा जीव काय नें । तूं छोड दे सरधा खोटी रे ॥ प० ॥ १९ ॥ कारण हेत जुगत करी । न्याय मेलण बुद्ध सेंठी रे । पिण थांरी श्रद्धा थां कने । म्हांरे तो मूल न बैठी रे ॥ प० ॥ २० ॥

॥ दोहा ॥

प्रश्न पूछूं पांच सौं, जीव काया एक जाथ ।
साची श्रद्धा मांहरी, कूडी न करूं ताण ॥१॥
कोई चतुर है मानवी, कला शिल्प विज्ञान ।
समरथ सगला काम में, बलवंत तरुण जवान ॥२॥
तीर कबाण हाथे ग्रही, बल सुं गाढी खांच ।
अलगो न्हाखे जोर सुं, बाण चलावे पाय ॥३॥
तिमहिज बालक बुद्धि बिना, बल सुं बाण चलाय ।
तो सांची श्रद्धा तांहरी, जूदो जीव नें काय ॥४॥
थे जीव गिणो सब सारसा, नगिणो सहु सें देख ।
श्रब बालक सुं नवि चले, तो जीव काया छै एक ॥५॥

॥ ढाल १३ मी ॥

गुरु कहे तरुण पुरुष नें। तूं समरथ जाण राजा न हो परदेशी। ताण करे छे अति घणी। पिण सुण तूं सूरत दे कान हो प्रदेशी॥ तूं सरध जूदा जीव काय॥ १॥ धन खरची बंधो नहीं। सरक भाल पांषन थोय हो प्र०। बोहिज तरूण पुरुष छे। बाण चलाय के न चलाय हो॥ प्र०॥ २॥ राय कहे बाण चाले नहीं। उपगरण अंदूरा जाण हो मुनीश्वर। इण दृष्टान्ते जाण ले। बालक नहीं चलावे बाण हो प्र० ॥ ३॥ बालक री ओछी बुद्ध प्रगन्यां। बल प्राक्रम नहीं पूर हो प्र०॥ ४॥ तूं तरुणा री काव साज सूं। जोर न चाले कोय हो प्र०॥ तीर कबाण सैंठा घणा। पिण बालक बल नहीं कोय हो॥ प्र०॥ ५॥ तो दोनूं पूरा समरथ हुवा। बलवंत नें जुगल कबाण हो प्र० दोन्यां में एक पूरो नहीं। तो चाले नहीं बाण हो प्र० ॥ ६॥ इण न्याय तू सरध ले। जूदा जीव नें काय हो प० राय कहे दिल वैसे नहीं। थे तो मेलो अण हुंता न्याय हो मुनीश्वर॥ ७॥ छठो प्रश्न पूछे वलि। कोइ बलवन्त पुरुष प्रधान हो मुनीश्वर। लोह तांबादिक धात नो। भार उठावा छे सावधान हो मुनीश्वर

॥ थांरी श्रद्धा हो दिल बेसे नहीं ॥ ८ ॥ उतरोही भार
बुढो ग्रहे । दुरबल देह निरधार हो मुनी० जोजरे
शरीर लोलर पड़े । मांदो भूख तृषा अपार हो ॥ मु०
॥ ६ ॥ दांत पड़्या डिग डिग करे । लोहादिक भार
ले जाय हो मु० । तो साचो श्रद्धा तांहरो । तो जूदा
जीव नें काय हो मुनी० ॥ १० ॥ जो बुढा सु भार
चाले नहीं । तो किम मानु तुम बाय हो मु० साचो
मत छोडी मांहरो । कूड़ो मत किम झलाय हो मु०
॥ ११ ॥ गुरु कहे राजा तू सांभले कांई कावड़ छे
प्रधान हो प्र० बांस छावडो होय नवा । भार चाल्यो
छे उनमान हो प्र० ॥ १२ ॥ बलवन्त पुरुष प्रधान छे ।
कावड़ ले जाय कि न ले जाय हो प्र० । राय कहे
ले जाय उठाय नें । तरुणा रे नहीं तमाय हो मु० ॥
१३ ॥ बलवंत पुरुष जवान छे । कावड़ बोदी थाय हो
प्र० बोहिज तरुणो पुरुष छे । कावड़ ले जाय की न
ले जाय हो प्र० ॥ १४ ॥ राजा कहे भार चाले नहीं ।
कावड़ जूनी पड़ी एम हो मु० गुरु कहे इण न्याय
देख ले । बुढो भार खांचे किम हो प्र० ॥ १५ ॥ बल-
वंत सु भार खंचे नहीं । जूनी पडी कावड़ निरधार
हो प्र० ज्यूं बुढा सु भार चाले नहीं । तूं अन्तर
मांहि विचार हो प्र० ॥ १६ ॥ इण दृष्टान्त तूं देख ले

जोव काया नहीं एक हो प्र० सूंधो पंथ बताविये तूं छोड दे कुडी टेक हो प्र० ॥ १७ ॥ राय कहै बुद्ध थारी निरमली । थे तो मेल्या हेत अनेक हो मु० हूं सुण नें अचरज हुवो । म्हांरे तो हिय दे वेसे नहीं एक हो मु० ॥ १८ ॥

॥ दोहा ॥

प्रश्न पूछे सातमो, गुरु प्रते राजान ।
गुरु उत्तर दे किण विधे, सुण ज्यो सूरत दे कान ॥ १ ॥
एक दिवस सभा मझे, हूं बेठो करी मंडाण ।
कोटवाल इक चोरटो, मोनें सूंप्यो आण ॥ २ ॥

॥ ढाल १४ मी ॥

जीवता चोर नें तोलियोजी । करी मसोसी नें घात । पारख्या करवा जीवनोजी । में खेरुं कियो तोलमान ॥ मुनीश्वर किम सरधुं तुम बात ॥ १ ॥ मारी नें वले तोलियोजी । न घट्यो सूल लिगार । म्हांरे तो वेसे नहीं जी । थे मेलो भेद अपार ॥ मु० ॥ २ ॥ इण न्याय मत म्हांरो खरोजी । जीव काया छै एक । साची श्रद्धा मांहरी जी । थे तो मेलो हेत अनेक मु० ॥ ३ ॥ चोर मुवे नें जीवतो जी । फेर पड़त तिलमात तो न्यारा कर जाणतो जी । मानतो थारी बात ॥ मु०

॥४॥ गुरु कहै बाय भरी दिवड़ी जी। दीठी छै तैं राय। राय कहै दीठी अछैजी। तो सुण चित लगाय ॥ प्र०॥ ५॥ बाय भरी तोली दिवड़ी जी। तोली काढी नें बाय। घटे कि न घटे सही जी। सुण उत्तर दे मुझ राय ॥ प्र०॥ ६॥ राय कहै बायु काय में जी। भार नहीं मुनिराय। इण न्याय तूं जाण ले जी। जूदा जीव नें काय ॥ प्र०॥ ७॥ असंख्या बाउ काय निसरी जी। दिवड़ी माहीं घटाय। एकण जीव निकल्यांजी। राजा काय किम घटाय ॥ ८॥ तिण कारण तूं सरध ले जी। जीव काया छै दोय। कोड दे खांच आछी नहीं जी। तूं अन्तर विचारी जोय ॥ प्र०॥ ९॥ राय कहै थांरी अकल सुंजी। मेलो ए दृष्टान्त। म्हांरे तो दिल वैसे नहीं जी। न मिटी मन री भ्रांत ॥ सु०॥ १०॥ प्रश्न पूछूं आठमों जी हूंथांने निरधार। सांचो श्रद्धा मांहरी जी। तो दिज्यो अर्थ विचार ॥ सु॥ ११॥

॥ दोहा ॥

बांकी प्रश्न आठमो, गुरु नें पूछै राय।
मोटे मंडाणे करी, बेठो सभा बणाय ॥१॥
कोटवाल इक चोरटो, आणी सुंप्यो मोय।
पारखा करवा जीवरी, मैं टूकड़ा कीधा दोय ॥२॥

जद जीव नहीं देखियो, टूकड़ा कीधा च्यार ।
आठ सोला संख्या किया, जीव काया नहीं न्यार ॥३॥
जीव निकलतो देख नें, तो मानत मन साच ।
तिण कारण महा मुनि, म्हांरो मत छै साच ॥४॥

॥ ढाल १५ मी ॥

गुरु कहै राजा तू एहवो ए । कठियारा मूरख जेहवो ए । राय कहै वलि एम ए । कठियारा मूरख केम ए ॥ १ ॥ गुरु बोल्या चोज लगाय ए । सांभल प्रदेशी राय ए । कठियारा अटवी बाट में ए । भेला हुवा चाल्या काठ नें ए ॥ २ ॥ आघा अटवी मांही जाय ए । मिसलत कीधी मन मांय ए । कठियारा एकण भणी ए । दीनी भोलावण भोजन तणी ए ॥ ३ ॥ म्हे काठ ले आवां इतरे ए । तूं भोजन त्यार करी जितरे ए । लकड़ो थोड़ी थोड़ी कर आपस्यां ए । थांरे भारी कर थापस्यां ए ॥ ४ ॥ तूं रखे प्रमाद में लाग ए । कदास बुझ जावेलो आग ए । तो अरणी मांही सुं काढ ए । देजे काम सिराणे चाढ ए ॥ ५ ॥ इम सीखा-वण दीधी घणी ए । आया चाल्या अटवी भणी ए । लारे नींद तणे वश थाय ए । अग्न खीरो गयो बुझाय

ए ॥ ६ ॥ उठीनें वले पेखियो ए । अग्न खीरो बुझियो देखियो ए । किम निपजावुं आहार ए । ल्यांउं घरणो मांसुं फाड़ ए ॥ ७ ॥ कमर बांधी फरसी झाल ए । आयो अरणी पे चाल ए । घणो जो माया तो होय ए । अरणी टुकड़ा किया दोय ए ॥ ८ ॥ जब निजर न पड़ी आग ए । अरणी च्यार आठ किया भाग ए । लाए असंख्याता रो ढोंग कियो ए । तोही अग्न दिखालो नहीं दियो ए ॥ ९ ॥ रह्यो फावो फीटो होय ए । आ किसी विपद पग मोय ए । हूं अधन अपून्य अभाग ए । हिवे काढुं किहथां आग ए ॥ १० ॥ मोनें सूंप्यो कुण जंजाल ए । फरसी दोनी हेठो राल ए । याद आवे इम बालरा ए । मो ने कांसुं कहसी साथ रा ए ॥ ११ ॥ रह्यो आरत ध्यान में ध्याय ए । वले नीचो माथो घाल ए । इतरा में कठियारा आविया ए । आरत रा लखण पाविया ए ॥ १२ ॥ तूं आरत ध्यान किम करे ए । वले बिलखो होय बोले तरे ए । थे कारज गया ओलाय ए । मो सुं गरज सरी नहीं काय ए ॥ १३ ॥ निद्रा काष्ट या अग्नि तणी ए । सहुवात कही साथ्यां भणी ए । अग्न न निकली लकडी मांय ए । तिण सुं दुःख पड़ियो आय ए ॥ १४ ॥ तिण कारण हूं दिलगीर ए । भाई जांहां दुःख जाहां पीड

ए। मांहो मांही सहु डूम भणे ए। आपां रह्या भरो से जढ लणे ए॥ १५॥ डूतरा में निपुण छै एक ए। चतुराई वंत विशेष ए। कला जाणे छै जे छतो ए। लकड़ी में लकड़ी घाल मथो ए॥ १६॥ अग्न संदूषो पाड़ ए। निपजाया च्यारूं आहार ए। सनान संपाडो कर बहु ए। परि पक्क पड़ा ने सहु हुवा सरू ए॥ १७॥ भेला हुई भोजन करो ए। चलु करी नें मुख मुं-कण धरो ए। जीमो नें ताजा होय ए। तिण नें कहे मूरख जोय ए॥ १८॥ ते क्रोध कियो घट मांय ए। ते में अकल दिसे न कांय ए। डूम पाडो जे आग ए। संसार चतुर रो माग ए॥ १९॥ कठियारो मूढ अया-णा ए। लकडो सुं मांडो ताण ए। आग पड़े नहीं पारखो ए। राजा तूं कठियारा सारखो ए॥ २०॥ राजा पूछे गुरु भणी ए। स्वामी परषधा मिली अति घणी ए। थे चतुर अवसर रा जाण ए। मोनें कठण कहो छो वाण ए॥ २१॥ देखे परषधा लोग ए। था नें मूरख कहणो जोग ए। गुरु कहे राजा एतलो ए। परषधा चालो केतलो ए॥ २२॥ जाणु छूं स्वामी हूं सहो ए। परषधा च्यारे कहो ए। न्यारा न्यारा नांव किसा ए। राय कहे हुवे जिसा ए॥ २३॥ पहली गाथा पति ब्राह्मण तणो ए क्षत्रिय वणारो चोथी भणो ए। गुरु

कहै तूं जाचे इसो ए। आरां अपराध्यांनें डाढ किसो ए ॥ २४ ॥ राजा रो खूंन करूं तरे ए। म्हांन छेदी छेदी नें पूरजो २ करूं ए। तांहरो अपराधी थाय ए। तन बाल तिण लगाय ए ॥ २५ ॥ ब्राह्मण रो अपराधी घणो ए। लखण स्वान कागला मन तणो ए गाल कूंडाला नें आकार ए। सोरदागदे सांमें लिलाड़ ए ॥ २६ ॥ ऋषिश्वरां सूं स्हामो वहै ए। तिण नें डराड मूरख जड कहय ए ॥ २७ ॥ तें प्रश्न पूछ्या बांकडा ए। तिके क्रोध उघड टांकडा ए। म्हारै तो मन माहै ए। तिल मात्र आवी नांहै ए ॥ २८ ॥ तें बांकी चरचा पूछी घणी ए। तिण सूं जड मूरख कह्यो तो भणी ए। वल तो बोलि राय ए। स्वामी सांभलो म्हांरी वाय ए ॥ २९ ॥ हूं पहिलो प्रश्न पूछियो ए। म्हांरो किरतव थानें सुझियो ए। म्हांरी कही मनोगम बात ए। तबही समझो स्वामी नाथ ए ॥ ३० ॥ आडा टेडा आण ए। मैं तो प्रश्न पूछ्या जाण ए। ज्ञान तणी प्राप्त भणी ए। मैं तो बांकी चरचा पूछी घणी ए ॥ ३१ ॥ ज्यूं ज्यूं पूछूं बांकी तरे ए। ज्यूं ज्यूं जिण धर्म री खबर पड़े ए। जाणवा जीव अजीव ए। समकित चारित्र नी नींव ए ॥ ३२ ॥ मैं मन में विचार इसो कियो ए। जाणी नें बांको बरतियो ए। जाण पणा सूं

सुधरे काज ए। वलता बोल्या मुनिराज ए॥ ३३॥ जाणे छै राय तूं एतला ए। वोपारी चाल्या केतला ए। हां स्वामी जाणुं च्यार ए। त्यांरो न्यारो न्यारो विचार ए॥ ३४॥ ए कहे पिण करड़ो बोल ए। दोरोसो गंठिडी खोल ए। एक नरमाई करे घणो ए। पिण समरथ न देवा भणी ए॥ ३५॥ तीजो दे सन्मान बहु परे ए। व्याज दाम मुख आगे धरे ए। बलै नरमाई करे घणी ए। बलि भाव भगत जोरा तणी ए॥ ३६॥ चोथो थारी खोटी नीत ए। पाछो देवणरी नहीं रीत ए। बोरो आथ मांगे तरे ए। बोलै गाल धका धूमी करे ए॥ ३७॥ गुरु कहै च्यारां मांह ए। कुण विव-हारियो कहाय ए। कुण न कहिये विवहारियो रे। राजा कहै जिम धारियो ए॥ ३८॥ राय कहै व्योपारी तीन ए। चोथो नहीं परबीण ए। वलता गुरु बोल्या एतरे ए। तूं पहिला व्योपारी नो परें ए॥ ३९॥ बांका प्रश्न वातां कहि ए। पिण जाणु ब्रत लेसी सही ए। अंन्न भगत रो पारखो ए। तूं पहिला बोपारी सारखो ए॥ ४०॥ गुरु मिलिया ज्ञान भंडार ए। त्यां दिना छै जाब विचार ए। खुसामदी नहीं काण ए। मुनि बोलया छै अमृत बाण ए॥ ४१॥ प्रश्न कह्या हेत जुगत ए। तिण सुं वेगी मिले मुगत ए। तूं शंका मूल न

राख ए। सूत्र राय प्रसेणी में साख ए॥ ४२ ॥

॥ दोहा ॥

गुरु प्रते राजा कहै, थे चतुर अवसर रा जाण।
आप उपदेश भला कह्या, निपुण गुणारी खांण॥१॥
शरीर सें सुं जीव काढवा, थे समरथ छो अतीव।
आंवला प्रमाण हाथमे, मोनें काढ दिखलो जीव॥२॥

॥ ढाल १६ मी ॥

तिण काले नें तिण समेंजी, राय प्रदेशी पास। वृक्ष तणा जे पानड़ाजी। वाय हलावे तास॥ मुनिश्वर उत्तर दे छै जी एम॥ १॥ गुरु कहै राजा प्रतेजी, वृक्ष तणा जे पान। देव नाग वे किन्नराजी, जाव गंधव राजान॥ मुनि०॥ २॥ राय कहै नहीं देवताजी, गंधव नहीं ए हिलाय। वृक्ष तणा जे पानड़ाजी, हला वे वाऊकाय॥ मु०॥ ३॥ गुरु कहै तूं देखे अछेजी। रूप सहित वाऊकाय। कर्म वेद लेश्या तेहनें जी। मोह शरीर कषाय॥ मु०॥ ४॥ राय कहै देखूं नहीं जी। जब गुरु बोलया एम। तूं वायु रूप देखे नहीं रे तो जीव देखालुं केम॥ मु०॥ ५॥ छमस्थ तो देखे नहीं रे, दश स्थानक रा जान। देखे तो श्री केवली

जी। तूं जीव काया जूदा मान ॥ मु० ॥ ६ ॥ सांभल राय हर्ष्यों घणो जी। ए रलारी खाण दशमो प्रश्न पूछूं वलिजी, मोटा ज्ञानी गुरु जाण ॥ मु० ॥ ७ ॥ थे कह्यो हाथी कंथवोजी, जीव बराबर होय। गुरु कहै राजा तूं सांभले रे, जीव में फेर न कोय ॥ मु० ॥ ८ ॥ तो हाथी थी कंथवा रे, थोडा सा कर्म बंधाय। आकाया आ सर्व अल्प छै रे। वलि छोटी तिणरी काय ॥ मु० ॥ ९ ॥ सास उसास तो कंथवारे, इतना वा जिनराय आहार निहार ओछो तेहनेजी। जीव बरोबर कहाय ॥ मु० ॥ १० ॥ ओछी रुद्ध क्रांत कंथवा रे हाथी री मोटी जाण गुरु कहै राजा इमज छै रे, तूं शंका मूल न आण प्रदेशी तूं सरध जूदा जीव काय ॥ ११ ॥ आप कहो जीव सारसा जी, ओछी अधिकी क्रांत। गुरु कहै राजा तूं सांभले रे, दीवारो दृष्टान्त ॥ प्र० ॥ १२ ॥ गंभीर मोटी शाला हुवेरे। कोई दीवो म्हेल्यो मांय। आडा जड़ किवाड़ ने रे, वले छेती न राखे काय ॥ प्र० ॥ १३ ॥ मांहे दीवो उजालियो रे, शाला में करे उजास। बारे जोत न निसरै रे, इतरो हो करे प्रकाश ॥ मु० ॥ १४ ॥ दीवा ऊपर डालो दियो रे, जोत इतरी हो दूर मझार। शाला में मांही बारणो जो, सगले हुवे अंधार ॥ प्र० ॥ १५ ॥ मुडो कुडो नें सिरावलो रे।

आधो पाधो जाण । चौथे भाग नें सोलवें रे, जाव बतीस चौष्ट प्रमाण ॥ प्र० ॥ १६ ॥ तिण दीवारा ढांक णा सूं दीवो ढांकि कोय । तो पिण जोत मांही रहे रे, बारे उजास न होय ॥ प्र० ॥ १७ ॥ चोसठ बहे तेह-मेजी, बारे उजास न थाय । इण दृष्टांते जीवड़ोजी राजा रहे छे काया मांय ॥ प्र० ॥ १८ ॥ मोटी काया बांधी जीवड़े रे, तिहां करे घणो उद्योत । कर्म घणा काया न्हानड़ी जो, तिण सुं दब गई जोत ॥ प्र० ॥ १९ ॥ इण दृष्टांते सरधले जो जूदा जीव नें काय । ए जूदा कर सरधिया पिण मत छोड़ो नहीं जाय ॥ प्र० ॥ २० ॥

॥ दोहा ॥

प्रश्न पूछं इग्यार मों, मुनि उत्तर दीनो जाव ।
लोह वाणियो कह्यो तव, आई धरम री आव ॥ १
राय प्रदेशी गुरु प्रते, बोले जोडी हाथ ।
पहलो प्रश्न हूं पूछियो, म्हारी कही मनोगत बात ॥ २
मैं जाणीनें पूछिया, आड़ा टेडा वेण ।
ज्ञान तणी प्राप्त भणी, थे मौलिया साचा सेण ॥ ३ ॥
दादा पड़ दादा तणो, दव पीडयां री राह ।
वडा बुढां रो सेवियो, किम छूटे स्वामी नाह ॥ ४

मैं खरो कर जाणियो, थांरो धर्म छै सार ।
पिण मो सुं छुटै नहीं, वडा बुढां रो भार ॥५॥
मत घणा दिन भालियो, छोडंतां आवे लाज ।
जिम छै तिमहिज हरण द्यो, थे मोटा मुनिराज॥६॥
वचन सुणी राजा तणो, तब गुरु बोल्या एम ।
राजा तूं पिछतावसी, लोह वाणिया जेम ॥७॥
स्वामी कुण लोह वाणियो, कहो हुवो छै जेम ।
कृपा कर सुणाय द्यो, हूं सुणस्युं धर प्रेम ॥८॥

॥ ढाल १७ मी ॥

(देशी चोपाई नी)

गुरु बोल्या राय सांभल जेह, प्रश्न इग्यारमां रो उत्तर एह । केइक वाणिया धनरी चाह, भेला हुई अटवी मांही जाय ॥ १ ॥ जांतां जांतां आयो उद्यान, आगे आई लोहरी खान। निरधन रे तो लोहरो ज धन, खान देखी सहु हरख्या मन ॥ २ ॥ जाण्यो दलिद्र गयो ज दूर, लोहरो भार उपाड़्यो पूर, सगला अत्यन्त हुवा खुसाल, विण पईसां ए मोलियो माल ॥ ३ ॥ आगा चाल्या धनरी चाय, तरवो देखी आयो दाय । न्हाखयो सहु लोह रो भार, सगला तरवो बांधा भार

॥ ४ ॥ कह्यो मान लोह दीनो राल, तरवो बांध लियो तत्काल। दूतरा मांही वाणियो एक, लोह नें सांगे कियो विशेष ॥ ५ ॥ सगला साथी बोल्या एम, तूं लोह ड़ो छोडे नहीं कीम। तरवा थी लोह आवे घणो, भार, छोड दे लोहड़ा तणो ॥ ६ ॥ तब पाछो बोलियो तिण वार, मैं दूर थकी उपाड़्यो भार। खप कीनी म्हारी आ जाय, तिण कारण छोडूं नहीं भाय ॥ ७ ॥ तिहां थीं चाल आविरा गया, तब ते खान तांबा री लह्या। लोह न्हाख तांबो दियो घाल, उण मूरख रे वाहिज वात ॥ ८ ॥ आगे आई रूपा सोनारी खान, दूमहिज हीरा रतन वखाण। मणि माणिक मोती आविया, सगलां रे मन भाविया ॥ ९ ॥ न्हाखदियो सहु पिछलो भार, वज्रहीरा बांध्या सार। उभो देखे लोह वाणियो। लोह भार रो मोह आणियो ॥ १० ॥ सगला कहै छोड दे लोह, लोह थकी उतार दे मोह। वज्र हीरा रो लोह आवे बहु, आपां सारीसा हुस्यां सहु ॥ ११ ॥ लोह वाणियो बोल्यो वाय, केडा मेलो कारे बलाय। मैं तो भार लीयो साही लीयो, थे छोड मेल नें का सुं कियो ॥ १२ ॥ तब सगला मन में जाणियो, ए मूरख दिसै लोह वाणियो। साथ्यां सीख दीधी छै घणी, पिण मत न उपनी मूरख भणी ॥ १३ ॥ सगला पाछ

आया तिवार, आय पोंहता अपणे घर बार । भारी माल लाया बहु घरे, एक हीरा रा दमड़ा करे ॥ १४ तिण रा आव्या बहुला दाम, दाम थकी सिझै बहु काम सत भोम्या बणाया आवास, तरुणी नार मिली त्यां पास ॥ १५ ॥ मादल बाज रह्या धूंकार, बतीस विध नाटक विस्तार । सेवक जोड़ खड़ा रहे हाथ, कोई न लोपि तेहनी बात ॥ १६ ॥ विलस रह्या मन गमता भोग, पुन्य थकी आय मिलग्रा संयोग । लोह वाणिये मन में पाम्यो सोग, हड़ हड़ हांसि सगला लोग ॥ १७ ॥ लोह नें बेच्यो गंठड़ी खोल, तिण रो मिलग्रो अल्पसो मोल । थोड़ा दिन में दियो निठाय । क्युंही नाहीं लारे गई खाय ॥ १८ ॥ घर में आई दलिद्र भूख, भूख थकी देही गई सूक । साथ्यां तणी मेहलायत देख नाटक क्रिया सुख विशेष ॥ १९ ॥ ज्यूं देखे ज्यूं सोच करे, पछे गरज कहो कुणसी सरे । अधन्य अपुन्य अक्रत पुन्य तणो, तूटती अमावस रो जण्यो ॥ २० ॥ दूरपन्त लखण नो वाय, लज्या दया रही नहीं काय । कह्यो न कर्‍यो साथ्यां तणो, पछे पिसतावो थयो घणो ॥ २१ ॥ तेह तणो पर सांभल राय, रखे तोने पिछता वो थाय । पहिली क्युं तूं कर्म बंधाय, पछे हुवेली धर्मरी चाय ॥ २२ ॥

॥ दोहा ॥

लोह वाणिये जिम कियो, तिम हूं न करूं स्वाम
थां सरिसा गुरु भेटिया, सरिया वंछित काम॥१
प्रदेशी प्रति बुझियो, सांभल ए दृष्टान्त।
ईत जुगत करी तारियो, मिलिया असो संत॥
स्वामी थे मोटा पुरुष, म्हांरा खोल्या अन्तर नैण
कृपा कर सुणाय द्यो, तुम मुख हंदा वैण॥३॥
मुनिवर दीनी देशना, मोटी परषदा मांय।
राय प्रदेशी आद दे, सुणे सर्व चितलाय॥४॥

॥ ढाल १८-मी ॥

(जिण जारारी देशी)

चेतन चेतो रे मनुष्य तणो भव पाय। प्रमाद में भङ्ज्यो मती॥ चेतन चेतोरे ॥ १ ॥ चेतन चेतो रे जरा रोग हुवे आय, सैंठा रहज्यो शूरा सती॥ चेतन० ॥ २ ॥ चेतन० वासो वसियो आय, जीव वटाउ पाहुणो ॥ चे० ॥ ३ ॥ चेत० देहरी सूरछा मति आण, कूड़ी सतकार चाकरी ॥ चे० ॥ चे० छोडी जासी प्राण, ढेरी करसी राखरी ॥ चे० ॥ ४ ॥ चे० रोग न व्याप्या आय, पांचु इन्द्रीऋ मावतां ॥ चे० ॥ चे० ज्यां चेतन

घट मांहि, राखो धर्मरी जावता ॥ चे० ॥ ५ ॥ सत गुरु
नो ए सीख, ए अवसर मति चूकाज्यो ॥ चे० ॥ चे०
पर निन्दा पर नार, तिण नेड़ा मत ढूकाज्यो ॥ चे० ॥
॥ ६ ॥ चे० पड़ै सगा नें सैण पड़े संच्यो धन हाथ री
। चे० । चे० वंधव त्रिया नें पूत, न पले धर्म जगनाथ
रो ॥ चे० ॥ ७ ॥ चे कार ज्यो कछु करतूत, यो मनुष्य
तणो भव पाय नें ॥ चे० ॥ चे० मत द्यो नरक ना सूत
परनी चुगली खाय ने ॥ चे० ॥ ८ ॥ चे० आय न चाले
साथ, नारी सम्पत ते सही । चे० । चे० सहु पाछै रह
जात छोड जासी निज देह सही ॥ चे० ॥ ९ ॥ चे०
हाथी हींडोला नें हाट, ओरा आरसी सही । चे० ।
चे० तोने हुवेलो उचाट पाछै गरज सरे नहीं ॥ चे०
॥ १० ॥ चे० जब लग स्वार्थ होय । तब लग मुख
जीजी करे । चे० । चे० स्वार्थ पुगां सोय । मुखदीठा
सुं लड़ पड़े ॥ चे० ॥ ११ ॥ ए संसार सरूप । देखो
नें प्रति बुझाज्यो । चे० । काम भोग महा कूप । तिण
मांही मत मुरझाज्यो ॥ चे० ॥ १२ ॥ साध पणो ल्यो
सार । काम भोग त्यागन करो । चे० । श्रावक ना ब्रत
बार । शिवरमणि वेगा वरो ॥ चे० ॥ १३ ॥ अथिर
आऊखो जाण । तन धन जोबन अथिर छे । चे० ।
पालो जिनवर आण पिछतावो न पड़े पछे ॥ चे० ॥

१४ ॥ पायो वार अनन्त । आयु पल सागर तणो । चे० । कोई अन्य न मिलियो संत । समकित रस जाख्यो नहीं ॥ चे० ॥ १५ ॥ हुवो काल अनन्त भव सागर रुलियो घणो । चे० वे न मिल्या साचा सन्त । धर्म रस पायो नहीं ॥ चे० ॥ १६ ॥ इत्यादिक उपदेश । जाव दृष्टान्त में जाणिये । चे । केसी स्वामी कहै रस । दया धर्म दिल आणज्यो ॥ चे० ॥ १७ ॥

॥ दोहा ॥

सुगुरु तणी वाणी सुणी, घणोज रिझ्यो राय ।
हाथ जोडी ने इम कहै, मैं सरध्या तुमना वाय ॥१॥
परदेशी राजा हिवे, श्रावक ना व्रत लीध ।
लागो रंग मजीठ जिम, जाणे अमृत पीध ॥२॥
उठण लागो तिण समें, बिगर खमायो जाय ।
आचारज रो हेत दे, इम बोल्या मुनिराय ॥३॥

॥ ढाल १९ मी ॥

जाणे छे राजा तूं वातरा ए । आचारज कितरी जात रा ए । राय कहै जाणु स्वाम ए । आचारज तीन ज नाम ए ॥ १ ॥ कला शिल्प धर्म आयरिया ए । तीनां रा नाम में धारिया ए । गुरु कहै तूं जाणे इसी ए ॥ आंरो विनो भगत करवो किसी ए ॥ २ ॥ जाणु धर्म

वेहुं तणो ए। कला शिल्प आयरिया भणी ए। अश-
णादिक च्यारूं आहार ए। जिमाउं पूजा सत्कार ए
॥ ३ ॥ सिनान मंजण नाहण करी ए। पुष्पादिक माला
गलधरी ए। देव पुष्प पहराय ए। तिके धुर पीढ्यां
लग खाय ए ॥ ४॥ एतो संसार रा गुरु कह्या ए। राजा
बार अनन्तो लह्या ए। हिवे धर्म आचारज तणो ए।
सेवा भगत करी घणी ए ॥ ५ ॥ राय कहै धर्म आचा
रज तणी एं। सेवा भगत करवी घणी ए। बन्दणा
सत्कार सन्मान ए। देणो चवदे प्रकार रो दान ए ॥
६ ॥ बचन विना सुं भाखणो ए। ज्यांरो कुरब घणोंहो
राखणो ए। आणे मारग सुल ए। स्वामी कुण छै गुरु
सम तुल्य ए ॥ ७ ॥ गुरु आप तिरे पर तार ए। स्वामी
गुरु विना घोर अंधार ए। ज्यां राखी गुरांरी प्रतित
ए। जिके गया जमारो जीत ए। गुरु दीवो गुरु देव
ए। नित्य कीजे गुरांरी सेव ए। इम बोल्या मुनिराय
ए। सांभल प्रदेशी राय ए ॥ ८ ॥ एहवो चतुर विच-
क्षण जाण ए। म्हांने बोले बांको वाण ए। थांरे कां
सु चाई दिल मांय ए। म्हांरे बिगर खमाया जाय ए॥
१० ॥ हिवे सांभल ज्यो मुनिराय ए। म्हांने इसडी
आई मन मांय ए। नगर न्यातिला में मो तणो ए।
स्वामी कुजश फैलयो छै अति घणो ए॥ ११ ॥ म्हारो

होतो खोटी नीत ए। रहतो घणा नें अप्रतित ए। रह्यो मिथ्या मत राच ए। कुण माने पापी रो साच ए॥ १२॥ म्हांरो कुटम्बो लोग लगाय ए। पछे लाग सुं थांरे पाय ए। नर नारी जाणे जेहवो ए। थो पनड नमायो एहवो ए॥ १३॥ तब बोलग्रा मुनिराय ए। राय ज्यूं लोगे सुख थाय ए। हिवे नगरी मांही आय ए। कुटम्ब भेलो कियो राय ए॥ १४॥ ब्याही न्याति लोग ए। घणाइ मिलिया छे थोक ए। सूरि-कन्तादिक राणियां ए। राजा रथ वैसाणी नें आणीया ए॥ १५॥ अधिको धर्म सुं प्रेम ए। राजा चढियो कोणक जेम ए। गजहोदे असवार ए। राजा चाल्यो मध्य बाजार ए॥ १६॥ मृग वन नेडो आय ए। हेठो उतरियो राय ए। देखे सहु परवार ए। खमावे वार-म्वार ए॥ १७॥ लोक सहु मन जाणियो ए। पापी नें पडे आणियो ए। धन २ केसी स्वाम ए। प्रदेशी रा साध्या काम ए॥ १८॥ लोक सहु मन भरवियो ए। स्वामी इसड़ा नें नमावियो ए। मोटा जिन मारग वहे ए। तो पाखंडी दबिया रहे ए॥ १९॥ ओ धर्म छे राजवियां तणो ए वले सांचे मन करै तां तणो ए। शूरवीर रो छे सही ए। हूंहां जात रो कारण नहीं ए॥ २०॥ समझ्यो प्रदेशी राय ए। आयो वणा जणारी

हाय ए । नरनारी तांछे आपणा ए । ते राजी हुवे ते घणार ए ॥ २१ ॥ देखा देखी बान्धे पाप ए । देखा देखी बाधे धर्म । ए इम सांभल नें नर नार ए । करज्यो आतम नो उद्धार ए ॥ २२ ॥

॥ दोहा ॥

लाखी सुण नें परषधा, हरष हुवा मन मांय ।
समत सारु ब्रत आदरी, आया जिण दिश जाय ॥ १ ॥
उठण लागो लिण समें, गुरु कहे रहजे ठीक ।
पहलो हुवे रमणिक तूं, पछे मत हुवे अरमणीक ॥ २ ॥
रमणीक स्वामी किम हुवे, अरमणीक हुवे केम ।
जलता गुरु इसको कहे, राय सांभल हुवे जेम ॥ ३ ॥
इक्षु खेत नें बाग खला, वली नटवारी शाल ।
पहलो तो रमणीक हुवे, पछे अरमणीक हुवे भूपाल ॥ ४ ॥

॥ ढाल २० मी ॥

इक्षु रहतो रे, ज्यांरा माका क्षेतोरे । लागा रस चालारे, त्यांरा बहे घणा नालारे । बहु भाका भवोला रे भोड़ लागी रहे रे ॥ १ ॥ इक्षु रस पीलीजे रे, खाई ने दीजेरे । बोहला रस पीजे रे । देख देखने रीझे रे तब लागे हो रमणीक इक्षुरा खेत सुहामणा रे ॥ २ ॥

रस ले घर आया रे, ठिकाणे लगाया रे। सूका नें खेतो रे, मांहीं उडे रेतो रे जद लागे हो ईख़ुरा खेत अशोभता रे ॥ ३ ॥ हिवड़ा में वेठारे, थांरा प्रणाम सेंठारे। विहार कर जावां रे, अनेरा गावांरे। तोतं ईख़ुरा खेत जिम राजिन्द्र मत हुवे रे ॥ ४ ॥ बाग गहरी छायां रे, मांजर ए आयां रे। वहु फूल नें फलिया रे, फल नें भार ढलिया रे। तव लागे हो राजिन्द्र बाग सुहावणा रे ॥ ५ ॥ कोई आवे नें जावे रे, वहु चीजां खावे रे। पामे रे तस साता रे, पान नीला नें राता रे। तव लागे हो रमणीक वाग सुहावणा रे ॥ ६ ॥ फागुण वाय वाजेरे, पान झड़वानें लागे रे। निकल गया डाला रे, नहीं फल रसाला रे, तव काला झंखर लागे हो बाग अशोभता रे ॥ ७ ॥ हिवड़ा में वेठारे, थारा प्रणाम सेंठारे। विहार कर जावां रे, अनेरा गांवांरे। तो तूं फागुण रा बाग सम राजिन्द्र मत हुजेरे ॥ ८ ॥ लाटा धान गाहिजे रे, खाई जे नें दीजेरे। उपजे उदमादोरे, ढीग देवे अगाधोरे। तव जादा हो लाटा चेल लागी रहे रे ॥ ९ ॥ धुर नें वले वोरा रे, मिलिया ठोड़ा ठोड़ा रे। हाकम लाटा रे। डूंबडा २ वजार रे वले विणजारा सोदागर सहणां भोमियां रे ॥ १० ॥ चोधरी पटवारी रे, तुला-

घट चारी रे । काय घका नुंगारे, कोई लेता चुंगारे तब लागे हो लाटा राजिन्द सुहामणा रे ॥११॥ लाटा ले चाल्यारे, धान ठिकाणे घाल्यारे । भोड़ की ते सहु भागीरे, रेत उडवा लागी रे । तब लागे हो राजा लाटा अशोभता रे ॥ १२॥ हिवडां तो झाझोरे, थारो वर्ग ताजोरे ।। धर्म पायो रसीलो रे । रखे पड़ जाय ढीलोरे । ते तूं मटक बैरागी हो राजिन्द मत हुजेरे ॥ १३ ॥ नटवारी शालारे, गावे गीत रसाला रे । बाजा ताल बजावे रे, सहु देखण आवेरे । तब लागे हो नटवारी शाला सुहावणोरे ॥ १४ ॥ जल सुं मुख धोवे रे, हड़ताल लगावेरे । सांग नवां २ आणेरे । नाचे रूप रसाणे रे । जद लागे हो नटवारी शाल सुहा-वणी रे ॥ १५ ॥ दिहाड़ो गयो उगीरे, नाटक गयो पूगी रे । लोग लागा ठिकाणेरे, नर लागा काम खाणेरे । तब लागे हो नटवारी शाल अशोभतीरे ॥ १६ ॥ ओजीकि हुंतारे, कोई पड़िया नें सूतारे । मुख काजल लटेरा रे, आंख्यां गींड भंखेरा रे । तब लागे हो नटवारी शाल अशोभती रे ॥ १७ ॥ रहजे तूं ठीका रे, तोने दोनी के सोखारे । च्यारूं रमणीकारे धर्म पाल सदीकारे । ज्यूं तुंनें टीकारे आवसी धर्म तणो रे ॥ १८ ॥

॥ दोहा ॥

अरमणीक स्वामी नहीं हुवु, म्हारे धर्म रा ....
सात हजार गांव खालसे, जांरा करदेसु च्यार भाग॥१॥
एक भाग राख्या निमत, दूजो भाग खजान।
तीजो भाग घोड़ा हाथियां, चौथो भाग सुं दान॥२॥
आप कान्हे ब्रत आदर्या, चोखा पालसुं स्वाम।
सामायक पोसा करी, साधु आतम काम॥३॥
प्रदेशी इम बोलियो, धर वैराग्य अतीव।
बेले बेले पारणो, कराय दो जाव जीव॥४॥
इम परतीत उपजाय नैं, भेट्या गुरु ना पाय।
कर जोड़ी वन्दणा करी, आयो जिण दिश जाय॥५॥
केसी सरीषा गुरु मिल्या, चित सरीषा प्रधान।
प्रदेशी पापी हुंतो, आरायो धर्म रे ठाम॥६॥

॥ ढाल २१ मी ॥

प्रदेशी श्रावक थयो, नवतत्व भेरो जाण रे। डिगायो डिगे नहीं, जो देव चलावे आणरे॥ वैरागी मन वालीयो॥ १ ॥ सामायक पोषा करे, शीलव्रत सों नेम रे। आछी पाले आंखड़ी, देव गुरु धर्म सुं प्रेम रे॥ वै० ॥२॥ दान दे चवदे प्रकार को, साधां नैं निर्दोष रे। हाड मींजो धर्म सुं रंगो, मन लागो शिव

सोख रे ॥ बै० ॥ ३ ॥ देव गुरु धर्म परख में, सेंठो समकित धार रे । शंका कांखा मिट गई, रुचियो प्रवचन साररे ॥ बै० ॥ ४ ॥ तिणदिन सुं ब्रत आदऱ्या राज देश भण्डार रे बल बाहण राख्यां तणो, न करे सार संभाल रे ॥ बै० ॥ ५ ॥ चाकर नफर परिवार सुं उतरियो मन राग रे । पर भव की खरची भणी, रात दिवस रह्यो लाग रे ॥ बै० ॥ ६ ॥ बेले बेले पारणो, तपस्या करे अभङ्गरे । मोक्ष भणी उद्यो सही, करतो कर्मा सुं जङ्गरे ॥ बै० ॥ ७ ॥ करजे हूंतो राजवी, रुचियो जिन धर्म रे । लाग्यो रसायण एहवी भाज गयो मन भ्रम रे ॥ बै० ॥ ८ ॥

॥ दोहा ॥

जां लग धर्म पायो नहीं, करतो माठा पाप ।
भासण रे मन आंवतो, पड़ती लोकां में छाप ॥१॥
सूरिकन्ता उपरे, हुंतो घणोज प्यार ।
तिण नामें सुत नो दियो, सूरिकन्त कुवार ॥२॥
कुण बेटो कुण पोतरो, कुण नारी कुण भाय ।
स्वार्थ लग सहु का सगा, परमार्थ मुनिराय ॥३॥
राणी मन में जाणियो, दूजा सुं न सरे काज ।
सूरिकन्त कुमार ने, लेई बेसाणु राज ॥४॥

॥ ढाल २२ मी ॥

हिवे राणी मन में जाणियो, ओतो भ्रम गयो भू-
पाल रे । लाला । सार करे नहीं राजरी, मोने लागो
कुण जंजाल रे लाला ॥ जोय जग्रो स्वार्थ का सगा ॥ १
॥ एतो मुतलब केरा यार रे लाला जो मुतलब हुंतो
नहीं, तो छटक दिखाड़े छेह रे । लाला । जोय जग्रो०
॥२॥ इण राजा सुं गरज सरे नहीं । नहीं चाले राजरो
भार रे । लाला । किण ही जहरादिकरा जोग सुं, की
न्हाखुं हुं मार रे । लाला ॥ जो० ॥ ३ ॥ एहवी करी
ये विचारणा, ओतो कवर बुलायो पासरे । लाला ।
जितरी हिरदा में उपनी, जेतो कह सुनाई वातरे ।
लाला ॥ जो० ॥ ४ ॥ बेटा थारा बाप नें मार तूं, किण
ही शस्त्रादिक रा जोगरे । लाला जग्रूं राज वेसाणुं
तो भणी, म्हांरे मिट जावे दुःख नें सोगरे । लाला ॥
जो० ॥ ५ ॥ कुमर सुणी मन चिन्तवे, आतो दुष्टणी
दिसे मातरे । म्हारो पिता पिण पापी हुंतो, रहता
लोही खरड्या हाथ रे ॥ लाला ॥ जो० ॥ ६ ॥ नां
कहुं तो मा बुरी, हां कहुं तो म्हांरो बापरे । ओतो
अणबोले उठी गयो डर नें रह्यो चुप चापरे ॥ लाला०
॥ जो० ॥ ७ ॥ कंवर अवसर रो जाण के इण पाछो न

दियो जावरे । जद राणी मन में जाणीयो, हाहा गई म्हांरी आवरे ॥ लाला ॥ जो० ॥ ८ ॥ मैं तो कह्यो छो हित भणी, डुण रे न आई दायरे । कदास जाय कहसी बाप नें, तो पड़े गला में आय रे ॥ लाला ॥ जो० ॥ ९ ॥ मन मांहीं चिन्ता अति घणी, लाग रही उत्पातरे । लाला । कोई अवसर देखो अटकलो, पहिलां कहूं हूं घातरे । लाला ॥ जो० ॥ १० ॥ छल छिद्र जोती फिरे, एकदिन अवसर जाण रे । थांरे बेलारो छे पारणो, सो म्हांरे किजे आणरे । लाला ॥ जो० ॥ ११ ॥ वारबार करी बिनती, तब राजा मानी बातरे । लाला । आ भोजनरी त्यारी करै, करण कंथनी घातरे लाला ॥ जो० ॥ १२ ॥ मुख ऊपर मीठों लवे, बोले वोहली प्रीतरे लाल । आ अन्तर घात खिले घणी, आदुसमण केरी बात रे लाला ॥ जो० ॥ १३ ॥ कुण माता पिता नें कासणी, वले सजन सगानें भाय रे । ए दुसमण कपड़ा डोलरा कर्म उदै हुवा आयरे ॥ जो० ॥ १४ ॥ पहिलो सगपण पिउ तणो, दूसरो बारे व्रत धारो रे । तीजो तपसी वैरागियो, राणी करुणा न आणी लिगारी रे ॥ जो० ॥ १५ ॥ श्रावक व्रत लीधां पछे, तप तेरे बेला कीधरे । एक कम चालीस दिन, राजा जश रा नगारा दीध रे लाला ॥ जो० ॥ १६ ॥

दियो आय रे ॥ जो० ॥ ११ ॥ राय प्रदेशी क्षम्या वा
घणी रे, रह्यो ज रूड़े धर्म नें ध्यान रे । इसड़ो तो
क्षमा साधु करे रे, तो सही पामे केवल ज्ञान रे ॥
जो० ॥ १२ ॥ तेरमा बेला नो छो पारणो रे, आलोई
निन्दी निशल्य थाय रे । काल अवसर मरण लही
करी रे, श्रो सूरियाभ देव हुवो छे जायरे ॥ जो० ॥
॥ १३ ॥

इति प्रदेशी राजा की सिंध समाप्त

श्री श्री १०८ श्री जीतमलजी स्वामी कृत

उपदेश की ढाल लिख्यते ।

॥ दोहा ॥

अरिहन्त देव अराधिये, निर्मल गुरु निग्रन्थ ।
धर्म जिन आज्ञा चितधरो, तत्व अमोलक तन्त ॥ १॥
मुढ मिथ्यात मन मोहिया, थापे हिन्सा धर्म ।
वान्दे निर्गुण देव गुरु, ते भूल्या अज्ञानी भ्रम ॥ २॥
कहै धर्म ने कारणे, प्राण हण्यां नहीं पाप ।
देव गुरु कारणे हण्या, आज्ञा दे जिन आप ॥ ३॥
इम कही विरुद्ध प्ररूपता, नहीं आणे मन लाज ।
देवल प्रतिमा कारणे, करे अनेक अकाज ॥ ४॥
हिंसा धर्मी जीव ना, भाख्या फल भगवन्त ।
ठाम ठाम सूत्र मध्ये, ते सुणजो करि खंत ॥ ५॥

॥ ढाल ॥

पृथ्वी हणि देवल प्रतिमा करावे, धर्म हेते जीव मारे । त्यांने मन्द बुद्धि कह्या दशमें अंगे, वले पहले

हो आस्रव द्वार रे । कुमत्यां थे हिंसाधर्म काइ थापी॥
ए आंकड़ो ॥ समण माहण कोई हिंसा प्ररूपे, छेदन
भेदन सोग । सूयगडांग अठारमें आख्यो, बालहारो पड़-
सी विजोगरे ॥ कु० ॥२॥ आचाराङ्गरे चौथे अध्ययन,
दूजे उदेशे प्रमाण । धर्म हेत हणया दोष नहीं छे, आ
अनारजरी वाणरे ॥ कु० ॥ ३ ॥ आचाराङ्गरे चौथे
अध्ययन, दूजे उदेशे जाणो । धर्म हेत कोई जीव नहीं
हणनो, ओ आरज वचन प्रमाणोरे ॥ कु० ॥ ४ ॥ जीव
जन्म मरण मुकाव्या, पामे अहित अबोध । आचाराङ्गरे
पहले अध्ययन, पहले उदेशे सोधरे ॥ कु० ॥५॥ आचा-
राङ्गरे चौथे अध्ययन, पहलो उदेशो पिछाणो । धर्म हेत
जीव नहीं हणनो, तीन काल जिन वाणोरे ॥ कु० ॥
६ ॥ प्रश्न व्याकरणरे पांचमें अध्ययन, प्रतिमा परिग्रह
में चाली । परिग्रह सेवी धर्म कहीने, कुमति हिये कांई
घाली रे ॥ कु० ॥७॥ तीन मनोरथ श्रावक ना चाल्या,
ठाणांग तीजे ठाणे । आरम्भ परिग्रह छोड़ण रो भावना
ते सेव्यां धर्म किम जाणेरे ॥ कु० ॥ ८ ॥ दशवैका-
लिक धर्म अहिंसा, दया ज्ञान रो सारो । सूयगडांग
पहले अध्ययन, चौथे उदेशे मझारो रे ॥ कु० ॥ ६
अठाइसमें उतराध्ययन में, मोक्ष ना मारग अमोल ।
देवगुरु धर्म मोलरा थापो, आहीज मोटी पोलरे ॥ कु

१० ॥ धर्म ठिकाणे जीव हणो तो, दया किसी ठोड़
ालो। कुगुरां ना बहकाया आतमने, कांय लगावो
कालोरे ॥ कु० ॥११॥ उतराध्ययनरे बारमें अध्ययन,
तीर्थ शील बतायो। थे शतुंजादिक तीरथ थापे,
ओई पिण झूठ चलायोरे ॥ कु० ॥ १२ ॥ ज्ञान दर-
शण रा जतन करे ते, यात्रा कही सुखदायो। ज्ञाता
सूत्र पांचमें अध्ययने तो थाने तो खबर न कायो रे ॥ कु०
॥ १३ ॥ इम ही महावीर सोमल ने, यात्रा भगवती में
भाखी। शतक अठारमें दशमें उद्देशे, चारित्र जतन
ते यात्रा दाखीरे ॥ कु० ॥ १४ ॥ ठाम ठाम तीर्थ यात्रा
अमोलक जिन कह्यो आगम माहिं। ते तीर्थ यात्रा
थांसूं करनी न आवे, तिण सूं मांडी वोकलाईरे ॥
कु० ॥ १५ ॥ शत्रुंजय ने पर्वत कह्यो जिनेश्वर, पिण
तीर्थ न कह्यो लिगारो। अन्तगढ़ ज्ञाता सूत्र माहीं,
देखो पाठ उघाड़ोरे ॥ कु० ॥ १६ ॥ तीर्थ कहे तिण
माथे पग देवो, तिण पर चढ़ो जूती सुधा। वले मल
मूत्र तिण ऊपर न्हाखो, त्यांरे लेखे ते पूरा ऊंधारे ॥
कु० ॥ १७ ॥ मुख सूं कहे मैं चूर्णी टीका मानां, वले
माना आगम पेताली। ते पिण बोल्यां रो नहीं ठिकाणो
त्यांरे कर्म तणी रेख कालीरे ॥ कु० ॥ १८ ॥ महा-
निशीथ रे अध्ययन पांच में, कमलप्रभा कह्यो सोय।

सावज पाप ना सर्व जिनालय, त्याने मुढ न माने कोय रे ॥ कु० ॥ १६ ॥ मिथ्यातपणे द्रोपदी प्रतिमा पूजी, एक थयां समयक्त पाई । गन्ध हस्त आचारज कह्यो छे, ओघ निर्युक्ति वृत्ति मांईं रे ॥कु० ॥ २० ॥ अभवी संगमादिक प्रतिमा पूजे, तेहिज प्रतिमा सुर्याभ पूजे । ते जीत व्यवहार लौकिक रीत छे, ओघ निर्युक्ति वृत्ति न सूझे रे ॥ कु० ॥ २१ ॥ भगवन्त ने वंदतां तथा दीक्षा लेतां, कह्यो पेच्चा हियाए सुहाए लायो । तथा परलोक हियाए सुहाए, राय प्रसेणि भगवती मांयोंरे ॥ कु० ॥ २२ ॥ प्रतिमा पूजा तथा लाय सूं धन काढतां कह्यो पच्छा हियाए सुहाए। राय प्रसेणी भगवती माहिं, तिहां पेच्चा पाठ कह्यो नाहींरे ॥ कु०॥ २३ ॥ प्रतिमा, पूजे लाय सूं धन काढे, तिहां पेच्चा हियाए नहीं कांहीं । भगवन्त ने वान्दतां दीक्षा लेतां, किहांई पच्छा पाठ छे नाहीं रे ॥ कु० ॥ २४ ॥ पच्छा हियाए ते इणभव मांहि लौकिक खाते संगलोक । पेच्चा हियाए ते परभव मांही, लोकोत्तर खाते तहतीक रे ॥ कु० ॥ २५ ॥ कोई कहे जिन प्रतिमा पूजे, ते तो निसेस्साए पाठ जोय जाणे। तो खंधक ने अधिकारे लाय सूं धन काढे, त्यां पिण निस्सेसाए पाठ पिछाणोरे ॥ कु० ॥ २६ ॥ पच्छा पाठ लारे निस्सेसाए कह्यो छे, ते इण

भव मांहि द्रव्य मोक्ष जोय। लाय थकी धन बारे काढ्यां; दरिद्र ते मुकावो होयरे ॥ कु० ॥ २७ ॥ राज बेसतां सूर्याभ प्रतिमा पूजी; त्यां पिण पच्छा पाठ लारे निसेस्साए। ते पिण हुवा भव में; विघ्न मेटण ने मोक्ष सुहायरे ॥ कु० ॥ २८ ॥ तुंगीया नगरी ना श्रावकां पिण, किया विघ्न मेटण ने द्रव्य मंगलीक। सरसव द्रोव दही ने अक्षत, तिम सूर्याभ कियो लोकीक रे ॥ कु० ॥ २९ ॥ भगवन्त ने वांदतां दीक्षा लेतां, पेच्चा परलोए लारे निसेस्साए। तो लोकोत्तर खाते परलोक नो मोक्ष; यो जाणो कर्म थकी मुकायरे ॥ कु० ॥ ३० ॥ भसम ग्रह उतरिया पाछे, समण निग्रंथ नी उदे २ पूजा थाय। ए प्रत्यक्ष पाठ कह्यो सूत्र में; ते पिण बिकलाने खबर न कायरे ॥ कु० ॥ ३१ ॥ सिंघपट्टो कियो जिन बल्लभ खरतरो; लिणतीर्थ यात्रा उडाई। जिन प्रतिमा थापे करि पेट भराई; भसम ग्रह प्रताप बताईरे ॥ कु० ॥ ३२ ॥ इत्यादिक प्रकरण टीका में; बोल कह्या छे अनेक। थे कहो प्रकरण टीका म्हे मानां; पिण बोल नहीं मानो एकरे ॥ कु० ॥ ३३ ॥ जद कहे प्रकरण टीका नहीं मानो तो, थांरो नाम लेवो किणन्याय। सूत्र नो उत्तर कहूं हूं ऊपरी, ते सुणजो चितलायरे ॥ कु० ॥ ३४ ॥ सुखदेव ने कह्यो थावरचा पुत्र, सोमल

ने कह्यो महावीर । थांरे ब्राह्मण सम्बन्धियां
कह्यो छे, कुलथा मास मां भेद उदाररे ॥ कु० ॥ ३५ ॥
ब्राह्मण रा मत महावीर न माने, पिण त्यांरे
साख दिखाई । ज्यूं थाने प्रकरण री पिण साख बताई
भव जीव समझावण ताई ॥ कु० ॥ ३६ ॥ मुख सूं कहे
प्रकरण सहु मानां, तो इतरा बोल न मानो किण
लेखे । अभिन्तर आंख हिया री फूटी, आप भाख्यो
सामो नहीं देखरे ॥ कु० ॥ ३७ ॥ वले मुख सूं कहे
जिन आज्ञा मानां, पिण आज्ञा री नहीं ठीक । आज्ञा
रो नाम लेई झूठ बोले, ओ प्रतच पाषंडी कर ॥ कु०
॥ ३८ ॥ सूर्याभ ने वांदन री आज्ञा, पिण नाटकरी
आज्ञा नहीं दीध । मन माहिं नाटक ने नहीं अनु-
मोद्यो, रायप्रसेणि प्रसिद्धरे ॥ कु० ॥ ३६ ॥ वर्द्धमान
जिन आगे नाटकरी, आज्ञा न दीधी तहतीक । तो
प्रतिमा आगे आज्ञा किम देशी, ओ तो पिण आंधां
ने नहीं छे ठीकरे ॥ कु० ॥ ४० ॥ आज्ञा आज्ञा कर
रह्या ए मूर्ख, आज्ञा रा मुढ अजाण । भोलां ने भरम
में पाड बिगोया, ते पिण डूबे कर कर ताणरे ॥ कु०
॥ ४१ ॥ जिन आज्ञा मांहि धर्म कह्यो, जिन आज्ञा
बारे नहीं अंश । ए समयक्त रा मूल मुढ आजाण,
छण रह्या जीव निधंसरे ॥ कु० ॥ ४२ ॥ कही कही ने

कितरोएक कहुं, आज्ञा दया एक जाणो। पिण आज्ञा रो निरणो करे न्याय वादी, तो पामें पद निरवाणोरे ॥ कु० ॥ ४३ ॥ आज्ञा बारे कहे धर्म अज्ञानी, आज्ञा मांही पाप मन भ्रान्त। द्रव्य लिङ्गी साधां रे भेष माहीं, ते पिण हिंसा धर्मी री पांतरे ॥ कु० ॥ ४४ ॥ मुख सूं कहे म्हे दया धर्मी छां, चाले हिंसा धर्म री चाल। जीव खवायां में धर्म प्ररूपे, तो मोह मिथ्यात में लालरे ॥ कु० ॥ ४५ ॥ इव्रत सेवायां में धर्म प्ररूपे पाप सेव्यां कहे पुण्य। त्यां ने ही हिंसा धर्मी जाणो, त्यांरो श्रद्धा आचार जबूनरे ॥ कु० ॥ ४६ ॥ इम सांभल उत्तम नर नारी, हिंसाधर्मी नो संग न कीजे। दया धर्मी जिन आज्ञा में चाले, त्यांरो सिक्को शिर पर धर लीजेरे ॥ कु० ॥ ४७ ॥ सम्वत अठारह से नव्वे वर्षे, द्वितीय भाद्रवा सुद पांचम बुधवारो। हिंसा धर्मी ओलखावण काजे, जोड़ कीधी बालोतरे शहर मझारो रे ॥ कु० ॥ ४८ ॥

ढाल पार्श्वचन्द्र सूरि कृत

दुलहो नर भव पामणों जीवने, दुलहो श्रावक कुल अवतारो। गुणवन्त गुरुनों संग छै दोहिलो ते पामीनें मत हारोरे॥ प्राणी जीव दया व्रत पालो॥ गुरु मुख सांभल आगम वाणी। छे परमार्थ संभालोरे प्राणी जीव दया वृत पालो॥ १॥ आस्रव प्रति पक्ष संवर बोल्यो, तेहनो रहस्य विचारो, आरम्भ आस्रव संजम सम्बर, इमजाणी जीव म मारोरे॥ प्राणी जी० ॥ २॥ जीव सहुते जीवणो वंछे, मरणो न वंछे कोई आपणो दुख के जिम छै परनें, हिये विमासी जोईरे॥ प्राणी जी०॥ ३॥ अंग उपाङ्ग शस्त्र धारा अणी सूं, नख चख छेदे भेदे कोई। जेहवी वेदनां मनुष्यने होवे तेहवी एकेन्द्रीनें होईरे॥ प्राणी जी०॥ ४॥ जोजरा पुरुषने बलवन्त तरुणो, देवे मुष्ठि प्रहारो। जेदुःख वेदे तेहवो एकेंद्रिनें, लीधां हाथ मझारोरे॥ प्राणी जी०॥ ५॥ समकित बिन गज भव सुसला री, दया चोखे चित पाली। प्रति संसार कियो तिणठासें, मेघकुंमर हुयो दुखटालोरे॥ प्राणी जी०॥ ६॥ अभयदान दानां

मांहि मोटो, वली दान सुपात्रे दाख्यो । आगम सांभलने जिनमत जोवो, मूल दयाधर्म भाख्योरे ॥ प्राणी जी० ॥ ७ ॥ लोह शिला ज्यो तिरे महोदधि, कदा पश्चिम ऊगे भाण । सहज अग्नि पण शीतल होवे, तोही हिंसा में धर्म म जाणरे ॥ प्राणी जी० ॥ ८ ॥ अग्नि सींचीनें कमल वधारे, चोर धोवा ने काढो आणे । ज्यूं कुगुरु प्रसंगे मूरख मानव, जीव हणे धर्म जाणेरे ॥ प्राणी जी० ॥ १० ॥ आगम वेद पुराण कुरान में कह्यो दया धर्म सारो । वलि जिनजी रा वचन सांचा जाणो तो, छः काय जीवांनें मत मारोरे ॥ प्राणी जी० ॥ ११ ॥ अर्थ अनर्थ धर्म जांणीने, जीव हणे मन्द बुद्धि । जिण धर्म काजे छः काय हणे त्यांरी, श्रद्धा घणी छे उंधीरे ॥ प्राणी जी० ॥ १२ ॥ सूईरे नाके सींधडो पोवे, ते किम आगो पेसे । हिंसा मांही धर्म प्ररूपे, ते साखो साख न बेसेरे ॥ प्राणी जी० ॥ १३ ॥ पिता बिना पुत्र उपन्नो, मा बिन बेटो जाणो । यों हिंसामें धर्म प्ररूपे, यो म्हने अचरिज आयोरे ॥ प्राणी जी० ॥ १४ पार्श्वचन्द्र सूरि भणे गुण पदे, आज्ञां सहित करुणा पाले । ते नर दुर्गति ना दुखटाले ज्ञान कला उजवालेरे ॥ प्राणी जी० ॥ ॥ १५ ॥

चरन कमल चित नित नमुं, प्रणमुं शिर नामी। सावथी नगरी पिता मात लच्छण अवगाहना। वर्ण आ-ऊखे कुँवर पदे, तपस्या प्रमाणा। चारित्र तप प्रभु गुणनिला है, छद्मस्थ केवल नाण। तीर्थ गणधर केवली जिन शासण प्रमाण ॥१॥ देव लोक दशमें बीस सागर पूरण थिती पाये। कुण्डलपुर नगरी चवी, श्रीजिनवर आये। पिता सिद्धार्थ पुत्र, माता त्रसलादे नंदा। ज्यांरी कुक्षे अवतर्या, श्री वीर जिणन्दा। ज्यांरे चरणे लंछन सिंहनो है, अवगाहना कर सात। तन कञ्चन कर शोभता, ले प्रणमु जगनाथ ॥ २ ॥ बहोतर वर्ष नो आउखो, पायो सुखकारी। तीस वर्ष लग कुंवर पदे रह्या अभिग्रह धारी। सुमेर गिरि पर इन्द्र चोंठ मिल ओछव कीधा। अनन्त वली अरिहन्त जाण, नाम प्रभु वीरज दीधा। ज्यांरी मात पिता शुद्ध गत लह्या है, पछे लियो संयम भार। तपस्या कीधी निरमली, साडी बारे वर्ष मझार ॥ ३ ॥ नव चौमासी तपकियो एक कियो छमासी। पांच दिन ऊणो अभिग्रहो, छमास चौमासी। एक एक मासी तप कियो, प्रभु द्वादश विरियां। बोहतर पख छमास दोय विरिया कीधा तीन अढाइ दोय तीन है डेड दोय मासी दोय। भव सोभद्र महाभद्र तपकियो, इम सोला दिन होय ॥ ४ ॥

भिक्षु नी पड़िमां अष्ट भक्त नी द्वादश कीनी। दोयसे ने गुण तीस छठ तप गिणती लीनी। इग्यारे वर्ष छ मास पचीस दिन तपस्या कीरा इग्यारे मास उगणिस दिवस हे पारणा भलेरा। इणविध प्रभुजी तप कियो हे, पछे उपन्यो केवल नाण। तीस वर्ष जिण विचरिया, ते प्रणमुं वर्द्धमान॥५॥ प्रथम अष्ट दूजो अष्ट दोय चंपा भणिये। चतुर्दश नालंदे पाहड छः मथुरा भणिये। भद्दलपुरना सब मिल अड़तीसज गिणिये। एक आलम्बी एक सावथी हे एक अनार्यज जाण। चर्म चौमासो पावापुरी, त्यां पहुंता निरवाण॥६॥ ज्यांरे मुनिवर चवदे सहस्र सहंस छतीसे आर्जिका। एक लक्ष गुणसठ सहंस श्रावक तीन लाख श्राविका। अधिक अठारा सहंस इग्यारे गण धरनी माला। गौतम स्वामी बड़ा शिष्य सती चन्दन बाला। ज्यांरे केवल ज्ञानी सात सो हे प्रभु पहुंता निरवाण। शासण वरते स्वाम नो, इकवीस सहस वर्ष परमाण॥७॥ पुरव तीन से जाण, तेरेसे अवधिज ज्ञानी। मनपर्यव ज्ञानी पांच सात से केवल ज्ञानी। वैक्रे लब्ध ना धार सात से मुनिवर कहिये। वादी चारसे जाण, कि चरचा भिन्न २ लहिये। एका एक संजम लियो हे, प्रभु एका एक निरवाण। चोष्ट वर्ष लग

चालियो हे दर्शण केवल नाण ॥ ८ ॥ बारे नरवर एक वृषभ, वृषभ दश हयवर । दश हयवर एक मेष, मेष पांच से गज गयवर । पांच से गजहर एक सिंह, सिंह दोय सहंस अष्टापद । वीस लाख अष्टापद एक बासुदेव, दोय बासुदेव एक चक्राहद । कोड़ चक्रिया एक सुर गण्यो हे कोड़ सुरां एक इन्द्र । इन्द्र अनन्ता सेना नमः चिटी आगुली अग्र जिणंद ॥ ९ ॥ आप तणाजो प्रभु गुण अनन्ता कोई पार न पावे । लब्ध प्रभावे कोड़ कायो कर शीश बनावे। श्री श्री कोड़ा कोड़ मदन गुण करे श्रावक ना कोड़ी कोड़ा सागर लगे हे, करु ज्ञान गुण सार । आप तणा जी प्रभु गुण अनन्ता मोसे कहतां न आवे पार ॥ १० ॥ चवदे राज लोक वले वालुनी कणिया । सर्व जीवनी रोम राय, नहीं जाये गिणिया । एक एक बालुड़ो अनंत अनंत गुण करे अनंता । पूज्य प्रसादे कहे लालचंद नहीं आवे अंता । सम्वत अठारे बासठे हे मास मृगसिर अेरी छन्द । रामपुरे गुण गाविया । धन्य २ वीर जिणन्द ॥ ११ ॥

॥ ढाल उपदेशिक ॥

मति ताक हे नार बिराणी ॥ ए आंकड़ी ॥ पर-नारी हे काली नागण के विष वेल समाणी । तेज

गुणवन्त नें बालण छाणी ॥ मति० हेरी ए नर्क तणी निसाणी ॥ मति० ॥ १ ॥ रावन राय त्रिखण्ड नो माहिब, सीता हरि घर आणी । राम चढ्या दाल बा-दल लेकर मार्यो हे सारंग पाणी । कथा आगम मांहे आणी ॥ मति० ॥ २ ॥ पद्मोतर निज लाज गमाई, किचक नीच कहाणी । मनोरथ मुओ मैणरह्या वश, अपजशनो अहनाणी । जग मांहे प्रगट कहाणी ॥ मति० ॥ ३ ॥ गौ ब्राह्मण नें बाल हत्या, रूष नार हत्या वली जाणी । तेह थी पाप अधिक पिण लागे, भाख्यो केवल नाणी । अनन्त दुःखारी खाणी ॥ मति० ॥ ४ ॥ रत यत्न कर शीयल आराधो, छोडी ने कुमति प्राणी । मुक्त महेल नों सहल अचल सुख, मुक्त रमण निसराणी । कहु वीर जिणंदरी वाणी ॥ मति० ॥ ५ ॥ साल छिया सिय महा मन्दिर में, शील कथा सुबखाणी । शील विनां सहु जन्म अख्यारथ, क्या राजा क्या राणी । शील जश उत्तम प्राणी ॥ मति० ॥ ६ ॥

अथ पच्चीस बोल

१ पहिले बोले गति च्यार ४

नर्कगति १ तिर्यंचगति २ मनुष्यगति ३ देव-
गति ४

२ दूजे बोले जातिपांच ५

एकेन्द्री १ बेइन्द्री २ तेइन्द्री ३ चोइन्द्री ४
पंचेन्द्री ५

३ तीजे बोले काया छव ६

पृथ्वीकाय १ अपकाय २ तेउकाय ३ बाउ-
काय ४ बनस्पतिकाय ५ त्रसकाय ६

४ चौथे बोले इन्द्री पांच ५

श्रोतइन्द्री १ चक्षु इन्द्री २ घ्राणइन्द्री ३ रस-
इन्द्री ४ स्पर्शइन्द्री ५

५ पांचमें बोले पर्याय छव ६

आहारपर्याय १ शरीरपर्याय २ इन्द्रीय पर्याय
शासोश्वासपर्याय ४ भाषापर्याय ५ मनपर्याय

६ छठे बोले प्राण १०

श्रोतेंद्री बलप्राण १ चक्षूइन्द्रीबलप्राण २ घ्राण इन्द्री बलप्राण ३ रसेन्द्रीबलप्राण ४ स्पर्शइन्द्री बलप्राण ५ मनबलप्राण ६ बचनबलप्राण ७ काया बलप्राण ८ श्वासोश्वास बलप्राण ९ आऊखोबल प्राण १०

७ सातमें बोले शरीर पांच ५

औदारिक शरीर १ वैक्रियशरीर २ आहारिक शरीर ३ तेजसशरीर ४ कार्मणशरीर ५

८ आठवें बोले जोग पंद्राह १५

४ च्यारमनका

सत्यमनजोग १ असत्यमनजोग २ मिश्रमन जोग ३ व्यवहारमनजोग ४

४ च्यारबचनका

सत्यभाषा १ असत्यभाषा २ मिश्रभाषा ३ व्यवहार भाषा ४

७ सातकायाका

औदारिक १ औदारिक मिश्र २ वैक्रिय ३ वैक्रिय मिश्र ४ आहारिक ५ आहारिक मिश्र ६ कार्मण जोग ७

९ नवमें बोले उपयोग बारह १२

५ पांच ज्ञान

मतिज्ञान १ श्रुतिज्ञान २ अवधिज्ञान ३ मनप-
र्यवज्ञान ४ केवलज्ञान ५

३ तीन अज्ञान

मतिअज्ञान १ श्रुतिअज्ञान २ विभङ्गअज्ञान ३

४ च्यार दर्शन

चक्षुदर्शण १ अचक्षुदर्शन २ अवधिदर्शण ३
केवल दर्शण ४

१० दशमें बोले कर्म आठ ८

ज्ञानवर्णी कर्म १ दर्शणावर्णी कर्म २ वेदनी
कर्म ३ मोहणी कर्म ४ आयुष्य कर्म ५ नामकर्म
६ गोत्रकर्म ७ अंतरायकर्म ८

११ इग्यारामें बोले गुणस्थान चौदाह १४

१ पहिलो मिथ्याती गुणस्थान।
२ दूजो सास्वादान समदृष्टि गुणस्थान।
३ तीजो मिश्र गुण स्थान।
४ चौथो अव्रती समदृष्टि गुणस्थान।
५ पांचमो देशबिरती श्रावक गुणस्थान।

६ छट्ठो प्रमादी साधु गुणस्थान ।

७ सातवों अप्रमादी साधु गुणस्थान ।

८ आठवों नियट बादर गुणस्थान ।

९ नवमो अनियट बादर गुणस्थान ।

१० दशमो सुक्षम संप्राय गुणस्थान ।

११ इग्यारहमूं उपशांति मोह गुणस्थान ।

१२ बारमूं क्षीण मोहनी गुणस्थान ।

१३ तेरमूं संयोगी केवली गुणस्थान ।

१४ चौदसूं अयोगी केवली गुणस्थान ।

१२ बारमें बोले पांच इन्द्रियांकी तेबीस विषय

श्रोतइन्द्रीकी तीन विषय

जीव शब्द १ अजीव शब्द २ मिश्र शब्द ३

चक्षु इन्द्रीकी पांच विषय

कालो १ पीलो २ धोलो ३ रातो ४ नीलो ५

घ्राण इन्द्रीकी दोय विषय

सुगन्ध १ दुर्गंध २

रस इन्द्रीकी पांच विषय

खट्टो १ मीठो २ कड़वो ३ कसायलो ४ तीखो ५

स्पर्श इन्द्रीकी आठ विषय

हलको १ भारी २ खरदरो ३ सुहालो ४ लूखो ५ चोपड़्यो ६ ठगडो ७ उन्हो ८

१३ तेरमें बोले दश प्रकारका मिथ्याती

१ जीवनें अजीव श्रद्धह ते मिथ्याती
२ अजीवनें जीव श्रद्धह ते मिथ्याती
३ धर्मनें अधर्म श्रद्धह ते मिथ्याती
४ अधर्मनें धर्म श्रद्धह ते मिथ्याती
५ साधुनें असाधु श्रद्धह ते मिथ्याती
६ असाधुनें साधु श्रद्धह ते मिथ्याती
७ मार्गनें कुमार्ग श्रद्धह ते मिथ्याती
८ कुमार्गनें मार्ग श्रद्धह ते मिथ्याती
९ मोक्षगयांनें अमोक्षगया श्रद्धह ते मिथ्याती
१० अमोक्षगयांनें मोक्षगया श्रद्धह ते मिथ्याती

१४ चौदमें बोलें नवतत्वको जाण पणों तींका

११५ एकसो पन्द्रराह बोल

१४ चौदाह जीवका—

सुक्ष्म एकेन्द्रीका दोय भेदः—

१ पहिलो अपर्याप्तो २ दूसरो पर्याप्तो

बादर एकेन्द्रीकादोय भेदः—

३ तीजो अपर्याप्तो ४ चौथो पर्याप्तो

बेइन्द्रीका दोय भेदः—

५ पांचमूं अपर्याप्तो ६ छट्ठो पर्याप्तो

तेइन्द्रीका दोय भेदः—

७ सातमूं अपर्याप्तो ८ आठमूं पर्याप्ता

चोइन्द्रीका दोय भेदः—

९ नवमूं अपर्याप्तो १० दशमूं पर्याप्तो

असन्नी पंचेन्द्रीका दोय भेदः—

११ इग्यारमूं अपर्याप्तो १२ बारमूं पर्याप्तो

सन्नी पंचेन्द्रीका दोय भेदः—

१३ तेरमूं अपर्याप्तो १४ चौदमूं पर्याप्तो

१४ चौदे अजीवका भेदः—

धर्मास्ति कायका ३ तीन भेदः—

खंध, देश, प्रदेश,

अधर्मास्ति कायका ३ तीन भेदः—

खंध, देश, प्रदेश,

आकाशास्ति कायका ३ तीन भेदः—

खंध, देश, प्रदेश,

कालको दशमूं भेद (ए दश भेद अरूपी के)

पुद्गलास्ति कायका ४ च्यार भेदः—

खंध, देश, प्रदेश, परमाणु

९ पुन्य नव प्रकारे

अन्नपुन्य १ पाणपुन्य २ लेणपुन्य * ३ सयण-

---

* लेण=जागां जमीनादिक ।

पुन्य * ४ वस्त्रपुन्य ५ मनपुन्य ६ वचनपुन्य ७
कायापुन्य ८ नमस्कारपुन्य ९

१८ पाप अठारे प्रकारे:—
प्राणातिपात १ मृषावाद * २ अदत्तादान ३
मैथुन ४ परिग्रह ५ क्रोध ६ मान ७ माया ८
लोभ ९ राग १० द्वेष ११ कलह १२ अभ्या-
ख्यान १३ पैशुन्य * १४ परपरिवाद १५ रति-
अरति १६ मायामृषा १७ मिथ्यादर्शन शल्य १८

२० बीस आस्रवका:—
मिथ्यात्व आस्रव १ अव्रत आस्रव २ प्रमाद
आस्रव ३ कषाय आस्रव ४ जोग आस्रव ५
प्राणातिपात जीवको हिंसा करैते आस्रव ६
मृषावाद झूठ बोलैते आस्रव ७ अदत्तादान
चोरी करैते आस्रव ८ मैथुन सवैते आस्रव ९
परिग्रह राखे ते आस्रव १० श्रुत इन्द्री मोकली
मेले ते आस्रव ११ चक्षुइन्द्री मोकली मेले ते
आस्रव १२ घ्राण इन्द्री मोकली मेलेते आस्रव
१३ रस इन्द्री मोकली मेलेते आस्रव १४ स्पर्श-
इन्द्री मोकली मेलेते आस्रव १५ मनप्रवर्तावे ते

* सयन=पाट बाजोटा दिक।
* वाद=बोलना।
* पैशुन्य=चुगली।

आस्रव १६ वचनप्रवर्तावेते आस्रव १७ काया-प्रवर्तावे ते आस्रव १८ भण्डोपगरणमेलता अज-यणा * करै ते आस्रव १९ सुई कुसाग्रमात्र सेवे ते आस्रव २०

२० बोस संवरका:—

सम्यंक् ते संवर १ व्रत ते संवर २ अप्रमाद ते संवर ३ अकषाय संवर ४ अजोग संवर ५ प्राणातिपात न करे ते संवर ६ मृषावाद न बोले ते संवर ७ चोरी न करे ते संवर ८ मैथुन न सेवेते संवर ९ परिग्रह न राखे ते संवर १० श्रुत इन्द्री वश करे ते संवर ११ चक्षुइंद्री वश करे ते संवर १२ घ्राणइन्द्री वश करे ते संवर १३ रसइन्द्री वश करे ते संवर १४ स्पर्शइंद्री वशकरे ते संवर १५ मन वशकरे ते संवर १६ वचन वश करे ते संवर १७ काया वश करे ते संवर १८ भण्डउपगरणमेलतां अजयणानकरे ते संवर १९ सुई कुसाग्र न सेवे ते संवर २०

१२ निरजरा बारे प्रकारे:—

अणसण * १ उणोदरी * भिक्षाचरी ३ रसपरि-

---

* अजयणा=यत्नां। * असमण=उपवासादिक।

* उणोदरी=कमखानां।

त्याग ४ कायाक्लेश ५ प्रतिसंलेषना ६ प्रायश्चित्त ७ विनय ८ वेयाबच्च ६ सिज्झाय १० ध्यान ११ विउसग्ग* १२

४ बंध च्यार प्रकारे:—

प्रकृतिबंध १ स्थितिबंध २ अनुभागबन्ध ३ प्रदेशबंध ४

४ मोक्ष च्यार प्रकारे:—

ज्ञान १ दर्शण २ चारित्र ३ तप ४

१५ पंदरमें बोले आत्मा आठ ८

द्रव्य आत्मा १ कषाय आत्मा २ योग आत्मा ३ उपयोग आत्मा ४ ज्ञान आत्मा ५ दर्शण आत्मा ६ चारित्र आत्मा ७ वीर्य आत्मा ८

१६ सोलमें बोले दंडक चोबीस २४

१ सातनारकियां को एक दंडक

१० दशदंडक भवनपतिका:---

असुर कुमार १ नाग कुमार २ सोवन कुमार ३ विद्युत कुमार ४ अग्नि कुमार ५ दीप कुमार ६ उदधि कुमार ७ दिसा कुमार ८ वायु कुमार ६ स्तनित कुमार १०

---

* विउसग्ग=निवर्तवो।

५ पांच थावरका पंच दंडक:—

पृथ्वीकाय १ अप्पकाय २ तेउकाय ३ वायुकाय ४ बनस्पतिकाय ५

१ बेइन्द्री को सतरमों

१ तेइन्द्री को अठारमो

१ चौइन्द्री को उगणीसमों

१ तिर्यञ्च पंचेंद्री को बीसमों

१ मनुष्य पंचेंद्री को इकबीसमों

१ बानव्यंतर देवतांको बावीसमों

१ ज्योतषी देवतांको तेबीसमों

१ बेमांनिक देवतां को चौबीसमों

१७ सतरवें बोले लेश्या छः ६

कृष्ण लेश्या १ नील लेश्या १ कापोत लेश्या ३ तेजुलेश्या ४ पद्म लेश्या ५ शुक्ल लेश्या ६

१८ अठारमें बोले दृष्टि तीन ३

सम्यक् दृष्टि १ मित्थ्या दृष्टि २ सममिथ्या दृष्टि ३

१९ उगणीसवें बोले ध्यान च्यार ४

आर्तध्यान १ रौद्रध्यान २ धर्मध्यान ३ शुक्लध्यान ४

२० बीसमें बोले षट द्रव्यको जाण पणो

धर्मास्तिकायनें पांचा बोलां ओलखीजेः— द्रव्यथकी एक द्रव्य खेतथी लोक प्रमाणे काल थकी आदि अन्त रहित भावथी अरूपी गुणथकी जीव पुद्गल ने हालवा चालवा को साझ, अधर्मास्तिकायनें पांचा बोलां ओलखीजेः— द्रव्यथी एक द्रव्य खेतथी लोकप्रमाणे कालथकी आदि अन्त रहित भावथो अरूपी गुणथी थिर-रहवानों साझ। आकाशास्तिकायनें पांच बोल करी ओलखीजेः—द्रव्यथी एक द्रव्य खेतथी लोक अलोक प्रमाणे कालथी आदि अंत रहित भाव थी अरूपी गुणथी भाजन गुण। कालनें पांचा बोलां करी ओलखीजेः—द्रव्यथी अनन्ता द्रव्य खेतथी अढ़ाई द्वीप प्रमाणे कालथी आदि अन्त रहित भावथी अरूपी गुणथी वर्त्तमानगुण। पुद्गलास्तिकायनें पांच बोलकरी ओलखीजेः— द्रव्यथी अनन्ता द्रव्य खेतथी लोक प्रमाणे काल थी आदि अन्त रहित भाव थी रूपी गुणथी गले * मिले। जीवास्तिकायनें पांच बोल करी ओल-खीजेः—द्रव्यथी अनन्ता द्रव्य खेत्रथी लोक प्रमाणे

कालथी आदि अंत रहित भावथी अरूपी गुणथी चैतन्य गुण।

२१ इकवीसमें बोले राशि दोय २

जीवराशि १ अजीवराशि २

२२ बावीसमें बोले श्रावक का १२ बारे बृत

१ पहिला ब्रत में श्रावक स्थावर जीव हणवाको प्रमाण करे और त्रस जीव हालतो चालतो हणवाका सउपयोग त्याग करे।

२ दूजा ब्रत में मोटका झूठ बोलवाका सउपयोग त्याग करे।

३ तीजा ब्रत में श्रावक राजडण्डे लोकभण्डे इसी मोटकी चोरी करवाका त्याग करे।

४ चौथा ब्रत में श्रावक मर्याद उपरांत मैथुन सेवा का त्याग करे।

५ पांचमां ब्रत में श्रावक मर्यादा उपरांत परिग्रह राखवाका त्याग करे।

६ छट्ठा ब्रतके विषे श्रावक दशों दिशिमें मर्यादा उपरान्त जावाका त्याग करे।

७ सातवां ब्रतके विषे श्रावक उपभोग परिभोग का बोल २६ छबीस छे जिणारी मर्यादा उप-

रान्त त्याग करे तथा पन्दरह कर्मादानकी मर्यादा उपरांत त्याग करे।

८ आठमा व्रतकि बिषै श्रावक मर्यादा उपरांत अनर्थ दराड का त्याग करे।

९ नवमां व्रतकि बिषै श्रावक सामायकको मर्याद करे।

१० दशमां व्रतकि बिषै श्रावक देसावगासो संवरको मर्याद करे।

११ इगारमूँ व्रत में श्रावक पोषह करे।

१२ बारमूं व्रत श्रावक सुध साधु निर्ग्रंथनें निर्दोष आहार पाणी आदि चवदे प्रकार दान देवे।

२३ तेवीसमें बोले साधुजीका पंच महाव्रत

१ पहिला महाव्रतमें साधुजी सर्वथा प्रकारे जीव हिंसा करे नहीं करावे नहीं करतानें भलो जाणे नहीं मनसे बचनसे कायासे।

२ दूसरा महाव्रतमें साधुजी सर्वथा प्रकार भूठ बोले नहीं बोलावे नहीं बोलतां प्रते भलो जाणे नहीं मनसे वचनसे कायासे।

३ तीजा महाव्रतमें साधुजी सर्वथा प्रकारे चोरी करे नहीं करावे नहीं करतां प्रते भलो जाणे

नहीं मनसे वचनसे कायासे ।

४ चौथा महाव्रत में साधुजी सर्वथा प्रकारे मैथुन सेवे नहीं सेवावे नहीं सेवतां प्रते भलो जाणे नहीं मनसे बचनसे कायासे ।

५ पंचमां महाव्रत में साधुजी सर्वथा प्रकारे परिग्रह राखे नहीं रखावे नहीं राखतां प्रते भलो जाणे नहीं मनसे बचनसे कायासे ।

२४ चौबीसमें बोले भांगा ४९ गुणचास

करण ३ तीन जोग ३ तीनसे हुवे ।

करण ३ तीनका नाम—करूं नहीं कराऊं नहीं अनुमोदूं, नहीं । जोग ३ तीनका नाम—मनसा, बायसा कायसा ।

आंक ११ इग्यारेको भांगा ९:—

एक करण एक जोगसे कहणां, करूं नहीं मनसा, करूं नहीं बायसा, करूं नहीं कायसा, कराऊं नहीं मनसा, कराऊं नहीं बायसा, कराऊं नहीं कायसा, अनुमोदू नहीं मनसा, अनुमोदूं नहीं वायसा, अनुमोदूं नहीं कायसा ।

आंक १२ बाराको भांगा ९:—

एक करण दोय जोगसे, करूं नहीं मनसा बायसा, करूं नहीं मनसा कायसा, करूं नहीं बायसा कायसा, कराऊं नहीं मनसा बायसा, कराऊं नहीं मनसा कायसा, कराऊं नहीं बायसा कायसा, अनुमोदूं नहीं मनसा, बायसा अनुमोदूं नहीं मनसा कायसा, अनुमोदूं नहीं बायसा कायसा।

आंक १३ तेराको भांगा ३ तीनः—

एक करण तीन जोगसे, करूं नहीं मनसा बायसा कायसा, कराऊं नहीं मनसा बायसा कायसा, अनुमोदूं नहीं मनसा बायसा कायसा।

आंक २१ को भांगा ९:—

दोय करण एक जोगसे, करूं नहीं कराऊं नहीं मनसा, करूं नहीं कराऊं नहीं बायसा करूं नहीं कराऊं नहीं कायसा, करूं नहीं अनुमोदूं नहीं मनसा, करूं नहीं अनुमोदूं नहीं बायसा, करूं नहीं अनुमोदूं नहीं कायसा कराऊं नहीं अनुमोदूं नहीं मनसा कराऊं नहीं अनुमोदूं नहीं कायसा, कराऊं नहीं अनुमोदूं नहीं कायसा!

॥ अथ पानांकी चरचा ॥

१ जीव रूपीकि अरूपी, अरूपी किणन्याय कालो पीलो नीलो रातो धोलो ए पांच वर्ण नहीं पावे इण न्याय ।

२ अजीव रूपीकि अरूपी, रूपी अरूपी दोनूं ही छै किणन्याय धर्मास्तिकाय अधर्मास्तिकाय आकाशास्तिकाय काल ए च्यारुं तो अरूपी और पुद्गलास्तिकाय रूपी ।

३ पुन्य रूपीकि अरूपी, रूपी ते किणन्याय पुन्यते शुभ कर्म, कर्म ते पुद्गल पुद्गल ते रूपी ही छै ।

४ पाप रूपीकि अरूपी, रूपी ते किणन्याय पापते अशुभ कर्म कर्मते पुद्गल पुद्गलते रूपी ही छै ।

५ आस्रव रूपीकि अरूपी, अरूपीते किणन्याय आस्रव जीवका परिणाम छै, परिणामते जीव छै, जीव ते अरूपी छै, पांच वर्ण पावे नहीं इण न्याय ।

६ संवर रूपीकि अरूपी, अरूपी किणन्याय पांच वर्ण पावे नहीं ।

आंक ३२ बत्तीसको भांगा ३ तीन:—
तीण करण दोय जोगसें, करूं नहीं कराऊं नहीं अनुमोदूं नहीं मनसा वायसा, करूं नहीं कराऊं नहीं अनुमोदूं नहीं मनसा कायसा, करूं नहीं कराऊं नहीं अनुमोदूं नहीं वायसा कायसा।

आंक ३३ तेतीसको भांगो १ एक:—
तीन करण तीन जोगसें, करूं नहीं कराऊं नहीं अनुमोदूं नहीं मनसा वायसा कायसा

२५ पचीसमें बोले चारित्र ५

सामायक चारित्र १ छेदोपस्थापनीय चारित्र २ पडिहार विशुद्ध चारित्र ३ सूक्ष्म संपराय चारित्र ४ यथाख्यात चारित्र ५

॥ इति २५ पच्चीस बोल सम्पूर्णम् ॥

आसरी निवद्य छै अशुभ जोग सावद्य छै।

६ संवर सावद्यके निर्वद्य निर्वद्य छै ते किणन्याय कर्मा नें रोके ते निर्वद्य छै।

७ निरजरा सावद्यकें निर्वद्य निर्वद्य छै ते किण न्याय कर्म तोडवारा परिणाम निर्वद्य छै।

८ बंध सावद्यके निर्वद्य दोनूं नहीं ते किणन्याय अजीव छै इण न्याय।

९ मोक्ष सावद्यके निर्वद्य, निर्वद्य छै, सकल कर्म मूकाय सिद्ध भगवंत थया ते निर्वद्य छै।

॥ छठी तोजी आज्ञा मांहि बाहिरकी ॥

१ जीव आज्ञा मांहि के बारे, दोनूं छै ते किणन्याय, जीवका चोखा परिणाम आज्ञा मांहि छै, खोटा परिणाम आज्ञा बाहिर छै।

२ अजीव आज्ञा मांहि बाहिर, दनूं नहीं, अजीव छै।

३ पुन्य आज्ञा मांहि के बाहिर दोनूं नहीं अजीव छै इण न्याय।

४ पाप आज्ञा मांहि बारे दोनूं नहीं अजीव छै।

५ आस्रव आज्ञा मांहिके बारे, दोनूंइ छै, ते किणन्याय, आस्रव नां पांच भेद छै तिणमें

७ निर्जरा रूपीकि अरूपी अरूपी छै ते किणन्याय निर्जरा जीवका परिणाम छै पांच वर्ण पावे नहीं इण न्याय ।

८ बंध रूपीकि अरूपी, रूपी किणन्याय बंध ते शुभ अशुभ कर्म छै, कर्म ते पुद्गल छै, पुद्गल ते रूपी छै ।

९ मोक्षरूपी कि अरूपी अरूपी छै ते किणन्याय समस्त कर्मासे मुकावे ते मोक्ष अरूपीते जीव सिद्ध थया ते मां पांच वर्ण पावे नहीं इणन्याय ।

॥ लड़ी दूजी सावद्य निरवद्यकी ॥

१ जीव सावद्यकि निर्वद्य दोनूं ही छै ते किणन्याय चोखा परिणामां निर्वद्य खोटा परिणामा सावद्य छे ।

२ अजीव सावद्य निर्वद्य दोनूं नहीं अजीव छै ।

३ पुन्य सावद्य निर्वद्य, दोनूं नहीं अजीव छै ।

४ पाप सावद्य निर्वद्य, दोनूं नहीं अजीव छै ।

५ आस्रव सावद्यकि निर्वद्य, दोनूं ही छै किण-न्याय मिथ्यात्व आस्रव अव्रत आस्रव प्रमाद आस्रव, कषाय आस्रव, ए च्यार तो एकान्त सावद्य छै शुभ जोगां से निरजरा होय जिण

आसरी निवद्य छै अशुभ जोग सावद्य छै।

६ संबर सावद्यकि निर्वद्य निर्वद्य छै ते क्षिणन्याय कर्मा नें रोके ते निर्वद्य छै।

७ निरजरा सावद्यकें निर्वद्य निर्वद्य छै ते क्षिण न्याय कर्म तोडवारा परिणाम निर्वद्य छै।

८ बंध सावद्यके निर्वद्य दोनूं नहीं ते क्षिणन्याय अजीव छै इण न्याय।

९ मोक्ष सावद्यके निर्वद्य, निर्वद्य छै, सकल कर्म मूकाय सिद्ध भगवंत थया ते निर्वद्य छै।

॥ छठी तोजी आज्ञा मांहि बाहिरकी ॥

१ जीव आज्ञा मांहि के बारे, दोनूं छै ते क्षिण-न्याय, जीवका चोखा परिणाम आज्ञा मांहि छै, खोटा परिणाम आज्ञा बाहिर छै।

२ अजीव आज्ञा मांहि बाहिर, दनूं नहीं, अजीव छै।

३ पुन्य आज्ञा मांहि के बाहिर दोनूं नहीं अजीव छै इण न्याय।

४ पाप आज्ञा मांहि बारे दोनूं नहीं अजीव छै।

५ आस्रव आज्ञा मांहिके बारे, दोनूंइ छै, ते क्षिणन्याय, आस्रव नां पांच भेद छै तिणमें

मिथ्यात्व अव्रत प्रमाद कषाय ए च्यार तो आज्ञा बाहिर छे अने जोग नां दोय भेद शुभ जोग तो आज्ञा मांहि छे अशुभ जोग आज्ञा बाहिर छे।

६ संवर आज्ञा मांहि के बाहिर, आज्ञा मांहि छे ते किणन्याय कर्म रोकवारा परिणाम आज्ञा मांहि छे।

७ निर्जरा आज्ञा मांहिके बाहर, आज्ञा माहि छे ते किणन्याय कर्म तोडवारा परिणाम आज्ञा मांहि छे।

८ बंध आज्ञा मांहिके बाहर, दोनूं नहीं ते किण-न्याय, आज्ञा मांहि बाहर तो जीव हुवे ए बंध तो अजीव छे इणन्याय।

९ मोक्ष आज्ञा माहिके बाहर; आज्ञा माहि छे ते किणन्याय, कर्म मूंकाय सिद्ध थया ते आज्ञा में छे।

॥ लडी चौथी जीव अजीवकी ॥

१ जीव ते जीव छे के अजीव, जीव। ते किणन्याय सदाकाल जीवको जीव रहसी अजीव कदे हुवे नहीं।

२ अजीव ते अजीव छे के अजीव छे, अजीव छे अजी-

वको जीव किया ही कालमें हुवे नहीं।

३ पुन्य जीव छै के अजीव छै, अजीव छै ते किया-
न्याय पुन्यते शुभकर्म शुभ कर्मते पुद्गल छै पुद्गल
ते अजीव छै।

४ पाप जीव छै के अजीव छै, अजीव छै। किया-
न्याय पाप ते अशुभ कर्म पुद्गल छै पुद्गल ते
अजीव छै।

५ आस्रव जीव छै के अजीव छै जीव छै, ते किया
न्याय शुभ अशुभ कर्म ग्रहै ते आस्रव छै कर्म
ग्रहै ते जीव ही छै।

६ संवर जीवके अजीव, जीव छै ते कियान्याय
कर्म रोके ते जीव ही छै।

७ निर्जरा जीवके अजीव, जीव छै कियान्याय कर्म
तोड़ै ते जीव छै।

८ बंध जीवके अजीव छै, अजीव छै ते कियान्याय
शुभ अशुभ कर्मको बंध अजीव छै।

९ मोक्ष जीवके अजीव, जीव छै, कियान्याय समस्त
कर्म लूकावे ते मोक्ष जीव छै।

॥ लड़ी पांचवीं जीव चोरके साहूकार ॥

१ जीव चोरके साहूकार, दोनूं छै कियान्याय

चोखा परिणामां साहूकार छै मांठा परिणामां चोर छै।

२ अजीव चोरके साहूकार दोनूं नहीं किणन्याय चोर साहूकार तो जीव हुवे ये अजीव छै।

३ पुन्य चोरके साहूकार, दोनूं नहीं अजीव छै।

४ पाप चोरके साहूकार, दोनूं नहीं अजीव छै।

५ आस्रव चोरके साहूकार, दोनूं छै किणन्याय च्यार आस्रव तो चोर छै, अनें अशुभ जोग पण चोर छै शुभ जोग साहूकार छै।

६ संवर चोरके साहूकार, साहूकार छै किणन्याय कर्म रोकवारा परिणाम साहूकार छै।

७ निर्जरा चोरके साहूकार, साहूकारछै किणन्याय कर्म तोड़वारा परिणाम साहूकार छै।

८ बंध चोरके साहूकार, दोनूं नहीं अजीव छै।

९ मोक्ष चोरके साहूकार साहूकार किणन्याय कर्म सूं कायकर सिद्ध थया ते साहूकार छै।

लडी छटी जीव छांडवा जोगके आदरवा जोगकी।

१ जीव छांडवा जोगके आदरवा जोग छांडवा जोग छै किणन्याय पोते जीवनूं भोजन करे अनेरा

जीव पर ममत्व भाव न करे ।

२ अजीव छांडवा जोगके आदरवा जोग, छांडवा जोग छै किणन्याय अजीव छै ।

३ पुन्य छांडवा जोगके आदरवा जोग, छांडवा जोग छै ते किणन्याय पुन्य ते शुभ कर्म पुद्गल छै कर्म ते छांडवा ही जोग छै ।

४ पाप छांडवा जोगके आदरवा जोग, छांडवा जोग छै किणन्याय पाप ते अशुभ कर्म छै जीवनें दुखदाई छै ते छांडवा जोग छै ।

५ आस्रव छांडवा जोगके आदरवा जोग, छांडवा जोग छै किणन्याय आस्रव द्वारे जीवरे कर्म लागे छै आस्रव कर्म आवानां बारणा छै ते छांडवा जोग छै ।

६ संवर छांडवा जोगके आदरवा जोग, आदरवा जोग छै किणन्याय कर्म रोके ते संवर छै ते आदरवा जोग छै ।

७ निर्जरा छांडवा जोगके आदरवा जोग, आदरवा जोग छे किणन्याय देशथी कर्म तोडे देशथी जीव उज्जल थाय ते निर्जरा छै ते आदरवा जोग छै ।

८ बन्ध छांडवा जोगके आदरवा जोग, छांडवा

जोग छे, ते किणन्याय शुभ अशुभ कर्म नो बन्ध छांडवा जोगहो छे।

८ मोच छांडवा जोगके आदरवा जोग आदरवा जोग ते किणन्याय सकल कर्म खपावे जीव निरमल थाय सिद्ध हुवे इणन्याय आदरवा जोग छे।

॥ षटद्रव्यपरल्लडी सातमी रूपी अरूपी की ॥

१ धर्मास्ति काय रूपीके अरूपी, अरूपी किणन्याय पांच वर्ण नहीं पावे इणन्याय।

२ अधर्मास्ति काय रूपीके अरूपी, अरूपी किणन्याय पांच वर्ण नहीं पावे इणन्याय।

३ आकाशास्तिकाय रूपीके अरूपी, अरूपी किणन्याय पांच वर्ण नहीं पावे इणन्याय।

४ काल रूपीके अरूपी, अरूपी, किणन्याय पांच वर्ण नहीं पावे इणन्याय।

५ पुद्गल रूपीके अरूपी, रूपी किणन्याय पांच वर्ण पावे इणन्याय।

६ जीव रूपीके अरूपी अरूपी किणन्याय पांच वर्ण नहीं पावे इणन्याय।

॥ छव द्रव्यपरलड़ी आठमी सावद्य निर्वद्यकी ॥

१ धर्मास्ति काय सावद्यकि निर्वद्य, दोनूं नहीं अजीव छै।

२ अधर्मास्ति काय सावद्यकि निर्वद्य, दोनूं नहीं अजीव छै।

३ आकाशास्ति काय सावद्यकि निर्वद्य दोनूं नहीं अजीव छै।

४ काल सावद्यकि निर्वद्य, दोनूं नहीं अजीव छै।

५ पुद्गलास्ति काय सावद्यकि निर्वद्य, दोनूं नहीं अजीव छै।

६ जीवास्तिकाय सावद्यकि निर्वद्य, दोनूं छै खोटा परिणामा सावद्य छै चोखा परिणामा निर्वद्य छै।

॥ छवद्रव्यपर लड़ी नवमी आज्ञामांहिबाहिरको ॥

१ धर्मास्ति काय आज्ञा मांहिकि बाहर दोनूं नहीं ते किण न्याय आज्ञा मांहि बाहर तो जीव छै। अने ए अजीव छै।

२ अधर्मास्ति काय आज्ञा मांहिकि बाहिर दोनूं नहीं किणन्याय अजीव छै।

३ आकाशास्ति काय आज्ञा मांहिकि बाहिर दोनूं नहीं किणन्याय अजीव छै।

४ काल आज्ञा मांहिकि बाहिर दोनूं नहीं किण न्याय अजीव छे।

५ पुद्गल आज्ञा मांहिकि बाहिर दोनूं नहीं किण न्याय अजीव छे।

६ जीव आज्ञा मांहिकि बाहिर दोनूं छे किणन्याय निर्वद्य करणी आज्ञा मांहि छे सावद्य करणी आज्ञा बाहर छे इणन्याय।

॥छव द्रव्यपर लड़ी दशमी चोर साहूकारकी॥

१ धर्मास्ति काय चोर कि साहूकार दोनूं नहि किणन्याय चोर साहूकार तो जीव छे ए धर्मास्ति काय अजीव छे इणन्याय।

२. अधर्मास्ति काय चोरकि साहूकार दोनूं नहीं अजीव छे।

३ आकाशास्ति काय चोरकि साहूकार दोनूं नहीं अजीव छे।

४ काल चोरकि साहूकार दोनूं नहीं अजीव छे।

५ पुद्गल चोरकि साहूकार दोनूं नहीं अजीव छे।

६ जीव चोरकि साहूकार, दोनूं छे किणन्याय माठा परिणाम आसरी चोर छे चोखा परिणा[illegible] साहूकार छे।

॥ छव द्रव्यपर लड़ी इग्यारमी जीव अजीवकी ॥

१ धर्मास्ति काय जीवके अजीव, अजीव छे ।

२ अधर्मास्ति काय जीवके अजीव, अजीव छे ।

३ आकाशास्ति काय जीवके अजीव, अजीव छे ।

४ काल जीवके अजीव, अजीव छे ।

५ पुद्गलास्ति काय जीवके अजीव, अजीव, छे ।

६ जीवास्ति काय जीवके अजीव, जीव छे ।

॥ छव द्रव्यपर लड़ी बारमी एक अनेक की ॥

१ धर्मास्ति काय एक छे के अनेक, छे एक छे, किणन्याय, द्रव्यथकी एकही द्रव्य छे ।

२ अधर्मास्ति काय एक छे के अनेक छे एक छे, द्रव्यथकी एकही द्रव्य छे ।

३ आकाशास्ति काय एकके अनेक, एक छे, लोक अलोक प्रमाणे एकही द्रव्य छे ।

४ काल एक छे के अनेक छे, अनेक छे द्रव्यथकी अनन्ता द्रव्य छे इणन्याय ।

५ पुद्गल एक छेके अनेक छे, अनेक छे, द्रव्य थकी अनन्ता द्रव्य छे इणन्याय ।

६ जीव एक छे के अनेक छे, अनेक छे द्रव्यथकी अनन्त द्रव्य छे इणन्याय ।

॥ लडी तेरमी ॥

छवमें नवमेंकी चरचा ।

१ कर्मां को कर्त्ता छव द्रव्यमें कोण नव तत्वमें कोण उत्तर छवमें जीव नवमें जीव आस्रव ।

२ कर्मांको उपावता छवमें कोण नवमें कोण उ० छवमें जीव नवमें जीव आस्रव ।

३ कर्मांको लगावता छवमें कोण नवमें कोण उ० छवमें जीव नवमें जीव आस्रव ।

४ कर्मांको रोकता छवमें कोण नवमें कोण उत्तर छवमें जीव नवमें जीव संवर ।

५ कर्मको तोड़ता छवमें कोण नवमें कोण छवमें जीव नवमें जीव निर्जरा ।

६ कर्मांको बान्धता छवमें कोण नवमें कोण छवमें जीव नवमें जीव आस्रव ।

७ कर्मांको मुकावता छवमें कोण नवमें कोण छवमें जीव नवमें जीव मोक्ष ।

॥ लड़ी चौदमी ॥

१ अठारे पाप सेवे ते छवमें कोण नवमें कोण छवमें जीव नवमें जीव आस्रव ।

२ अठारे पाप सेवाका त्याग करे ते छवमें कोण नवमें कोण छवमें जीव नवमें जीव संवर निर्जरा ।

३ सामायक छवमें कोण नवमें कोण छवमें जीव नवमें जीव संवर ।

४ ब्रत छवमें कोण नवमें कोण छवमें जीव नवमें जीव संवर ।

५ अब्रत छवमें कोण नवमें कोण छवमें जीव नवमें जीव आस्रव ।

६ अठारे पापको बहरमण छवमें कोण नवमें कोण छवमें जीव नवमें जीव सम्वर ।

७ पञ्च महाब्रत छवमें कोण नवमें कोण छवमें जीव, नवमें जीव संवर ।

८ पांच चारित्र छवमें कोण नवमें कोण छवमें जीव, नवमें जीव; संवर ।

९ पांच सुमती छवमें कोण नवमें कोण छवमें जीव, नवमें जीव, निर्जरा ।

१० तीन गुप्ती छवमें कोण नवमें कोण छवमें जीव नवमें जीव, संवर ।

११ बारे ब्रत छवमें कोण नवमें कोण छवमें जीव, नवमें जीव, संवर ।

१२ धर्म छवमें कोण नवमें कोण छवमें जीव, नव

में जीव, संवर, निर्जरा ।

१३ अधर्म छवमें कोण नवमें कोण छवमें जीव,
नवमें जीव, आस्रव ।

१४ दया छवमें कोण नवमें कोण छवमें जीव,
नवमें जीव, संवर, निर्जरा ।

१५ हिन्सा छवमें कोण नवमें कोण छवमें जीव,
नवमें जीव, आस्रव ।

॥ लडी १५ पंदरमी ॥

१ जीव छवमें कोण नवमें कोण छवमें जीव,
नवमें जीव, आस्रव, संवर, निर्जरा ।

२ अजीव छवमें कोण नवमें कोण छवमें पांच
नवमें अजीव, पुन्य, पाप, बंध ।

३ पुन्य छवमें कोण नवमें कोण छवमें पुद्गल,
नवमें अजीव, पुन्य, बंध ।

४ पाप छवमें कोण ? नवमें कोण ? छवमें पुद्गल,
नवमें अजीव, पाप बंध ।

५ आस्रव छवमें कोण नवमें कोण छवमें जीव,
नवमें जीव, आस्रव ।

६ संवर छवमें कोण नवमें कोण छवमें जीव,
नवमें जीव, संवर ।

७ निर्जरा छवमें कोण नवमें कोण छवमें जीव नवमें जीव, निर्जरा ।

८ बंध छवमें कोण नवमें कोण छवमें पुद्गल, नवमें अजीव. पुन्य, पाप, बंध ।

९ मोक्ष छवमें कोण नवमें कोण छवमें जीव, नवमें जीव, मोक्ष ।

॥ लडी १६ सोलहमी ॥

१ धर्मास्ति छवमें कोण नवमें कोण छवमें धर्मास्ति, नवमें अजीव ।

२ अधर्मास्ति, छवमें कोण नवमें कोण छवमें अधर्मास्ति, नवमें अजीव ।

३ आकाशास्ति, छवमें कोण नवमें कोण छवमें आकाशास्ति, नवमें अजीव ।

४ काल छवमें कोण नवमें कोण छवमें काल, नवमें अजीव ।

५ पुद्गल छवमें कोण नवमें कोण छवमें पुद्गल, नवमें अजीव, पुन्य, पाप बंध ।

६ जीव, छवमें कोण नवमें कोण छवमें जीव, नवमें जीव,आस्रव संवर, निर्जरा मोक्ष ।

॥ लडी १७ सतरमी ॥

१ लेखण (कलम) पूठो, कागद को पानों, लकड़ी को पाटी, छवमें कोण नवमें कोण छवमें पुद्गल, नवमें अजीव।

२ पात्रो, रजोहरण, चादर चोलपट्टो आदि भण्ड उपगरण, छवमें कोण नवमें कोण छवमें पुद्गल नवमें अजीव।

३ धानको दाणों, छवमें कोण नवमें कोण छवमें जीव, नवमें जीव।

४ रूंख (वृक्ष) छवमें कोण नवमें कोण छवमें जीव, नवमें जीव।

५ तावड़ो छायां छवमें कोण नवमें कोण छवमें पुद्गल, नवमें अजीव।

६ दिन रात छवमें कोण नवमें कोण छवमें काल, नवमें अजीव।

७ श्रीसिद्ध भगवान छवमें कोण नवमें कोण छवमें जीव, नवमें जीव मोक्ष।

॥ लडी १८ अठारमी ॥

१ पुन्य और धर्म एकक दोय, दोय किणन्याय, पुन्य तो अजीव छै, धर्म जीव छै।

२ पुन्य और धर्मास्ति एक कि होय, होय, किणन्याय, पुन्य तो रूपी छै धर्मास्ति अरूपी छै।

३ धर्म और धर्मास्ति एक कि होय, होय, किणन्याय, धर्म तो जीव छै, धर्मास्ति अजीव छै।

४ अधर्म और अधर्मास्ति एक कि होय होय, किणन्याय, अधर्म तो जीव छै; अधर्मास्ति अजीव छै।

५ पुन्य अनें पुन्यवान एक कि होय होय, किणन्याय, पुन्य तो अजीव छै पुन्यवान जीव छै।

६ पाप अने पापी एककि होय होय, किणन्याय, पाप तो अजीव छै, पापी जीव छै।

७ कर्म अनें कर्मां को करता एककि होय होय, किणन्याय, कर्म तो अजीव छै, कर्मांरो करता जीव छै।

॥ लडी १९ उन्नीसमी ॥

१ कर्म जीव कि अजीव अजीव।

२ कर्म रूपीकि अरूपी रूपी छै॥

३ कर्म सावद्यकि निरवद्य, दोनूं नहीं अजीव छै।

४ कर्म चोरकि साहूकार, दोनूं नहीं, अजीव छै।

५ कर्म आज्ञा मांहिकि बाहर, दोनूं नहीं अजीव छै।

६ कर्म छांडवा जोग के आदरवा जोग, छांडवा जोग छे।

७ आठ कर्मां में पुन्य कितना पाप कितना ज्ञानावर्णी, दर्शणावर्णी, मोहनीय, अन्तराय, ए च्यार कर्म तो एकान्त पाप छे, वेदनी, नाम, गोत्र, आयु ए च्यार कर्म पुन्य पाप दोनूं हीं छे।

॥ लडी २० बीसमी ॥

१ धर्म जीव की अजीव जीव छे।

२ धर्म सावद्य के निरवद्य निरवद्य छे।

३ धर्म आज्ञा मांहि के बाहर श्री वितराग देवकी आज्ञा मांहि छे।

४ धर्म चोर के साहूकार साहूकार छे।

५ धर्म रूपी के अरूपी अरूपी छे।

६ धर्म छांडवा जोग के आदरवा जोग आदरवा जोग छे।

७ धर्म पुन्य के पाप दोनूं नहीं किणन्याय धर्म तो जीव छे पुन्य पाप अजीव छे।

॥ लडी २१ इक्कीसमी ॥

१ अधर्म जीव के अजीव जीव छे।

२ अधर्म सावद्य कै निरवद्य सावद्य छै।

३ अधर्म चोर कै साहूकार चोर छै।

४ अधर्म आज्ञा मांहि कै बाहर, बाहर छै।

५ अधर्म रूपी कै अरूपी रूपी छै।

६ अधर्म छांडवा जोग कै आदरवा जोग छांडवा जोग छै।

॥ लड़ी २२ बाइसमी ॥

१ सामायक जीव कै अजीव जीव छै।

२ सामायक सावद्य कै निरवद्य निरवद्य छै।

३ सामायक चोर कै साहूकार साहूकार छै।

४ सामायक आज्ञा मांहि कै बाहर आज्ञा मांहि छै।

५ सामायक रूपी कै अरूपी अरूपी छै।

६ सामायक छांडवा जोग कै आदरवा जोग आदरवा जोग छै।

७ सामायक पुन्यकै पाप दोनूं नहीं, किणन्याय पुन्य पाप अजीव छै, सामायक जीव छै।

॥ लड़ी २३ तेवीसमी ॥

१ सावद्य जोग कै अजीव जीव छै।

२ सावद्य सावद्य छै कै निरवद्य सावद्य छै।

३ सावद्य आज्ञा मांहि के बाहर बाहर छै।

४ सावद्य चोर के साहूकार चोर छै।

५ सावद्य रूपी के अरूपी अरूपी छै।

६ सावद्य छांडवा जोग के आदरवा जोग छांडवा जोग छै।

७ सावद्य पुन्य, के पाप दोनूं नहीं, पुन्य, पाप तो अजीव छै, सावद्य जीव छै।

॥ लड़ी २४ चोवीसमी ॥

१ निरवद्य जीव के अजीव जीव छै।

२ निरवद्य सावद्य के निरवद्य निरवद्य छै।

३ निरवद्य चोर के साहूकार साहूकार छै।

४ निरवद्य आज्ञा मांहि के बाहर मांहि छै।

५ निरवद्य रूपी के अरूपी अरूपी छै।

६ निरवद्य छांडवा जोग के आदरवा जोग आदरवा जोग छै।

७ निरवद्य धर्म के अधर्म धर्म छै।

८ निरवद्य पुन्य के पाप पुन्य पाप दोनूं नहीं; किणन्याय पुन्य पाप तो अजीव छै, निरवद्य जीव छै।

॥ लडी २५ पचीसमो ॥

१ नव पदार्थ में जीव कितना पदार्थ अने अजीव कितना पदार्थ । जीव, आस्रव, संवर निर्जरा, मोक्ष, ए पांच तो जीव छै अनें अजीव पुन्य, पाप, बंध, ए च्यार पदार्थ अजीव छै ।

२ नव पदार्थ में सावद्य कितना निरवद्य कितना। जीव अनें आस्रव ए दोय तो सावद्य निरवद्य दोनूं छै, अजीव, पुन्य पाप, बंध, ए सावद्य निरवद्य दोनूं नहीं । संवर, निजरा, मोक्ष ए तीन पदार्थ निरवद्य छै ।

३ नव पदार्थ में आज्ञा मांहि कितना आज्ञा बाहर कितना । जीव, आस्रव, ए दोय तो आज्ञा मांहि पण छै, अने आज्ञा बाहर पण छै । अजीव, पुन्य, पाप, बंध, ए च्यार आज्ञा मांहि बाहर दोनूं ही नहीं । संवर, निर्जरा मोक्ष, ए आज्ञा मांहि छै ।

४ नव पदार्थ में चोर कितना साहूकार कितनां । जीव, आस्रव, तो चोर साहूकार दोनूं हीं छै । अजीव, पुन्य, पाप, बंध ए चोर साहूकार दोनूं

नहीं, संवर, निर्जरा, मोक्ष, ए तीन साहूकार छै।

५ नव पदार्थ में छांडवा जोग कितना आदरवा जोग कितना। जीव, अजीव, पुन्य, पाप, आस्रव, बंध, ए छव तो छांड़वा जोग छै, संवर, निर्जरा, मोक्ष ए तीन आदरवा जोग छै अनें जाणवा जोग नवहीं पदार्थ छै।

६ नव पदार्थ में रूपी कितना अरूपी कितनां। जीव, आस्रव, संवर, निर्जरा, मोक्ष ए, पांच तो अरूपी छै: अजीव रूपी अरूपी दोनूं छै पुन्य, पाप, बंध रूपी छै।

७ नव पदार्थ में एक कितनां अनेक कितना। उ० अजीव टालो आठ पदार्थ तो अनेक छै, अने अजीव एक अनेक दोनूं छै, किणन्याय धर्मास्ति धर्मास्ति आकाशास्ति ये तीनूं द्रव्य थको एक एक ही द्रव्य छै।

॥ लडी २६ छवीसमी ॥

१ छव द्रव्य में जीव कितना अजीव कितना एक

२ छव द्रव्य में रूपी कितना अरूपी कितना जीव, धर्मास्ति, अधर्मास्ति आकाशास्ति, काल,ए पांच तो अरूपी छै, पुद्गल रूपी छै ।

३ छव द्रव्य में आज्ञा मांहि कितना आज्ञा बाहर कितना जीव तो आज्ञा मांहि बाहर दोनूं छै, बाकी पांच आज्ञा मांहि बाहर दोनूं नहीं !

४ छव द्रव्य में चोर कितना साहूकार कितना जीव तो चोर साहूकार दोनूं छै, बाकी पांच द्रव्य चोर साहूकार दोनूं नहीं, अजीव छै ।

५ छव द्रव्य में सावद्य कितना निरवद्य कितना एक जीव द्रव्यतो सावद्य निरवद्य दोनूं छै, बाकी पांच द्रव्य सावद्य निरवद्य दोनूं नहीं ।

६ छव द्रव्य में एक कितना अनेक कितना धर्मास्ति, अधर्मास्ति, आकाशास्ति,ए तीनों तो एक ही द्रव्य छै , काल, जीव, पुद्गलास्ति ए तीन अनेक छै, इणांका अनन्ताद्रव्य छै ।

७ छव द्रव्यमें सप्रदेशी कितना अप्रदेशी कितना एक काल तो अप्रदेशी छै, बाकी पांच सप्रदेशी छै,।

॥ ढाल २७ सत्ताइसमी ॥

१ पुन्य धर्म के अधर्म दोनूं नहीं, किणन्याय धर्म अधर्म जीव छै, पुन्य अजीव छै।

२ पाप धर्म के अधर्म दोनूं नहीं, किणन्याय धर्म अधर्म तो जीव छै पाप अजीव छै।

३ बंध धर्म के अधर्म दोनूं नहीं, किणन्याय धर्म अधर्म तो जीव छै बंध अजीव छै।

४ कर्म अनें धर्म एक के दोय दोय छै; किणन्याय कर्म तो अजीव छै; धर्म जीव छै।

५ पाप अने धर्म एक के दोय दोय छै; किणन्याय पाप तो अजीव छै; धर्म जीव छै।

६ अधर्म अनें अधर्मास्ति एक के दोय दोय; किणन्याय अधर्म तो जीव छै; अधर्मास्ति अजीव छै।

७ धर्म अनें धर्मास्ति एक के दोय दोय; किणन्याय धर्म तो जीव छै; धर्मास्ति अजीव छै।

८ धर्म अनें अधर्मास्ति एक के दोय दोय; किणन्याय धर्म तो जीव; अधर्मास्ति अजीव छै।

९ अधर्म अनें धर्मास्ति एक के दोय दोय; किणन्याय अधर्म तो जीव छै; धर्मास्ति अजीव छै।

१० धर्मास्ति अनें अधर्मास्ति एक के दोय दोय; किण-
न्याय धर्मास्ति को तो चालवा नो सहाय छै।
अनें अधर्मास्तिनो थिर रहवानों सहाय छै।
११ धर्म अनें धर्मी एक के दोय एक छै; किणन्याय
धर्म जीवका चोखा परिणाम छै।
१२ अधर्म अनें अधर्मी एक के दोय एक छै; किण-
न्याय अधर्म जीव का खोटा परिणाम छै।

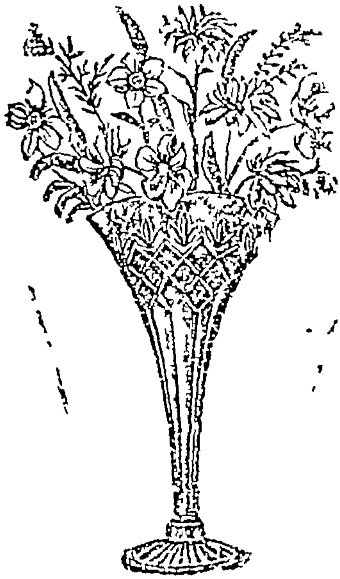

प्रश्नोत्तर।

१ थारी गति कांई-मनुष्य गति।

२ थारी जाती कांई—पंचेन्द्री।

३ थारी काय कांई—त्रसकाय।

४ इन्द्रीयां कितनी पावे—५ पांच

५ पर्याय कितना पावे—छव

६ प्राण कितना पावे—१० दश पावे।

७ शरीर कितना पावे—३ तीन—ओदारिक; तेजस; कार्मण।

८ जोग कितना पावे—९ नव पावे च्यार मन का; च्यार वचनका; एक काया को; ओदारिक;।

९ उपयोग कितना पावे ४ च्यार पावे मतिज्ञान १ श्रुतिज्ञान २ चक्षु दर्शन ३ अचक्षु दर्शन ४।

१० थारे कर्म कितना ८ आठ।

११ गुणस्थान किसो पावे—व्यवहारथी पांचसूं; साधु नें पूछे तो छट्ठो।

१२ बिषये कितनी पावे २३—तेबीस।

१३ मिथ्यात्वनां दश बोल पावै के नहीं, व्यवहारथी नहीं पावै।

१४ जीवका चवदा भेदामें सें किसो भेदपावे, १ येक चवदमूं पर्याप्तो सन्नी पञ्चेन्द्री को पावै।

१५ आतमां कितनी पावै श्रावकमें तो ७ सात पावै, अनें साधु में आठ पावे।

१६ दण्डक किसोपावे—येक इकबीसमु।

१७ लेश्या कितनी पावे—६ छव।

१८ दृष्टी कितनी पावे—-व्यवहारथी एक, सम्यक दृष्टि पावै।

१९ ध्यान कितना पावे—-३ तीन, सुक्ल ध्यान टालके।

२० छवद्रव्यमें किसा द्रव्य पावै १—-एक जीव द्रव्य।

२१ राशि किसी पावें—एक जीव राशि।

२२ श्रावक का बारा ब्रत श्रावक में पावै।

२३ साधुका नञ्च महा ब्रत पावै के नहीं—साधु में पावें श्रावक में पावे नहीं।

२४ पांच चारित्र श्रावक में पावै के नहीं, नहीं पावै, एक देश चारित्र पावै ।

१ एकेन्द्री की गति कांई—तिर्यंच गति ।

२ एकेन्द्री की जाति कांई—एकेन्द्री ।

३ एकेन्द्री में काया किसी पावै पांच थावरकी ।

४ एकेन्द्रीमें इन्द्रियां कितनी पावै—एक स्पर्श इन्द्री ।

५ एकेन्द्री में पर्याय कितनी पावै—४च्यार मन भाषा एदोय टली ।

६ एकेन्द्री में प्राण कितना पावै ४—च्यार पावै स्पर्श इन्द्रीय वलप्राण १ कायबलप्राण २ श्वासोश्वासबलप्राण ३ आयुषोबलप्राण ४

७ सूरड माटी मुलतानी पत्थर सोनो चांदी रतनादिक पृथ्वीकाय का प्रश्नोत्तर ।

प्रश्न	उत्तर
गति कांई	तिर्यंच गति
जाति कांई	एकेन्द्री
काय किसी	पृथ्वीकाय
इन्द्रियां कितनी पावै	एक स्पर्श इन्द्री
पर्याय कितनी पावै	४ च्यार, मन भाषा टली,

प्राण कितना	४ च्यार पावै, स्पर्श इन्द्रीवल प्राण १ काय वल २ श्वासोश्वास वल ३ आयु वलप्राण ४

८ पांणी ओसादि अप्पकायकी

प्रश्न	उत्तर
गति कांई	तिर्यंच गति
जाति कांई	एकेन्द्री
काय किसी	अप्पकाय
इन्द्रियां कितनी	एक स्पर्श इन्द्री
पर्याय कितनी	४ च्यार, मन भाषाटली
प्राण कितना	४ च्यार, ऊपर प्रमाणे

९ अग्नी तेउकायनी

प्रश्न	उत्तर
गति कांई	तिर्यंच गति
जाति कांई	एकेन्द्री
काय किसी	तेउकाय
इन्द्रियां कितनी	एक स्पर्श इन्द्री
पर्याय कितनी	४ च्यार, मन भाषाटली
प्राण कितना	४ च्यार, ऊपर प्रमाणे

१० वायु कायकी

प्रश्न	उत्तर
गति कांई	तिर्यंच गति

जाति·कांई	एकेन्द्री
काय कांई	वायुकाय
इन्द्रियां कितनी	एक स्पर्श इन्द्री
पर्याय कितनी	४ च्यार ऊपर प्रमाणे
प्राण कितना	४ च्यार ऊपर प्रमाणे

११ वृक्ष, लता, पान, फूल, फल, लीलण, फूलन आदि वनस्पतिकायनी

प्रश्न	उत्तर
गति कांई	तिर्यंच गति
जाति कांई	एकेन्द्री
काय कांई	वनस्पतिकाय
इन्द्रियां कितनी	एक स्पर्श इन्द्री
पर्याय कितनी	च्यार ऊपर प्रमाणे
प्राण कितना	च्यार ऊपर प्रमाणे

१२ लट गिंडोला आदि बेन्द्रीको

प्रश्न	उत्तर
गति कांई	तिर्यंच गति
जाति कांई	बेइन्द्री
काय कांई	त्रस काय
इन्द्रियां कितनी	२ दोय, स्पर्श, रस, इन्द्री
पर्याय कितनी	५ पांच मन पर्याय टली
प्राण कितना	६ छव, रस इन्द्री बल प्राण १
	स्पर्श इन्द्री बल प्राण २
	काय बल प्राण ३

	श्वासोश्वासबल प्राण
	आउखो बल प्राण
	भाषा बल प्राण

१३ कीड़ी मकोड़ी आदि तेइन्द्रीका ।

प्रश्न	उत्तर
गति कांई	तिर्यंच गति
जाति कांई	तेइन्द्री
काय कांई	त्रस काय
इन्द्रियां कितनी	३ तीन स्पर्श १ रस २ घ्राण ३
पर्याय कितनी	५ पाँच, मन टली
प्राण कितना	७ सात, छव तो उपर प्रमाणे घ्राण इन्द्री बल प्राण वध्यो

१४ माखी कच्छर टीडी पतंगिया बिच्छु आदि चोइन्द्री का ।

प्रश्न	उत्तर
गति कांई	तिर्यंच गति
जाति कांई	चोइन्द्री
काय कांई	त्रस काय
इन्द्रियां कितनी	४ च्यार, श्रुत इन्द्री टली
पर्याय कितनी	५ पांच, मन टली
प्राण कितना	८ आठ, सात तो ऊपर प्रमाणे एक चक्षू इन्द्री बल प्राण और वध्यो

१५ पंचेन्द्री की ।

प्रश्न	उत्तर
गति कितनी पावै	४ च्यारू ही पावै
जाति काई	पंचेन्द्री
काय कांई	त्रस काय
इन्द्रिया कितनी	पांचोंहीं
पर्याय कितनी	६ छवों ही पावै सन्नीमें, और असन्नो मे ५ पांच, मन टल्यो,
प्राण कितना पावै	सन्नीमे तो १० दशुं ही पावै, असन्नी में ६ पावै मन टल्यो

१६ नारकी की पृछा ।

प्रश्न	उत्तर
गति कांई	नरक गति
जाति कांई	पञ्चेन्द्री
काय कांई	त्रस काय
इन्द्रियां कितनी	५ पांचोही
पर्याय कितनी	५ पाँच, मन भाषा भेली लेखवी
प्राण कितना	१० दशोंही

१७ देवताकी पृछा ।

प्रश्न	उत्तर
गति कांई	देव गति
जाति कांई	पंचेन्द्री
काय कांई	त्रस काय

इन्द्रियां कितनी	५ पांचोंही
पर्याय कितनी	५ मन भाषा भेली लेखवी
प्राण कितना	१० दशोंही

१८ मनुष्य की पूछा असन्नी की ।

प्रश्न	उत्तर
गति कांई	मनुष्य गति
जाति कांई	पंचेन्द्री
काय कांई	त्रस काय
इन्द्रियां कितनी	५ पांच
पर्याय कितनी	३॥ श्वास लेवे तो उश्वास नहीं
प्राण कितना	७॥ श्वास लेवेतो उश्वास नहीं

१९ सन्नी मनुष्य की पूछा ।

प्रश्न	उत्तर
गति कांई	मनुष्य गति
जाति कांई	पंचेन्द्री
काय कांई	त्रस काय
इन्द्रियाँ कितनी	५ पांच
पर्याय कितना	छव
प्राण कितना	१० दश

१ तुमे सन्नीकि असन्नी ? सन्नी, किणन्याय मन छे

२ तुमे सूक्ष्मकि बादर? बादर, किण ? दीखूं छूं ।

३ तुमे त्रसकि स्थावर? त्रस, किण० ? हालूं चालूं छूं ।

४ एकेन्द्री सन्नी के असन्नी---असन्नी, किण० मन नहीं

५ एकेन्द्री सुक्ष्म के बादर—दोनूं हीं छै किण० एकेन्द्री दोय प्रकार को छै, दीखै ते बादर छै, नहीं दीखे ते सुक्ष्मछै

६ एकेन्द्री त्रस के स्थावर—स्थावर छै, हाले चाले नहीं

७ एकेन्द्री में इन्द्रियां कितनी—एकस्पर्श इन्द्री (शरीर)

८ पृथ्वीकाय अप्काय तेउकाय वायुकाय वनस्पतिकाय

प्रश्न	उत्तर
सन्नी के असन्नी	असन्नी छै मन नहीं
सूक्ष्म के बादर	दोनूं ही प्रकार की छै
त्रस के स्थावर	स्थावर छै

९ बेइन्द्री तेइन्द्री चौइन्द्रीकी पृछा।

प्रश्न	उत्तर
सन्नी के असन्नी	असन्नी छै मन नहीं
सूक्ष्म के बादर	बादर छै
त्रस के स्थावर	त्रस छै

१० तिर्यंच पंचेन्द्री की पूछा।

प्रश्न	उत्तर
सन्नी के असन्नी	दोनूं ही छै
सूक्ष्म के बादर	बादर छै
त्रस के स्थावर	त्रस छै

११ सन्नी मनुष्य चौदे स्थानकमें नीपजे।

प्रश्न	उत्तर
सन्नी के असन्नी	असन्नी छै
सूक्ष्म के बादर	बादर छै
त्रस के स्थावर	त्रस छै

१२ सन्नी मनुष्य ते गर्भ में उपजे जिणारी पूछा।

प्रश्न	उत्तर
सन्नी के असन्नी	सन्नी छै
त्रस के स्थावर	त्रस छै
सूक्ष्म के बादर	बादर छै

१३ नारकी का नेरीया की पूछा।

प्रश्न	उत्तर
सन्नी के असन्नी	सन्नी छै
सूक्ष्म के बादर	बादर छै
त्रस के स्थावर	त्रस छै

१४ देवता की पृछा।

प्रश्न	उत्तर
सन्नी के असन्नी	सन्नी छै
सूक्ष्म के वादर	वादर छै
त्रस के स्थावर	त्रस छै

१५ गाय भैंस हाथी घोड़ा बलद पत्ती आदि पशु जानवर की पूछा।

प्रश्न	उत्तर
सन्नी के असन्नी	दोनूं ही प्रकार का छै छिमो छिमके मन नहीं, गर्भजके मन छै
सूक्ष्म के वादर	वादर छै, नेत्र से देखवा में आवै छै
त्रस के स्थावर	त्रस छै हालै चालै छै

१ एकेन्द्री में वेद कितना पावै एक नपुंसक वेद पावै

२ पृथ्वी पाणी वनस्पति अग्नी वायरो यां पांचां में वेद कितनां पावे—१ एक नपुंसक ही छै

३ वेइन्द्री तें इन्द्री चोइन्द्री में वेद कितनां पावै—एक नपुंसक वेदही पावे छै

४ पंचेन्द्रीमें वेद कितना पावै—सन्नी में तो तीनों ही वेद पावे छै, असन्नीमें एक नपुंसक वेदहीछै

५ मनुष्यमें वेद कितनां पावै—असन्नी मनुष्य चौदे थानक में उपजे जीवां मे तो वेद एक नपुंसक ही पावै छै, सन्नी मनुष्य गर्भ में उपजे जिणांमें वेद तीनोंही पावै छै।

६ नारकी में वेद कितनां पावै—एक नपुंसक वेद ही पावै छै।

७ जलचर थलचर उरपर भुजपर खेचर यां पांच प्रकार का तिर्यंचा में वेद कितना पावै—छिमोछिम उपजे ते असन्नी छै जिणांमे तो वेद नपुंसकही पावै छै, अनें गर्भ में उपजै ते सन्नी छै जिणां में वेद तीनोंही पावैछै।

८ देवतामें वेद कितनां पावै—उत्तर—भवनपती, वाणव्यन्तर, जोतिषी, पहिला दूजा देव लोक तांई तो वेद दोय स्त्री १ पुरुष २ पावै छै, और तीजा देवलोक से स्वार्थ सिद्ध तांई वेद एक पुरुषही छै।

९ चौबीस दण्डक का जीवां के कर्म कितना उगणीस दण्डकका जीवांमें तो कर्म आठही पावै छै, अनें मनुष्य में सात आठ तथा च्यार पावै छै।

१ धर्म व्रत में कि अव्रत में—व्रत में।

२ धर्म आज्ञा मांहि कि बाहर श्रीवीतरागदेव की आज्ञा मांहि छै।

३ धर्म हिंसा में कि दया में—दया में

४ धर्म मोल मिलै कि नहीं मिलै—नहीं मिलै, धर्म तो अमूल्य छै।

५ देव मोल मिलै कि नहीं मिलै—नहीं मिलै, अमूल्य छै।

६ गुरु मोल लियां मिलै कि नहीं मिलै---नहीं मिलै, अमूल्य छै।

७ साधुजी तपस्या करै ते व्रत में कि अव्रत में व्रत पुष्टको कारण छै, अधिक निर्जरा धर्म छै।

८ साधुजी पारणो करै ते व्रत में कि अव्रत में अव्रतमें नहीं, किणन्याय ? साधुके कोई प्रकार अव्रतरही नहीं सब सावद्य जोगका त्याग छै। तिणसूं निरजराथाय छै तथा व्रत पुष्टको कारण छै।

९ श्रावक उपवास आदि तप करै ते व्रत में कि अव्रत में---व्रत में।

१० श्रावक पारणूं करै ते व्रत में कि अव्रत में---अव्रत में किणन्याय ? श्रावक को खाणों पीणों

पहरणों ए सर्व अव्रत में छै श्रीउववाई तथा सूयगडांग सूत्र में बिसतार कर लिख्या छै।

११ साधुजी नें सूजतो निर्दोष आहार पाणी दियां कांई होवे, व्रतमें के अव्रतमें—अशुभ कर्म क्षय थाय तथा पुन्य बंधे छै, १२ मूं व्रत छै।

१२ साधुजी नें असूजतो दोष सहित आहार पाणी दियां कांई होवे तथा व्रत में के अव्रत में—श्री भगवती सूत्र में कह्यो छै, तथा श्री ठाणांग सूत्र के तीजे ठाणे में कह्यो छै अल्प आयुबंधै अकल्याणकारी कर्म बंधै तथा असूजतो दीधोते व्रत में नहीं। पाप कर्म बंधे छै।

१३ अरिहंत देव देवता के मनुष्य—मनुष्य छै।

१४ साधु देवता के मनुष्य—मनुष्य छै।

१५ देवता साधुनें बंदा करै के नहीं करै—करै साधु तो सबका पूजनीक छै।

१६ साधु देवताको बंदा करै के नहीं करै—नहीं करै।

१७ सिद्ध भगवान देवता के मनुष्य—दोनूं नहीं।

१८ सिद्ध भगवान सुक्ष्म कें बादर—दोनूं नहीं।

१९ सिद्ध भगवान त्रसके स्थावर—दोनूं नहीं।

२० सिद्ध भगवान सन्नी के असन्नी—दोनूं नहीं।

२१ सिद्ध भगवान पर्याप्ता के अपर्याप्ता—दोनूं नहीं।

२१ इति पाना की चरचा

१ असंयती अव्रती ने दीयां कांई होवे श्री भगवती सूत्र के आठ में शतक छट्ठे उपदेशे कह्यो असंयती अव्रती नें सूजतो असूजतो सचित अचित च्यार प्रकार को आहार दियां एकान्त पाप होय निर्जरा नहीं होय।

२ असंयती अव्रती जीवां को जीवणो बांछणो के मरणो बांछणो असंयती को जीवणो बांछणो नहीं; मरणो बांछणो नहीं, संसार समुद्र से तिरणो बांछणो ते श्रीवीतरागदेव को धर्म छै।

३ कसाई जीवां ने मारे तिण वेल्यां साधु कसाई नें उपदेश देवे के नहीं देवे—अवसर देखे तो उपदेश देवे हिन्साका खोटाफल कहे।

प्रश्न—जीवां को जीवणो बांछकर उपदेश देवै के कसाई नें तारवा निमित्त उपदेश देवै—.

उत्तर—कसाई नें तारवा निमित्त उपदेश देवै ते वीतरागको धर्म छै।

४ कोई बाड़ामें पशु जानवर दुखिया छै अनें साधु जिण रसते जाय रह्या छै तो जीवांकी अनुकम्पा आणी छोड़े के नहीं छोड़े—नहीं

छोड़ै, क्रियान्याय, उ० श्रीनिशीथ सूत्रके १२ बारमें उद्देशामें कह्यो छै अनुकम्पा करे त्रस जीव बांधे बंधावे अनुमोदे तो चौमासी प्रायश्चित आवै, तथा साधु संसारी जीवांकी सार संभार करै नहीं साधु तो संसारी कर्तव्य त्यागदिया ।

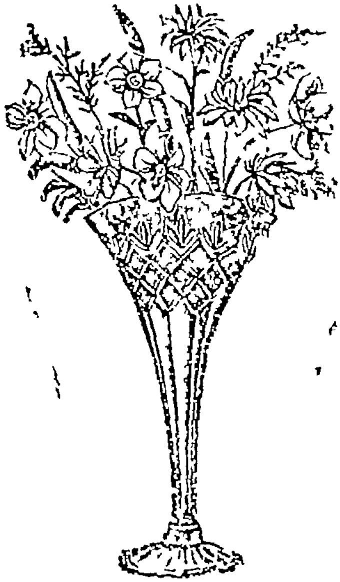

* अथ अल्पा बोहत *

१ सर्व थोड़ा गर्भज मनुष्य ।

२ तेहथी मनुष्यणी २७ गुणी ।

३ ,, बादर तेऊकाय का पर्याप्ता असंख्यात गुणां ।

४ ,, पांच अनुत्तरका देवता असंख्यात गुणां ।

५ ,, उपरला त्रिक का देवता संख्यात गुणां ।

६ ,, विचला त्रिक का देवता संख्यात गुणां ।

७ ,, नीचला त्रिक का संख्यात गुणां ।

८ ,, १२ मां देवलोकका संख्यात गुणां ।

९ ,, ११ मां देव लोकका संख्यात गुणां ।

१० ,, १० मांका सख्यात गुणां ।

११ ,, ९ मां का संख्यात गुणां ।

१२ ,, सातमी नरक का नेरिया असंख्यात गुणां ।

१३ ,, छट्ठी नारकी का नेरिया असंख्यात गुणां ।

१४ ,, आठमां देवलोकका देवता असंख्यात गुणां ।

१५ ,, सातमां देवलोकका देवता असंख्यात गुणां ।

१६ ,, ५ मी नारकी का नेरिया असंख्यात गुणां ।

१७ ,, छट्ठा देवलोक का देवता असंख्यात गुणां ।

१८ ,, चाथो नारकी का नेरिया असंख्यात गुणां ।

१९ ,, पांचवां देवलोक का देवता असंख्यात गुणां ।
२० ,, तीजी नारकी का नेरिया असंख्यात गुणां ।
२१ ,, चौथा देवलोकका देवता असंख्यात गुणां ।
२२ ,, तीजा देवलोकका देवता असंख्यात गुणां ।
२३ ,, दूजी नारकी का नैरिया असंख्यांत गुणां ।
२४ ,, छिमोछिम मनुष्य असंख्यात गुणां ।
२५ ,, दूजा देवलोकका देवता असंख्यात गुणां ।
२६ ,, दूजांकी देव्यां संख्यात गुणी ।
२७ ,, पहला देवलोकका देवता संख्यात गुणां ।
२८ ,, पहलांकी देव्यां संख्यात गुणी ।
२९ ,, भवनपति देवतां असंख्यात गुणां ।
३० ,, भवनपति की देव्यां संख्यात गुणी ।
३१ ,, पहली नारकी का नेरिया असंख्यात गुणां ।
३२ ,, खेचर पुरुष असंख्यात गुणां ।
३३ ,, खेचरणी संख्यात गुणी ।
३४ ,, थलचर पुरुष संख्यात गुणां ।
३५ ,, थलचरणी संख्यात गुणीं ।
३६ ,, जलचरण पुरुष संख्यात गुणां ।
३७ ,, जलचरणी संख्यात गुणीं ।
३८ ,, वानव्यंतर देवता संख्यात गुणां ।
३९ ,, वानव्यंतर देवी संख्यात गुणीं ।

४० ,, जोतषी देवता संख्यात गुणां ।

४१ ,, जोतीषीनो देवी संख्यात गुणीं ।

४२ ,, खेचर नपुंसक संख्यात गुणां ।

४३ ,, थलचर नपुंसक संख्यात गुणां ।

४४ ,, जलचर नपुंसक संख्यात गुणां ।

४५ ,, चोइन्द्रीका पर्याप्ता संख्यात गुणां ।

४६ ,, पंचेन्द्रीका पर्याप्ता विशेषाईया ।

४७ ,, बेन्द्री पर्याप्ता विशेषाईया ।

४८ ,, तेइन्द्री पर्याप्ता विशेषाईया ।

४९ ,, पंचेन्द्री अपर्याप्ता असंख्यात गुणां ।

५० ,, चौइन्द्री अपर्याप्ता विशेषाईया ।

५१ ,, तेइन्द्री अपर्याप्ता विशेषाईया ।

५२ ,, बेन्द्री अपर्याप्ता विशेषाईया ।

५३ ,, बादर प्रत्येकवनस्पती पर्याप्ता असंख्यात गुणां ।

५४ ,, बादर निगोद पर्याप्ता असंख्यात गुणां ।

५५ ,, बादर पृथ्वीकाय पर्याप्ता असंख्यात गुणां ।

५६ ,, बादर अप्पाकाय पर्याप्ता असंख्यात गुणां ।

५७ ,, बादर वायुकाय पर्याप्ता असंख्यात गुणां ।

५८ ,, बादर तेऊकाय अपर्याप्ता असंख्यात गुणां ।

५९ ,, बादर प्रत्येक शरीरी वनस्पति अपर्याप्ता असंख्यात गुणां ।

६० ,, बादर निगोद अपर्याप्ता असंख्यात गुणां।

६१ ,, बादर पृथ्वीकाय का अपर्याप्ता असंख्यात गुणां।

६२ ,, बादर अप्पकाय अपर्याप्ता असंख्यात गुणां।

६३ ,, बादर वायुकाम अपर्याप्ता असंख्यात गुणां।

६४ ,, सूक्ष्म तेउकाय अपर्याप्ता असंख्यात गुणां।

६५ ,, सूक्ष्म पृथ्वी अपर्याप्ता विशेषाईया।

६६ ,, सूक्ष्म अप्प अपर्याप्ता विशेषाईया।

६७ ,, सूक्ष्म वायु अपर्याप्ता विशेषाईया।

६८ ,, सूक्ष्म तेउ पर्याप्ता संख्यात गुणां।

६९ ,, सूक्ष्म पृथ्वी पर्याप्ता विशेषाईया।

७० ,, सूक्ष्म अप्प पर्याप्ता विशेषाईया।

७१ ,, सूक्ष्म वायु पर्याप्ता विशेषाईया।

७२ ,, सूक्ष्म निगोद अपर्याप्ता असंख्यात गुणां।

७३ ,, सूक्ष्म निगोद पर्याप्ता संख्यात गुणां।

७४ ,, अभव्य जीव अनन्त गुणां।

७५ ,, पड़वाई समदृष्टी अनन्त गुणां।

७६ ,, सिद्ध भगवंत अनन्त गुणां।

७७ ,, बादर बनस्पति पर्याप्ता अनन्त गुणां।

७८ ,, बादर पर्याप्ता विशेषाईया।

७९ ,, बादर वनस्पति अपर्याप्ता असंख्यात गुणां।

८० „ बादर अपर्याप्ता विशेषाईया ।

८१ „ सर्व बादर विशेषाईया ।

८२ „ सूक्ष्म वनस्पति अपर्याप्ता असंख्यात गुणां ।

८३ „ सूक्ष्म अपर्याप्ता विशेषाईया ।

८४ „ सूक्ष्म वनस्पति पर्याप्ता संख्यात गुणां ।

८५ „ सूक्ष्म पर्याप्ता विशेषाइया ।

८६ „ सर्व सूक्ष्म विशेषाईया ।

८७ „ भव्य जीव विशेषाईया ।

८८ „ निगोदिया विशेषाईया ।

८९ „ वनस्पति विशेषाईया ।

९० „ एकेन्द्री विशेषाईया ।

९१ „ तिर्यंच विशेषाईया ।

९२ „ मिथ्याती विशेषाईया ।

९३ „ अव्रती विशेषाईया ।

९४ „ सकषाई विशेषाईया ।

९५ „ छद्मस्थ विशेषाईया ।

९६ „ सजोगी विशेषाईया ।

९७ „ संसारी जीव विशेषाईया ।

९८ „ सर्व जीव विशेषाईया ।

अथ गतागतको थोकड़ो।

जीवका ५६३ भेदको बिगत।

१४ सात नारकी का पर्याप्ता अपर्याप्ता।

४८ तिर्यंचका।

४ सूक्ष्म वादर पृथ्वीकायका पर्याप्ता अपर्याप्ता।

४ सूक्ष्म वादर अपकायका पर्याप्ता अपर्याप्ता।

४ सूक्ष्म वादर वाउकायका पर्याप्ता अपर्याप्ता।

४ सूक्ष्म वादर तेउ कायका पर्याप्ता अपर्याप्ता।

६ सूक्ष्म (वादर प्रत्येक साधारण वनस्पति कायका पर्याप्ता अपर्याप्ता।

६ तीन विकलेन्द्री का पर्याप्ता अपर्याप्ता।

२० जलचर थलचर उरपर भुजपर खेचर ए पांच प्रकार का तिर्यञ्च सन्नी असन्नी का पर्याप्ता अपर्याप्ता।

३०३ मनुष्यका—

२०२ सन्नी मनुष्य, १५ कर्म भूमि, ३० अकर्म भूमि, ५६ अन्तर द्वीप ए १०१ का पर्याप्ता अपर्याप्ता।

१०१ असन्नी मनुष्य ते सन्नी मनुष्यका मल सूत्रादि चवदे स्थानक में उपजै ने अपर्याप्ता, अपर्याप्ता अवस्था में मरै।

१९८ देवताका—

भुवनपति १७, परमाधामी १५, वानव्यंतर १६, तिर्यक् जृम्भका १०, जोतषी कल्विषिक ३, लोकान्तिक ९, देवलोक १२, ग्रैवेयक ९, अनुत्तर विमान ५, एह ९९ जातिका पर्याप्ता अपर्याप्ता। ||इति||

भरतक्षेत्रमें ५१ पावै—

तिर्यञ्चका ४८ मनुष्य ३।

जम्बूद्वीप में ७५ पावै—

२७ भरतक्षेत्र १ एरभरत १, देवकुरु १, उत्तरकुरु १, हरिवास १, रम्यकवास १, हेमवत १, महरावत १, महाविदेह १, यह नव क्षेत्र का सन्नी मनुष्य पर्यासा अपर्यासा १८, तथा असन्नी मनुष्य ६ ४८ तिर्यञ्चका।

लवण समुद्र में पावै २१६—

अन्तरद्वीप ५६ का तो १६८, ४८ तिर्यञ्चका।

धातकी खंड में पावै १०२—

५४ मनुष्य का अठारह क्षत्रों का त्रिगुण, ४८ तिर्यञ्च का

कालोदधि में पावै ४६—

तिर्यञ्चका ४८ में से वादर तेउका २ टल्या।

अर्ध पुष्कर वर द्वीप में पावै १०२—

धातको खंडवत् जाणवो।

ऊंचा लोक में पावै १२२—

७६ देवताका।
४६ तिर्यञ्चका।

नीचालोक में पावै ११५—

भवनपति २०, पर्माधामी ३०, नारकी १४, तिर्यञ्चका ४८, मनुष्यका ३ सर्व ११५

तिर्च्छा लोक में पावै ४२३—

३०३ मनुष्यका ।

४८ तिर्यञ्चका ।

३२ वानव्यन्तरका ।

२० त्रिभूमका ।

२० जोतिष्यांका ।

१	पहिली नारकी में	आगति २५	१५ कर्म भूमि मनुष्य, तिर्यंच पंचेन्द्री ५ सन्नी ५ असन्नी पर्याप्ता
		गति ४०	१५ कर्म भूमि मनुष्य, तिर्यंच पंचेन्द्री ५ सन्नी का पर्याप्ता अपर्याप्ता ४०
२	दूजी नारकी मे	आगति २०	१५ कर्म भूमि मनुष्य, ५ सन्नी तिर्यंच का पर्याप्ता
		गति ४०	उपरवत्
३	तीजी नारकी मे	आगति १९	१५ कर्म भूमि मनुष्य, ४ सन्नी तिर्यंच का पर्याप्ता भुज पर टल्यो
		गति ४०	उपरवत्
४	चौथी नारकी मे	आगति १८	१५ कर्म भूमि मनुष्य, ३ सन्नी तिर्यंच पर्याप्ता (भुजपर १ खेचर २ टल्यो)
		गति ४०	उपरवत्
५	पांचवी नारकी में	आगति १७	१५ कर्म भूमि मनुष्य, १ जलचर, १ उरपुर का पर्याप्ता
		गति ४०	उपरवत्
६	छट्ठी नारकी मे	आगति १६	१५ कर्म भूमि १ जलचर सन्नी का पर्याप्तो
		गति ४०	उपरवत्

७	सातमी नारकी मे	आगति १६	१५ कर्म भूमि, १ जलचर सन्नी तिर्यंच का पर्याप्ता स्त्री विना
		गति १०	५ सन्नी तिर्यंच का पर्याप्ता अपर्याप्ता १०
८	१० भवनपति १५ पर्मा धामी १६ वानव्यंतर १० त्रिझूमका ५१ जातिकामे	आगति १११	१०१ सन्नी मनुष्य, ५ सन्नी, ५ असन्नी तिर्यंच का पर्याप्ता १११
		गति ४६	१५ कर्म भूमि, मनुष्य, ५ सन्नी तिर्यंच १ पृथ्वी १ अप्प, १ वनस्पति का पर्याप्ता अपर्याप्ता सूक्षम साधारण विना
९	जोतषी पहिला देवलोक में	आगति ५०	१५ कर्म भूमि, ३० अकर्म भूमि ५ सन्नी तिर्यंच का पर्याप्ता
		गति ४६	उपरवत्
१०	दूजा देवलोक मे	आगति ४०	१५ कर्म भूमि, ५ सन्नी तिर्यंच, अकर्म भूमि, का पर्याप्ता २० (५ हेमवय, अरुणवय, टल्या)
		गति ४६	उपरवत्
११	पहिला कल्विषिक में	आगति ३०	१५ कर्म भूमि, ५ सन्नी तिर्यंच ५ देवकुरु ५ उत्तरकुरु का पर्याप्ता
		गति ४६	उपरवत्
१२	दूजा तीजा कल्विषिकतीजा से आठवां तांई का देवता मे	आगति २०	१५ कर्म भूमि, ५ सन्नी तिर्यंच पर्याप्ता
		गति ४०	१५ कर्म भूमि ५ सन्नी तिर्यंच पर्याप्ता अपर्याप्ता

१३	नवमांसे सर्वार्थ सिद्धितांई	आगति १५	१५ कर्म भूमि मनुष्य का पर्याप्ता
		गति ३०	१५ कर्म भूमि, का पर्याप्ता अपर्याप्ता
१४	पृथ्वीपाणी वनस्पति में	आगति २४३	१०१ असन्नी मनुष्य, ४८ तिर्यंच १५ कर्म भूमि, का, पर्याप्ता अपर्याप्ता ३० एवं १७९ लड़ी का और ६४ जाति का देवता एवं सर्व-२४३ थया
		गति १७९	लड़ीका
१५	तेऊ वाउ काय में	आगति १७९	लड़ीका
		गति ४८	तिर्यंचका
१६	तीन विकलेंन्द्री में	आगति १७९	लड़ीका
		गति १७९	लड़ीका
१७	असन्नी तिर्यञ्च पंचेन्द्री में	आगति १७९	लड़ीका
		गति ३९५	१७९ तो लड़ीका, ५६ अन्तरद्वीप ५१ जातिका देवता, १ पहली नारकी १०८ का पर्याप्ता अपर्याप्ता २१६ सर्वमिली ३९५
१८	सन्नी तिर्यञ्च में	आगति २६७	१७९ तो लड़ी का, ८१ देवता ७ नारकी पर्याप्ता (नवमांसे सर्वार्थसिद्ध तांई टल्या)
		गति ५२७	(नवमांसे सर्वार्थ सिद्धताईका टल्या

१९	असन्नी मनुष्य में	आगति १७१	लड़ीका में से तेउ वाउका ८ टल्या
		गति १७९	लड़ीका
२०	सन्नी मनुष्य में	आगति २७६	१७१ तो लड़ीका में से, ९९ देवता ६ नारकी
		गति ५६३	सर्व
२१	देवकुरु उत्तर कुरु का युगलिया में	आगति २०	१५ कर्म भूमि, ५ सन्नी तिर्यंच
		गति १२८	१० भवनपति, १५ परमाधामी, १६ वाणव्यंतर, १० त्रिम्भूमका, १० जोतषी, २ पहिलो दूजो देवलोक, १ पहलो कल्विबिक एवं ६४ का पर्यासा अपर्यासा
२२	हरीवास रम्यकवास का युगलियां में	आगति २०	उपरवत्
		गति १२६	६४ जातिका देवता में से १ पहिलो कल्विपिक टल्यो
२३	हेमवय अरुणवय का युगलियां में	आगति २०	उपरवत्
		गति १२४	६४ जातिका देवां मे कल्विपिक १ और दूजो देवलोक टल्यो
२४	५६ अन्तरद्वीप युगलियां में	आगति २५	१५ कर्म भूमि ५ सन्नी ५ असन्नी, तिर्यंच
		गति १०२	५१ जातिका देवांका पर्यासा अपर्यासा

२५	केवल्यां में	आगति १०८	८१ देवता (पर्मा धर्म १५, कलित्रगिक ३ टल्या) १५ कर्म भूमि, ४ पहली से चोथी नर्क, ५ सन्नी तिर्यञ्च १ पृथ्वी १ अप १ वनस्पति
		गति ०	मोक्षकी
२६	तीर्थङ्करा में	आगति ३८	३५ देवता वैमानिक, ३ नरक पहली से
		गति ०	मोक्ष
२७	चक्रवर्त मे	आगति ८२	८१ जाति का देवता उपरवत्, १ पहली नरक
		गति १४	७ सात नारकी मे जाय पद्वी में मरेतो
२८	वासुदेव मे	आगति ३२	१२ देवलोक, ६ नवग्रैवेयक, ६ लोकान्तिक तथा २ नारकी पहली दूजी
		गति १४	७ नारकी मे जाय
२६	वलदेव में	आगति ८३	८१ जातिका देवता उपरवत् २, नारकी पहली दूजी
		गति ०	पद्वी अमर छे
३०	सम्यक दृष्टिमें	आगति ३६३	१७१ लड़ीका (तेउ वाउका टल्या) ६६ देवता, ८६ युगलिया, ७ नारकी
		गति २५८	६६ देवता, १५ कर्म भूमि, ६ नारकी ५ सन्नी तिर्यंच का पर्याप्ता अपर्याप्ता, ५ असन्नी, ३ विकलेन्द्री का अपर्याप्ता एवं २५८

३१	मित्थ्या दृष्टिमे	आगति ३७१	१७६ लड़ीका, ६६ देवता, ८६ युगलिया, नारकी ७ एवं
		गति ५५३	५ अनुत्तर का पर्याप्ता अपर्याप्ता टल्या
३२	सममित्थ्या दृष्टिमे	आगति ३६३	समदृष्टि जिम
		गति ०	तिजे गुणठाणे मरे नहीं
३३	साधु में	आगति २७५	१७१ लड़ीका, ६६ देवता, ५ नारकी
		गति ७०	१२ देवलोक, ९ लोकान्तिक, ९ ग्रैवेयक ५ अनुत्तरका पर्याप्ता अपर्याप्ता
३४	श्रावक में	आगति २७६	१७१ लड़ीका ६६ देवता, ६ नारकी एवं
		गति ४२	१२ देवलोक, ९ लोकान्तिक, पर्याप्ता अपर्याप्ता
३५	पुरुष वेद में	आगति ३७१	मित्थ्यात्ती जिमजाणवो
		गति ५६३	सर्व
३६	स्त्री वेद में	आगति ३७१	उपरवत्
		गति ५६१	सातमी नरक में नहीं जाय
३७	नपुंसक वेद में	आगति २८५	६६ देवता, १७६ लड़ीका, ७ नारकी
		गति ५६३	सर्व

इति गतागत सम्पूर्णम् ।

गुलाबचन्दजी लुणिया कृत

॥ ढाल ॥

॥ राग आसावरी ॥

स्वाम जयपुर चौमास करावो । अब हुकम जलदी फुरमावो ॥ स्वा० ॥ ए आंकड़ी ॥ बहु बर्षों से अरज हमारी, ता पे हुकम चढावो । नूतन अर्ज अन्य मुन २ की, मत पूरातन विसरावो ॥ स्वा० ॥ १ ॥ अवसर क्षेत्र फर्शना कहीनें, इम किम नित ललचावो । क्षेत्र न आवे इत फर्शावन, आपही महर करावो ॥२॥ आवत आवत आवे बारी, क्युँ टाबर बहलावो । अल्प बुद्धि हम वेंत न जानें, आपही वेंत बतावो ॥ ३ ॥ अपलूं सींच्यो जान कृपानिधि, जलदी सार करावो । रढ नहीं छोडें अपर न मानें । मानो मुझ बकसावो ॥ ४ ॥ कर जोड़ी कहे गुलाबचन्द मुझ, अविनय माफ करावो । जयपुरको चौमासो अबकी, श्री मुख हुकम दिरावो ॥ ५ ॥

श्री भिक्षु गणिराज के गुणा की ढाल ।

आचारज जबर आप जानी, बुद्ध उत्पतिया अतिठानी ।
समय रस पेख वीर वाणी, प्रगट मग कियो ज पै छाणी ।

अष्टादश सोलह समय; सुदि पूनम आषाढ़ ।
संयम स्वाम समाचस्यो स कांई,
गुण गिरवो दिल गाढ ।
पूज्यने सुमत अधिक आई,
स्वाम भिक्षु भजले भाई ।
निर्मल रस समय तणा शोधी,
विमल मति आप अधिक बोधी ।
युगण युतसे पाखण्ड जोधी, रमल दुर्गतिनो पन्थ रोधी ।
दान दयादिक ऊपरे, ग्रन्थ हजारां कीध ।
जीव घणा समझाविया स कांई, देश देश प्रसिद्ध ।
पूज्यनी दशाज अधिकाई । स्वाम० ॥ २ ॥
शिष्य गणपति नामे करणा, बत्तीसा लिखत मांहि निर्णा ।
आणा बिन पगला नहीं भरणा, हुमज गुणसाठे उच्चरणा ।
गण बाहिर अवनीतड़ा, तीर्थमें न गिणाय ।
तसु वन्दे ते जिन कह्या स कांई, आज्ञा बाहिर ताय ।
एह मर्यादा सुखदाई ॥ स्वाम० ॥ ३ ॥
मुनि गण मांही जे स्याना, तथा बाहिर ते अलखाना ।
तिहूंने दिण गणना जाणो, अवगुण बोलणरा पचखाणो ।
साथे नहीं लेजावणा, ते पिणके पचखाण ।
मन फटे जिम नहीं बोलनो स कांई, यह स्वामनी वाण ।
लिखत पैंतालीसा मांही । स्वाम० ॥ ४ ॥

गुलाबचन्दजी लुणिया कृत

॥ ढाल ॥

॥ राग आसावरी ॥

स्वाम जयपुर चौमास करावो। अब हुकम जलदी फुरमावो ॥ स्वा० ॥ ए आंकड़ी ॥ बहु वर्षों से अरज हमारी, ता पे हुकम चढावो। नूतन अर्ज अन्य सुन २ के, मत पूरातन विसरावो ॥ स्वा० ॥ १ ॥ अवसर खेत्र फर्शना कहीनें, इम किम नित ललचावो। खेत्र न आवे इत फर्शावन, आपही मेहर करावो ॥२॥ आवत आवत आवे बारो, क्युं टाबर बहलावो। अल्प बुद्धि हम बेंत न जानें, आपही बेंत बतावो ॥ ३ ॥ अपलूं सौंप्यो जान कृपानिधि, जलदी सार करावो। रढ नहीं छोडें अपर न मानें। मानो मुझ बकसावो ॥ ४ ॥ कर जोड़ी कहै गुलाबचन्द मुझ, अविनय माफ करावो। जयपुरको चौमासो अबकी, श्री मुख हुकम दिरावो ॥ ५ ॥

श्री भिक्षु गणिराज के गुणा की ढाल।

आचारज जबर आप जानी, बुद्ध उत्पातिया अतिठानी।
समय रस पिख वीर वाणी, प्रगट मग कियो जग छाणी।

अष्टादश सोलह समय; सुदि पूनम आषाढ़।
संयम स्वाम समाचस्यो स कांई,
गुण गिरवो दिल गाढ।
पूज्यने सुमत अधिक आई,
स्वाम भिक्षु भजले भाई।
निर्मल रस समय तणा शोधी,
विमल मति आप अधिक बोधी।
युगल युलसे पाखण्ड जोधी, रमल दुर्गतिनो पन्थ रोधी।
दान दयादिक ऊपरे, ग्रन्थ हजारां कीध।
जीव घणा समझाविया स कांई, देश देश प्रसिद्ध।
पूज्यनी दशाज अधिकाई। स्वाम० ॥ २ ॥
शिष्य गणपति नामे करणा, बत्तीसा लिखत मांहि निर्णा।
आणा विन पगला नहीं भरणा, डूमज गुणसाठे उच्चरणा।
गण बाहिर अवनीतड़ा, तीर्थमें न गिणाय।
तसु वन्दे ते जिन कह्या स कांई, आज्ञा बाहिर ताय।
एह मर्यादा सुखदाई ॥ स्वाम० ॥ ३ ॥
मुनि गण मांही जे स्याना, तथा बाहिर ते अलखाना।
तिहूंने पिण गणना जाणो, अवगुण बोलणरा पचखाणो।
साथे नहीं लेजावणा, ते पिणके पचखाण।
मन फटे जिम नहीं बोलणो स कांई, यह स्वामनी वाण।
लिखत पैंतालीसा मांही। स्वाम० ॥ ४ ॥

माना लिख जाचे गण मांही, बाहिर ते लेजाणा नाहीं।
खेलांसें पिण नहीं रहणो, लिखत गुणसठे इम वेणो।
उगणीसे पन्द्रह समय, कार्त्तिक पुनम पेख।
पैंसठ ठाणा लाडणूं स कांई, जयजश हर्ष विशेष।
परम सम्पत गणपति पाई। स्वाम० ॥ ५ ॥

श्री भिक्षु गणिराज के गुणा की ढाल।

भेट भव चरण ले शरण भिक्षु तणा मरणारा डरण सब दूर भागे। करण जोगां तणी खबर पडियां पछे, स्वाम भिक्षु तणी छाप लागे ॥ भे० ॥ १ ॥ बुद्ध के पुज्य भाजन भये भरत में, पंच में काल चसराल आरे। सूत्र नें बांचिया ज्ञान में राचिया, तरण तारण भविक जीव तारे ॥ भे० ॥ २ ॥ पूज्य भिक्षु तणा साध वर साधवी वीर गणधर जेहवी चाल चाले। पंचमें काल में चीज चौथा तणी, आगलां रे मन मांय साले ॥ भे० ॥ ३ ॥ पूज्य भिक्षु तणी, वीर गण धर तणी, एक श्रद्धा कछु फेर नाहीं। दूसरो मोय बताय भविक जन शुद्ध साधु इण भरत मांही ॥ भे० ॥ ४ ॥ काम करड़ो घणो स्वाम श्रद्धा तणो। हिवड़े बेसवो दोहिलो जान भाई। हिम्मत राखजो बात विचारज्यो मर्दमी राखज्यो मन मांही ॥ भे० ॥ ५ ॥

अथ जंबू कुंवर की चोपाई।

हिवे परभव मन में चिन्तवे, मुझ में अवगुण अनेक। दुक्रत मैं कीधा घणा, सुक्रत नहीं कीधो एक ॥ १ ॥ मैं राजारे घर जामोलियो, संगत कीधी खोटी। चोरी कुलंच्छन सिखियो, आपिण खामी मोटी ॥ २ ॥ चोरी करी धन लेई पारको, ते मैं पोष्या चोर। दाह दीधी पर जीव नें, बांध्या कर्म कठोर ॥ ३ ॥ इण नें इतरी ऋद्ध आई मिली, पिण धुड़ सम जाणी। ते छोडतां विलम्ब करे नहीं, एतो उत्तम प्राणी ॥ ४ ॥ इण नें आठ कोमण इसड़ी मिली, अपच्छर नें उणिहार। त्यांनें परणीजी नें परहरे, विन भोगवियां नार ॥ ५ ॥ आप तरुण तरुणी घरे, वय चढती छे यांरी। भर जोबन में व्रत आदरे, मुक्ति रहामी दृष्टि भारी ॥ ६ ॥ इसड़ो मानव इण जगत में, मैं तो नयणा न दीठो। सोम निजर शीतल अङ्ग छे मुझ लागे छे मीठो ॥ ७ ॥ हूं जाण तो सुख मो नें घणा। पिण तृण सम जाणूं। अनोपम एक धर्म विना जीवतव्य अप्रमाणूं ॥ ८ ॥ जंबू कुमर तणा सुख देखतां, म्हारां सुख अल्पमात। ए इसड़ो सुख छोडी निसरे, आ अचरज वाली बात ॥ ९ ॥ मोनें पिण इणरो वैराग देखनें, खारो लागो संसार। जंबू

कुंवर साथे लगूं, लेवूं संजम भार ॥ १० ॥ थों साह जिम संयम आदरे, हूँ पिण इणरी लार। काम भोग सर्व छोड नें कर देवूं खेवो पार ॥ ११ ॥

* ढाल २ *

हूं जंबू कुंवर ना वचन सुणी नें, अन्तरङ्ग माहो भिनोरे। मुक्ति तणा सुख जाण्या अनोपम, संसार सुखां सूं विहनो रे॥ परभव चोर चोरा नें समझावे ॥ १ ॥ जंबू कुंवर दीख्या लेसी परभाते, तिण में संसार लाग्यो छे खारो रे। हूं पिण दीख्या लेसूं तिण लारे, थे ढील म आणो लिगारो रे ॥ पर० ॥ २ ॥ आपां चोरी करने पर धन मेलियो, दाइ घणा रे दीधी रे। ते धन तो सगला न्यातिला मिल खादो, पापरी पांती किण ही न लीधीरे ॥ प० ॥ ३ ॥ मोह अंध जीव हुवो मतवालो, त्यांने न्यातिला मीठा लागेरे। अनन्त जन्म मरण दुःख दायक, सुणिया में जंबू कुंवर आगेरे ॥ प० ॥ ४ ॥ ए भेलो मिलयो ते विछड़ जासी, संसार नी काची मायारे। हाथ घसंता रह्या न्यातिला, त्यां रोय रोय नयण गमायारे ॥ प० ॥ ५ ॥ नित २ उठ रोवे प्रभाते, याद आवे ज्यूं फाटे छातीरे। त्यांने सुपने मांहे पिण मेलो न दीठो, सुख दुःखरी नहीं पूछी बातीरे ॥ प० ॥

६ ॥ देव गुरु धर्म रत्न तीनुई, रूड़ी रीत ओलखायारे । वले जीवादिक पदारथ नवांरा, भीन २ भेद बतायारे ॥ प० ॥ ७ ॥ पांच सो चोर परभव रा बचन सुणी नें, वैराग्य सगलांरे आयोरे । दीक्षा लेवारी सगला मन धारी, ज्ञान अपूरव पायोरे ॥ प० ॥ ८ ॥ पांच से चोर परभव चोर आगे, सगला बोले जोड़ी हाथोरे । जो थे जंबू कुंवर साथे घर छोडो तो, म्हे पिण घर छोडां रहवां थांरी साथोरे ॥ प० ॥ ९ ॥ थे ठाकर म्हे चाकर हूंता, म्हे रहता थां सूं भेलारे । थे चारित्र ल्यो तो म्हे पिण लेस्यां, म्हे किम चूकां एवेलांरे ॥ प० ॥१०॥ परभव चोर पांच से चोरां सूं, हुवा संजम नें त्यारोरे । थां मुक्त तणा सुख साश्वता जाण्या अथिर जाण्यो संसारो रे ॥ प० ॥ ११ ॥

॥ ढाल ३ जी ॥

ए आठुंई कामणी, छोखे अपच्छर नें उणिहार । इणानें परणिजों नें परहरे, ए किम काढे जमवार ॥ जंबू कह्यो मानरे जाया इस किम दिजे छेह ॥ १ ॥ ए दुःखणी होसी घणी जाया तो विन सारी दुःखणी थाय । रवि आंथमतां ज्यूं हुवे जंबू बदन कमल ज्यूँ कुमलाय ॥ २ ॥ ए आठुंई स्त्री तेह सूं सुख भोग-

वले संसार । दिन पाछा पड़ियां पछे तूं लीजे संयम भार ॥ जं० ॥ ३ ॥ जे भामण सूँ भीनो रहे माता न करे धर्म विचार । पिसतावो ज्यां नें पड़े, ते युँही हारे जमवार ॥ माता तुम्हे मानलो माता लेस्यूं संजम भार ॥ ४ ॥ मतछिणा जे मोनवी माता, ते मिथ्या मत में भरपूर । रमणी रूप में ते रमे, त्यांसु दुर्गत नहीं छे दूर ॥ माता० ॥ ५ ॥ ए आठुंई स्त्री त्यांने समझाई मैं दुण रात । त्यां श्री जिन धर्म नें ओलख्यो दीचा लेसी मुझ साथ ॥ माता० ॥ ६ ॥ तूं मुझ आंधा लाकड़ी जाया तूं मुझ जीवण प्राण । तुझ बिन जग सुनो अछे तूं भाय जाण म जाण ॥ जं० ॥ ७ ॥ तोने माल मोष मोटो कियो त्यांने दुख किम दीजे छेह । हिवे माता पिता मेले रोवता, त्यांरी दया न आणे तेह ॥ ज० ॥ ८ ॥ एक लोटो पाणी पिऊं त्यांमें मात पिता छे अनन्त । हिवे दया सगलांरी पालसुं सारां आतम सम गीणंत ॥ माता० ॥ ९ ॥ प्राण री विश्वास मोनें नहीं माता खिण मांही रङ्ग विरङ्ग । तो रती किम पामुं संसार में माता तिण सुँ गयो मन भंग ॥ माता० ॥ १० ॥ हिवे मोह न कीजे माताजी मांहरो माता मोह सूँ वंधे पाप कर्म । थे आड डोड में क्युं पड़ो थे पिण पालो साधुरो धर्म ॥ मा० ॥ ११ ॥ साध

पणो सुध पालस्यां माला कटे छे कर्मारा जाल। शिव रमणी बेगी बरे वलि मिट जावे सर्व जंजाल मा० ॥ १२॥ ए काचो सगपण छे संसार नो माता, काचो स्नेह छ एह। मो साथे हो संजम आदरो करो अविचल धर्म स्नेह ॥ मा० ॥ १३ ॥

॥ दोहा ॥

मात पिता जंबू कुंवरना, सांभलियो जिनवर धर्म सार वैराग आयो घट भींतरे, जाण्यो अथिर संसार ॥ १ ॥ मोरो जंबू कुंवर दीख्या लिये, म्हे पिण लेस्यां सार। काल कितोएक जीवणो, हिव कर देवां खेवो पार ॥ २ ॥ इम हिज आठ स्त्री तणा, मात पिता तिणवार। पुत्री जंवाई दीख्या लिए, म्हे पिण लेस्यां संजम भार ॥ ३ ॥ आठ स्त्रीनें जंबू कुंवर ना, मा बाप सहित सतावीस। वलि पांच सो चोरनें परभव, ए पांच सो अठाइस ॥ ४ ॥ ए पांच सो अठावीस तणा, किया दीख्या महोछव पुर। धन खरचे तिहां अतिघणो वाजंन वाज रह्या रुवातूर ॥ ५ ॥ आय उभा सुधर्मा स्वामी कन्हे, हिवे बोले जोड़ी हाथ। काढो जन्म मरण री लाय थी, दीक्षा दो स्वामी नाथ ॥ ६ ॥ पांच सो अठाईस जणानें, दीक्षा दी तिण ठाम। आचार सिखाय परिपक किया, त्यां सगलां रा शुद्ध परिणाम ॥ ७ ॥

* ढाल ४ *

जंबू कुमार चारित्र लियो, पांच सौ नें सतावीस लार हो। मुणिन्दा। त्यां सिंह जिम संजम आदर्यो, ते पाले छै निरतीचारहो मु० धन्य धन्य जंबू स्वाम नें ॥ १ ॥ एक जंबू कुँवर नं समझावियां, हुओ घणो उपगार हो मु० हुइ बधोतर जिन धर्म री, वले हुवो घणारो उपगार हो मु० ॥ धन्य० ॥ २ ॥ किण ही भारी कर्मा नें संजम दियां, हुवे घणा रो विगाड़ हो मु० वले हेला निन्दा हुवे जिन धर्मरी, घणारे बधे अनन्त संसार हो मु० ॥ ३ ॥ पांच से चोरां नें प्रति बोधिया, ते हुंता प्रकृत रा फणिन्द हो मु० त्यांनें समझाय नें मारग आणिया, ते पिण पाम्या परमान्द हो मु० ॥ ४ ॥ कोई काछ लपटी कुशीलिया, ते हुँता धाड़ा फाड़ हो मु० त्यांनें उपदेश देई ठाय आणिया, किया मोटा अणगार हो मु० ॥ ५ ॥ चोर हुंता सगलाई पापीया, ते करता अनेक अकाज हो मु० त्यांनें सगला नें धर्म पमाय नें, दियो मुक्त पुरीनो राज हो मु० ॥ ६ ॥ भगवत श्रीवर्द्धमानजी, पाटवी सुधर्म स्वाम हो मु० त्यां सुधर्म स्वाम रा पाटवी, जंबू स्वामी त्यांरो नाम हो मु०। ॥ ७ ॥ गंध हस्तीनो त्यांनें ओपमां, पुरुषां मांही

सिंह समान हो मु० त्यां सिंह जिम संजम आदर्यो, सिंह जिम पाल्यो चारित्र निधान हो मु० ॥ ८ ॥ बाल ब्रह्मचारी थेटरा, जिन शासण रा शृङ्गार हो मु० तीजे पाट भगवान रे हुआ, घणा साधारा सिरदार हो मु० ॥ ९ ॥ च्यार तीर्थ मांही दीपता, त्यांरो सोम निजर शीतल अंग हो मु० सूरज ज्यूं तप तेज आकरो, चन्द कला ज्यूं चढते रङ्ग हो मु० ॥ १० ॥ गुण त्यांमें छे अतिघणा, समुद्र जेम अथाय हो मु० कोड़ जिह्वा कर वर्णवे, तोही पूरा कह्या नहीं जाय हो मु० ॥ ११ ॥ भले गमता लागे तीर्थ में, तिण दीठां पामें आणन्द हो मु० त्यांरी बाणी अमृत सारखी, सुणवा आवे नरनार हो मु० ॥ १२ ॥ त्यांने धर्म कथा निरन्तर कहै, कहै जीवादिक ना भेद हो मु० केई सुण २ श्रावक रा व्रत आदरे, केई चारित्र लहै आण उमेद हो मु० ॥ १३ ॥ ते सोलह बरस घरमें रह्या, वर्ष चौसठ चारित्र पाल हो मु० तिण में वीस वर्ष छद्मस्थ रह्या, केवली रह्या वर्ष चमाल हो मु० ॥ १४ ॥ सर्व आउखो असी वर्ष नो, पाल्यो छे जंबू स्वाम हो मु० घणा जीवां नें प्रतिबोध नें, पहुंता अविचल ठाम हो मु० ॥ १५ ॥ ते छुटा संसार ना दुख थकी, पाम्या सुख अनन्त हो मु० वले जनम मरण नहीं मुक्त में, त्यांरो कदेई न आवे अन्त

हो मु० ॥ १६ ॥ और साधनें साधवी, गया छै देवलोक मांय हो मु० ते पिण मुक्ति सिधावसी, आठुई कर्म खपाय हो मु० ॥ १७ ॥ शासण श्री वर्द्धमान रो, पाछो दीपायो जंबू स्वाम हो मु० आप तीर्या औरां नें त्यारीया, त्यांरो लीजे नित्य प्रति नाम हो मु० ॥ १८ ॥ शीश नमीजे नित तेहनें, वंदीजे वारंवार हो मु० ज्यूँ कर्म कटे निर्जरा हुवे, पामे भवजल पार हो मु० ॥ १६ ॥ जंबू स्वामी छेहला केवली, श्रीवीरना शासण मझार हो मु० ते मुक्त गया आरे पांच में, त्यांरो नाम लिया निस्तार हो मु० ॥ २० ॥ ए चौपी जोड़ी जंबू स्वामी नी जंबू पईन्ना कथा रे अनुसार हो मु० इण में अधिको ओछो कह्यो हुवे, ते ज्ञानी वदे ते तंतसार हो मु० ॥ २१ ॥ सम्वत अठारे चालीस में, जेठ सुदी बारस सोमवार हो मु० चौपी पूरी कीधी विठारा मध्ये ते समझावण नरनार हो मु० ॥ २२ ॥

॥*॥ इति शुभम् ॥*॥